श्रम संगम

वर्ष: 9, अंक: 2

tykb&fnlEcj 2023

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नल

लेबर एंड डेवलपमेंट

लेबर एंड डेवलपमेंट संस्थान की एक छमाही पत्रिका है, और यह सैद्धांतिक विश्लेषण एवं आनुभविक अन्वेषण के जरिए श्रम के विभिन्न मुद्दों का प्रसार करने के लिए समर्पित है। इस पत्रिका में आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक मुद्दों के साथ–साथ विधिक पहलुओं पर बल देते हुए श्रम एवं संबंधित विषयों के क्षेत्र में उच्च शैक्षिक गुणवत्ता वाले लेखों का प्रकाशन किया जाता है। साथ ही, विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में उन लेखों पर अनुसंधान टिप्पणियों एवं पुस्तक समीक्षाओं का भी इसमें प्रकाशन किया जाता है।

अवार्ड्स डाइजेस्टः श्रम विधान का जर्नल

अवार्ड्स डाइजेस्ट एक तिमाही जर्नल है, जिसमें श्रम और औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र के अद्यतन मामला विधियों का सार प्रकाशित किया जाता है। इस जर्नल में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों, प्रशासनिक अधिकरणों तथा केंद्रीय सरकारी औद्योगिक अधिकरणों द्वारा श्रम मामलों के बारे में दिए गए निर्णय प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें श्रमकानूनों से संबंधित लेख, उनमें किए गए संशोधन, अन्य संगत सूचना शामिल होती है। यह पत्रिका कार्मिक प्रबंधकों, ट्रेड यूनियन नेताओं और श्रमिकों, श्रम कानूनों के परामर्शदाताओं, शैक्षिक संस्थानों, सुलह अधिकारियों, औद्योगिक विवादों के मध्यस्थों, प्रैक्टिस करने वाले अधिवक्ताओं और श्रम कानून के विद्यार्थियों के लिए एक बहुमूल्य संदर्भ पत्रिका है।

श्रम विधान

श्रम विधान तिमाही हिन्दी पत्रिका है। श्रम कानूनों और उनमें समय–समय पर होने वाले बदलावों की जानकारी को आधारिक स्तर (Grass Roots Level) तक सरल और सुबोध भाषा में पहुंचाने के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका में संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों के लिए अधिनियमित मौजूदा कानूनों की सुसंगत जानकारी, उनमें होने वाले संशोधनों, श्रम तथा इससे संबद्ध विषयों पर मौलिक एवं अनूदित लेख, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी अधिसूचनाओं के प्रकाशन के साथ–साथ श्रम से संबंधित मामलों पर उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों तथा केंद्रीय प्रशासनीक न्यायाधिकरणों द्वारा दिए गए फैसलों को सार के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

चंदे की दरः लेबर एंड डेवलपमेंट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 150 रुपए तथा संस्थानों के लिए 250 रुपए है। अवार्ड्स डाइजेस्ट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। श्रम विधान पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। चंदे की दर प्रति कैलेण्डर वर्ष (जनवरी–दिसम्बर) है। ग्राहक प्रोफार्मा संस्थान की वेबसाइट www.vvgnli.gov.in पर उपलब्ध है। ग्राहक प्रोफार्मा पूरी तरह भरकर डिमांड ड्राफ्ट सहित जो वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान के पक्ष में एवं दिल्ली/नौएडा में देय हो, इस पते पर भेजेः

प्रकाशन प्रभारी
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
सैक्टर–24, नौएडा–201301, उत्तर प्रदेश

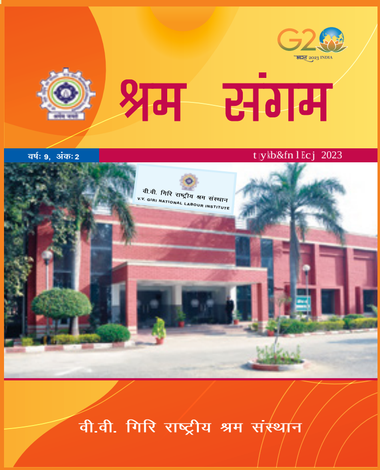

श्रम संगम

वर्ष: 9, अंक: 2, जुलाई-दिसम्बर 2023

अनुक्रमणिका

asdsd

◈	महानिदेशक की कलम से	2
◈	नोबेल पुरस्कार विजेताः सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर – *डॉ. संजय उपाध्याय*	3
◈	पर्यावरण–प्रदूषण पर भारत ने जगाई उम्मीद – *राजेश कुमार कर्ण*	5
◈	शब्दों का भंडार (कविता) – *प्रकाश मिश्रा*	11
◈	अमृत काल की शानदार शुरुआत – *बीरेन्द्र सिंह रावत*	12
◈	जैसे ही आप अपनी पलकें झपकाते हो.......(कविता) – *डॉ. एलीना सामंतराय*	17
◈	वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा हिंदी पखवाड़ा – 2023 का आयोजन	18
◈	महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित सरकार – *राजेश कुमार कर्ण*	20
◈	हिन्दी के प्रथम डी. लिटः डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल – *सुधा वोहरा*	24
◈	वाह! गुरु जी (कविता) – *बीरेन्द्र सिंह रावत*	26
◈	करवा का व्रत (कहानी) – *यशपाल*	27
◈	हाँ, मैं एक नारी हूँ (कविता) – *निधि अग्रवाल*	30
◈	हॉकी की गौरव गाथा – *गीता अरोड़ा*	31
◈	अंतरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान – *राजेश कुमार कर्ण*	35
◈	बहती जाती हूँ मैं अविराम (कविता) – *मंजू सिंह*	40
◈	वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा कार्यशाला का आयोजन	41

l j{kd
डॉ. अरविंद
महानिदेशक

lEikndh eMy
डॉ. संजय उपाध्याय
सीनियर फेलो

डॉ. ओतोजीत क्षेत्रिमयूम
फेलो

श्री बीरेन्द्र सिंह रावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

oh-oh- fxfj jk"Vªh; Je lLFkku
सैक्टर–24, नौएडा–201301
उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित

if=dk esa izdkf'kr lHkh jpukvksa dh ekSfydrk dk nkf;Ro Lo;a ys[kdksa dk gS rFkk if=dk esa izdkf'kr jpukvksa ds fy, oh- oh- fxfj jk"Vªh; Je lLFkku mÙkjnk;h ugha gSA

eqæ.k% LeSV QkeZ
3588, जी.टी. रोड,
ऑल्ड सब्जी मण्डी, दिल्ली–110007

महानिदेशक की कलम से...

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। हमारे देश की भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद हिंदी भाषा के सरल, सहज एवं सुबोध होने तथा देश में अधिकांश लोगों द्वारा इसे आसानी से समझ लिए जाने के कारण देश के संविधान–निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा होने के कारण राजभाषा हिंदी, जनता और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अतः, यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम व्यावहारिक विकल्पों के माध्यम से इसके प्रचार–प्रसार में सतत प्रयत्नशील रहें।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा संबंधी नियमों/अधिनियमों का अनुपालन इस संस्थान में बखूबी किया जा रहा है। इसी क्रम में वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नौएडा के तत्त्वावधान में 21 दिसम्बर 2023 को नराकास (कार्यालय), नौएडा के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों/हिंदी अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों के लिए अनुवाद टूल 'कंठस्थ' पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 17 सदस्य कार्यालयों के 28 राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

Je lxe^ पत्रिका की नियमितता बनाए रखने तथा इसके आगामी अंकों को अधिकाधिक रुचिकर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका अनवरत इसी प्रकार आकर्षक रूप में हमारे बीच आती रहे तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार में सदैव सफलता प्राप्त करे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

¼Mk- vjfon½

नोबेल पुरस्कार विजेताः सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर

Mk- lt; mikè;k;*

विश्व के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्त करने वालों में से हमारे अपने देश भारत या विश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले भारतवंशी महानुभावों की भी कमी नहीं है। इन्हीं महानुभावों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण नाम है – लगभग सात दशकों तक अपनी लेखनी के माध्यम से विज्ञान की सेवा करने वाले, 50 के आस–पास वाचस्पति शोधार्थियों का विज्ञान के क्षेत्र में मार्गदर्शन करने वाले, अपने जीवनकाल के दौरान लगभग 1000 अकादमिक परिचर्चाओं में सक्रिय भूमिका अदा करने वाले, और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 20 से अधिक मानद उपाधियों से विभूषित वैज्ञानिक सुब्रमण्यम चंद्रशेखर जी। यह संक्षिप्त लेख उन्हीं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित है।

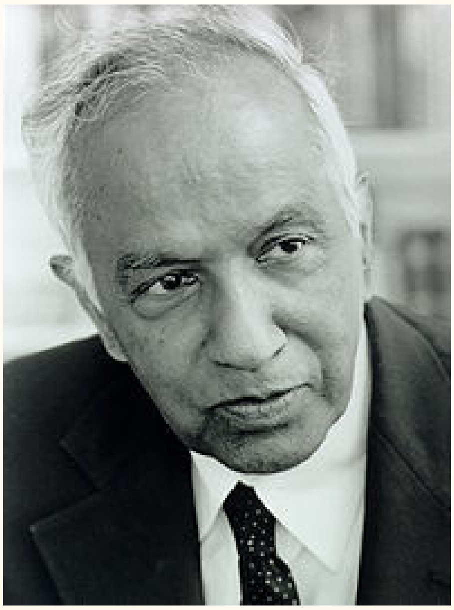

सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर जी का जन्म 19 अक्टूबर 1910 को लाहौर (तत्कालीन ब्रिटिश भारत का हिस्सा) में चार बेटों और छह बेटियों वाले परिवार में पहले बेटे और तीसरी संतान के रूप में हुआ था। उनके पिता श्री चन्द्रशेखर सुब्रमण्य अय्यर, सरकारी सेवा 'भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग' में एक अधिकारी थे और उस समय लाहौर में उत्तर–पश्चिमी रेलवे के उप महालेखा परीक्षक के रूप में पदस्थ थे। उनकी मां, श्रीमती सीता (नी बालाकृष्णन) उच्च बौद्धिक योग्यता वाली महिला थीं। उन्होंने आंग्ल भाषा से अनेक पुस्तकों का तमिल में अनुवाद किया था, उदाहरण के लिए, नार्वेजियन नाटककार हेनरिक इबसेन की पुस्तक ए डॉल हाउस। वह अपने बच्चों के प्रति पूरी तरह से समर्पित थीं, और उनके लिए बेहद महत्वाकांक्षी थीं।

सुब्रमण्यम जी की प्रारंभिक शिक्षा, बारह वर्ष की आयु तक, घर पर उनके माता–पिता द्वारा और निजी ट्यूशन से हुई। वर्ष 1918 में उनके पिता को मद्रास स्थानांतरित कर दिया गया, जहां उस समय उनका परिवार स्थायी रूप से बस रहा था। मद्रास में उन्होंने 1922–25 के दौरान हिंदू हाई स्कूल, ट्रिप्लिकेन में पढ़ाई की। उनकी विश्वविद्यालयी शिक्षा (1925–30) प्रेसीडेंसी कॉलेज में हुई। उन्होंने यहाँ से भौतिक विज्ञान विषय के साथ जून 1930 में स्नातक (बी.एससी. – ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की। उसी वर्ष जुलाई में उन्हें कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में स्नातक अध्ययन के लिए भारत सरकार की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। कैम्ब्रिज में वह प्रोफेसर आर. एच. फाउलर (जिन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज में भी उनके प्रवेष के लिए अनुशंसा की थी) की देखरेख में एक षोध छात्र बन गए। प्रोफेसर पी.ए.एम. डाइरक की सलाह पर उन्होंने अपने तीन–वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम का तीसरा वर्ष कोपेनहेगन में इंस्टीट्यूट फॉर टेओरेटिस्क फिजिक में बिताया।

मद्रास के प्रेसीडेंसी कॉलेज में अंतिम दो वर्षों (1928–30) के दौरान उनकी अपने से एक वर्ष छोटी ललिता दोरईस्वामी से मित्रता हो गई, जिसकी परिणति वर्ष 1936 में शिकागो विश्वविद्यालय में संकाय सदस्य के रूप में जुड़ाव से पूर्व सितंबर 1936 में उन दोस्तों के भारत में दाम्पत्य सूत्र में बंधने के रूप में हुई। उन्होंने अपनी पीएच.डी. की उपाधि वर्ष 1933 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इसी वर्ष अक्टूबर में उन्हें 1933–37 की अवधि के लिए ट्रिनिटी कॉलेज में प्राइज़ फ़ेलोशिप के लिए चुना गया। ट्रिनिटी में अपने फ़ेलोशिप वर्षों के दौरान उन्होंने सर आर्थर एडिंगटन और प्रोफेसर ई.ए. मिलने सहित कई लोगों के साथ स्थायी मित्रता बनाई।

1936 की सर्दियों के महीनों (जनवरी–मार्च) के दौरान तत्कालीन निदेशक डॉ. हार्लो शेपली के निमंत्रण पर हार्वर्ड विश्वविद्यालय की एक छोटी यात्रा के दौरान उन्हें डॉ. ओटो स्ट्रुवे और कुलाधिपति (चांसलर) रॉबर्ट मेनार्ड हचिन्स द्वारा शिकागो विश्वविद्यालय में रिसर्च एसोसिएट के रूप में पद की पेशकश की गई थी। वह जनवरी 1937 में शिकागो

* सीनियर फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

विश्वविद्यालय में संकाय सदस्य के रूप में शामिल हुए और 1995 में अपनी मृत्यु तक इस विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे। वह सैद्धांतिक खगोल भौतिकी के मॉर्टन डी. हल विशिष्ट सेवा प्रोफेसर भी थे।

वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रारंभिक वर्षों के बाद उनके वैज्ञानिक कार्य ने एक निश्चित और नई राह पकड़ ली, जो मुख्य रूप से परिप्रेक्ष्य की खोज से प्रेरित था। व्यवहार में, इस खोज में उनका एक निश्चित क्षेत्र चुनना (कुछ परीक्षणों और कष्टों के बाद) शामिल था, जो उनकी अभिरुचि, क्षमताओं और स्वभाव के अनुकूल प्रतीत होता था। और जब कुछ वर्षों के अध्ययन के बाद उन्हें लगा कि उन्होंने ज्ञान का पर्याप्त भंडार जमा कर लिया है और अपना खुद का एक दृष्टिकोण हासिल कर लिया है, तो उन्हें अपने दृष्टिकोण को क्रमिक रूप में एक सुसंगत विवरण में प्रस्तुत करने की इच्छा हुई।

उन्होंने व्यक्तिगत रूप से महसूस किया कि उनका शैक्षणिक विकास और व्यावसायिक जीवन सात प्रमुख अवधियों से गुजरा। इनमें शामिल हैं – तारकीय संरचना, जिसमें व्हाइट ड्वार्फ (सफ़ेद बौनों) का सिद्धांत (1929–1939) भी शामिल है; तारकीय गतिकी, जिसमें ब्राउनियन गति का सिद्धांत (1938–1943) भी शामिल है; विकिरण हस्तांतरण का सिद्धांत, जिसमें तारकीय वायुमंडल का सिद्धांत और हाइड्रोजन के नकारात्मक आयन का क्वांटम सिद्धांत और ग्रहों के वायुमंडल का सिद्धांत शामिल है, जिसमें सूर्य के प्रकाश वाले आकाश की रोशनी और ध्रुवीकरण का सिद्धांत शामिल है (1943–1950); रेले–बेनार्ड संवहन (1952–1961) के सिद्धांत सहित हाइड्रोडायनामिक और हाइड्रोमैग्नेटिक स्थिरता; आंशिक रूप से नॉर्मन आर. लेबोविट्ज़ (1961–1968) के सहयोग से, संतुलन एवं संतुलन की दीर्घ वृत्ताकार आकृतियों की स्थिरता; सापेक्षता एवं सापेक्षतावादी खगोल भौतिकी का सामान्य सिद्धांत (1962–1971); और ब्लैक होल का गणितीय सिद्धांत (1974–1983)।

उनकी शैक्षणिक रुचि और वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों में ये शामिल हैं – खगोल भौतिकी, सामान्य सापेक्षता, द्रव गतिकी, विकिरण और क्वांटम सिद्धांत। उन्हें 'सितारों की संरचना और विकास के लिए महत्वपूर्ण भौतिक प्रक्रियाओं के सैद्धांतिक अध्ययन के लिए' o"k 1983 e अमेरिकी भौतिक विज्ञानी विलियम ए. फाउलर के साथ Hkkfrdh e çfrf"Br ukcy ijLdkj से सम्मानित किया गया था। जिस कार्य के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला उसे संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है – 'ब्रह्मांड में तारे गैस और धूल के बादलों से बनते हैं। जब ये बादल गुरुत्वाकर्षण बल के द्वारा एक साथ खींचे जाते हैं, तो ऊष्मा के रूप में ऊर्जा निकलती है। और जब पर्याप्त उच्च तापमान पहुंच जाता है, तो तारे के आंतरिक भाग में परमाणु नाभिक के बीच प्रतिक्रियाएं शुरू हो जाती हैं। 1930 के दशक की शुरुआत में सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर ने सितारों के विकास के लिए सिद्धांत तैयार किए। उन्होंने दिखाया कि जब एक निश्चित आकार के तारों का हाइड्रोजन ईंधन खत्म होने लगता है, तो वह एक सघन, चमकीले तारे में बदल जाता है जिसे सफेद बौना कहा जाता है।'

नोबेल पुरस्कार से पहले ही उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका था, जिनमें शामिल हैं – 1944 में रॉयल सोसाइटी की फ़ेलोशिप, 1948 में एडम पुरस्कार, 1962 में रॉयल मेडल, 1966 में नेशनल मेडल ऑफ़ साइंस, 1968 में प्रतिष्ठित भारतीय पुरस्कार 'पद्म विभूषण', 1974 में हेनीमैन पुरस्कार। विज्ञान के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें 1984 में कोपले मेडल और 1994 में मार्सेल ग्रॉसमैन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

सुब्रमण्यम जी ने लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिखीं और अपने जीवनकाल के दौरान भौतिकी और संबंधित क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं के लिए लगभग 380 शोध पत्र लिखे। उन्होंने अपना पहला लेख 1928 में लिखा था जब वह स्नातक के छात्र थे और उनका आखिरी लेख 1995 में उनकी मृत्यु से ठीक दो महीने पहले प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया था। यह लेख सितारों के गैर–रेडियल दोलन के बारे में था। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस ने उनके चयनित पत्रों को सात खंडों में प्रकाशित किया। अपने करियर के दौरान सुब्रमण्यम जी ने कम से कम 46 वाचस्पति शोधार्थियों (डॉक्टरेट छात्रों) का मार्गदर्शन किया और 1,000 से अधिक अकादमिक परिचर्चाओं की अध्यक्षता की। उन्हें 20 मानद उपाधियाँ प्राप्त हुईं और उन्हें लगभग इतनी ही विद्वत संस्थाओं के लिए चुना गया। 1952 से 1971 तक वह द एस्ट्रोफिजिकल जर्नल के संपादक रहे। उनके कार्यों को विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न विद्वानों द्वारा उद्धृत किया गया है। इसके अलावा, उनके और उनके काम के बारे में कई किताबें भी लिखी गई हैं। शिकागो विश्वविद्यालय में सेवा करते हुए 21 अगस्त 1995 को 84 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

पर्यावरण-प्रदूषण पर भारत ने जगाई उम्मीद

jkt'k dekj d.k*

जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका न के बराबर है। दुनिया के बड़े आधुनिक देश न केवल पृथ्वी के अधिक से अधिक संसाधनों का दोहन कर रहे हैं, बल्कि अधिकतम कार्बन उत्सर्जन उनके खाते में जाता है। भारत में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष लगभग 0.5 टन की तुलना में दुनिया का औसत कार्बन फुटप्रिंट लगभग 4 टन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है। इसके बावजूद भारत पर्यावरण की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय और आपदा रोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे स्थापित संगठन के सहयोग से दीर्घकालिक दृष्टि पर काम कर रहा है।

भारत की अध्यक्षता में जी–20 देशों के द्वारा जलवायु परिवर्तन सहित पर्यावरण के संकटों और चुनौतियों से निपटने के लिए कार्यों में तत्काल तेजी लाने का निर्णय लिया गया। वर्ष 2015 के पेरिस समझौते के तहत निर्धारित लक्ष्यों की पुष्टि करते हुए सतत, सक्षम, संतुलित और समावेशी विकास के मॉडल को अपनाने का आह्वान किया गया है। मिशन LiFE यानी पर्यावरण के लिए जीवन शैली के मंत्र को भी अपनाया। पर्यावरण हितैषी कचरा प्रबंधन और अपशिष्ट को काफी हद तक कम करने पर भी सहमति जताई गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत 2070 तक जीरो कार्बन उत्सर्जन (नेट जीरो) का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है। पीएम राष्ट्रीय गतिशक्ति मास्टर प्लान के कारण लॉजिस्टिक सिस्टम और ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मजबूत किया जाएगा। इससे प्रदूषण में कमी आएगी। 100 से अधिक जलमार्गों पर मल्टी–मॉडल कनेक्टिविटी कार्य भी प्रदूषण को कम करने में मदद करेगा।

2014 में भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 20 गीगावाट थी, तब प्रधानमंत्री मोदी ने तय किया कि 2022 तक इसे 100 गीगावाट तक पहुंचाएंगे। लेकिन इस तय समय से पहले ही इस लक्ष्य को हासिल कर, नए बड़े लक्ष्य रखकर भारत ने दुनिया को नई राह दिखाई है। भारत ने ही 2015 में इंटरनेशनल सोलर एलायंस (आईएसए) की नींव रख दुनिया को रोडमैप दिया।

ग्रीन हाइड्रोजन मिशन से वर्ष 2030 तक प्रतिवर्ष 5 एमएमटी ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता तैयार होने की संभावना है। इससे जीवाश्म ईंधनों के आयात पर निर्भरता में कमी आएगी और 2030 तक एक लाख करोड़ रुपये का जीवाश्व ईंधन कम आयात करना होगा। लक्षित मात्रा में ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन और उपयोग के जरिये कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में प्रतिवर्ष लगभग 50 मिलियन मीट्रिक टन कमी आने की संभावना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अनुसार ''राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन के माध्यम से, भारत एक पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा स्रोत की ओर अग्रसर हो चुका है। इससे भारत और दुनिया के कई देशों को नेट जीरो के अपने लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिलेगी। भारत इस बात का एक प्रमुख उदाहरण बन चुका है कि कैसे प्रगति और प्रकृति साथ–साथ चल सकती हैं।''

विश्व कल्याण के लिए सबके हितों की सुरक्षा और भागीदारी आवश्यक है, इसके लिए जरूरी है कि विश्व के देशों ने कार्बन उत्सर्जन पर जो लक्ष्य तय किए हैं उसे हर हाल में पूरा करें। विश्व की 17 फीसदी आबादी होने के बाद भी भारत की कार्बन उत्सर्जन में हिस्सेदारी महज चार फीसदी है। इसके बावजूद भारत वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। संयुक्त अरब अमीरात में 30 नवंबर से 12 दिसंबर 2023 तक आयोजित कॉप–28 में शामिल प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जलवायु परिवर्तन पर भारत की ओर से की गई प्रतिबद्धता को न सिर्फ दुनिया के सामने रखा बल्कि विश्व के देशों से भी अपने लक्ष्य को पूरा करने का आह्वान किया।

भारत विश्व की उन कुछ अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जो अद्यतन निर्धारित लक्ष्य (एनडीसी) को पूरा करने की राह पर है। उत्सर्जन की तीव्रता संबंधी लक्ष्य को भारत ने 11 साल पहले ही प्राप्त कर लिया है। भारत यू.एन. फ्रेमवर्क फॉर क्लाइमेट चेंज प्रोसेस के प्रति प्रतिबद्ध है इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कॉप–28 के मंच से कॉप–33 समिट को भारत की मेजबानी में कराने का प्रस्ताव रखा।

गैर–जीवाश्म ईंधन के लक्ष्य को भी देश ने निर्धारित समय से 9 साल पहले ही प्राप्त कर लिया। बावजूद इसके भारत इतने पर ही नहीं रुका। भारत का लक्ष्य 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता को 45% घटाना है। हम गैर–जीवाश्म ईंधन का शेयर बढ़ा कर 50% करेंगे और 2070 तक जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की तरफ बढ़ते रहेंगे।

भारत ने अपनी जी–20 अध्यक्षता में वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर की भावना के साथ क्लाइमेट के विषय को निरंतर महत्व दिया। टिकाऊ भविष्य के लिए भारत ने हरित विकास समझौता पर सहमति बनाई। यही नहीं नवीकरणीय ऊर्जा को तीन गुना करने की प्रतिवद्धता जताई गई। भारत ने वैकल्पिक ईंधन के लिए हाइड्रोजन के क्षेत्र को बढ़ावा दिया और वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन भी लॉन्च किया। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी की स्टडी कहती है कि इस अप्रोच से भारत 2030 तक प्रति वर्ष 2 बिलियन टन कार्बन उत्सर्जन कम कर सकता है।

* आशुलिपिक ग्रेड–I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस पर कॉप–28 की अध्यक्षता सत्र में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत ने जी–20 अध्यक्षता में सतत विकास और जलवायु परिवर्तन इन दोनों विषयों को बहुत प्राथमिकता दी है। भारत ने साझा प्रयास के माध्यम से कई विषयों पर सहमति बनाने में सफलता पाई है। भारत सहित ग्लोबल साउथ के तमाम देशों की जलवायु परिवर्तन में भूमिका बहुत कम रही है पर इसके दुष्प्रभाव इन देशों पर कहीं अधिक पड़े हैं। संसाधनों की कमी के बावजूद ये देश जलवायु कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध हैं। ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए क्लाइमेट फाइनेंस और टेक्नोलॉजी बहुत ही जरूरी है। ग्लोबल साउथ के देशों की अपेक्षा है कि क्लाइमेट चेंज का मुकाबला करने के लिए विकसित देश उनकी अधिक से अधिक मदद करें। जी–20 में इसे लेकर सहमति बनी है कि जलवायु कार्रवाई के लिए 2030 तक कई ट्रिलियन डॉलर क्लाइमेट फाइनेंस की आवश्यकता है। यूएई द्वारा क्लाइमेट इंवेस्टमेंट फंड स्थापित करने की घोषणा का प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वागत किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कॉप–28 में लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन कार्यक्रम, कॉप–28 में ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम, जलवायु परिवर्तन पर कॉप–28 प्रेसीडेंसी सत्र को संबोधित करने के अलावा भारत और स्वीडन लीडरशिप ग्रुप ऑफ इंडस्ट्री ट्रांजिशन के दूसरे चरण की संयुक्त रूप से मेजबानी भी की। इस कार्यक्रम के दौरान एक वेब प्लेटफॉर्म भी लॉन्च किया गया जो पर्यावरण– अनुकूल कार्यों को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों और सबसे अच्छे तौर–तरीकों के संग्रह के रूप में काम करेगा। इस वैश्विक पहल का उद्देश्य ग्रीन क्रेडिट जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सकारात्मक कार्यों की योजना, अनुभवों और सर्वोत्तम तौर– तरीकों के आदान–प्रदान के माध्यम से वैश्विक सहभागिता, सहयोग और साझेदारी को सुविधाजनक बनाना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दिसंबर 2023 को संयुक्त अरब अमीरात के दुबई में 'ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस' पर कॉप–28 प्रेसीडेंसी सत्र में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त को अधिक सुलभ और किफायती बनाने पर केंद्रित था। वैश्विक नेताओं ने 'नए वैश्विक जलवायु वित्त प्रारूप पर संयुक्त अरब अमीरात घोषणा' को अपनाया। घोषणा में प्रतिबद्धताओं को पूरा करना, महत्वाकांक्षी परिणाम प्राप्त करना और जलवायु कार्रवाई के लिए रियायती वित्त स्रोतों को व्यापक बनाना शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल साउथ की चिंताओं को व्यक्त करते हुए विकासशील देशों को उनकी जलवायु महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने और उनके एनडीसी को लागू करने हेतु कार्यान्वयन के साधन, विशेष रूप से जलवायु वित्त उपलब्ध कराने की तात्कालिकता पर जोर दिया। पीएम मोदी ने हानि एवं क्षति के संचालन और कॉप–28 में संयुक्त अरब अमीरात जलवायु निवेश कोष की स्थापना का स्वागत किया। पीएम मोदी ने कॉप–28 में जलवायु वित्त से संबंधित मुद्दों पर सक्रियता से विचार–विमर्श करने का आह्वान किया। इसमें जलवायु वित्त पर नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य में प्रगति, हरित जलवायु निधि एवं अनुकूलन निधि की पुनःपूर्ति, जलवायु कार्रवाई के लिए बहुपक्षीय विकास बैंक (एमडीबी) द्वारा किफायती वित्त उपलब्ध कराया जाएगा और विकसित देशों को 2050 से पहले अपने कार्बन उत्सर्जन को खत्म करना होगा, मुद्दे शामिल रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने कॉप–28 में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' पर उच्च स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कार्बन क्रेडिट का दायरा बहुत ही सीमित है और ये फिलॉसफी एक प्रकार से वाणिज्यिक तत्व से प्रभावित रही है। कार्बन क्रेडिट की व्यवस्था में एक सामाजिक उत्तरदायित्व का जो भाव होना चाहिए उसका अभाव देखा गया है। लिहाजा होलिस्टिक तरीके से नई फिलॉसफी पर बल देना होगा और यही ग्रीन क्रेडिट का आधार है। प्रकृति रक्षति रक्षिता अर्थात प्रकृति उसकी रक्षा करती है जो प्रकृति की रक्षा करता है। कॉप–28 के मंच से पीएम मोदी ने आह्वान किया कि इस शुरुआत से जुड़ें। साथ मिलकर इस धरती के लिए, अपनी भावी पीढ़ियों के लिए, एक ग्रीनर, क्लीनर और बेटर फ्यूचर का निर्माण करें।

कॉप–28 जैसे आयोजनों से हमारी उम्मीदें बढ़ती हैं। ऐसे ही चंद मौकों पर दुनिया के नेता जुटते हैं और धरती को साफ–सुथरा बनाने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता जाहिर करते हैं। जिन लोगों को लगता है कि ऐसे आयोजन सफल नहीं होते, उन्हें पहले जलवायु परिवर्तन संबंधी बैठकों का इतिहास जान लेना चाहिए। कॉप–3 में क्योटो प्रोटोकॉल पर सहमति बनी, तो कॉप–8 में गरीब देशों की विकास–जरूरतों व जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने हेतु प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की आवश्यकता पर बल दिया गया। कॉप–16 में कैनकन समझौता किया गया और हरित जलवायु कोष, प्रौद्योगिकी तंत्र व कैनकन अनुकूलन ढांचे की स्थापना की गई, तो कॉप–21 में पेरिस समझौता हुआ, जिसमें वैश्विक तापमान–वृद्धि को पूर्व औद्योगिक समय से दो डिग्री सेल्सियस नीचे रखने और इसे बाद में 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के प्रति प्रतिबद्धता जताई गई। ये तमाम काम बिना बैठकों के संभव नहीं हुए हैं।

दरअसल कॉप–28 यानी कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज–28 जलवायु को लेकर लेकर संयुक्त राष्ट्र की 28वीं बैठक है। इसमें सभी सदस्य देशों की सरकारों ने इस बात पर चर्चा की कि जलवायु परिवर्तन को रोकने और भविष्य में इससे मिलने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए किस तरह की तैयारियां की जाएं। इस तरह की बैठकों में कई वैश्विक संस्थाएं भी शामिल होती हैं, जिनके सुझावों को पर्याप्त अहमियत दी जाती है। ऐसी बैठकों में सलाह–मशविरा से ही रास्ता निकलता है, जिसमें सभी की सहभागिता व सहमति होती है। श्री हरीश बड़थ्वाल, टिप्पणीकार के अनुसार आरोप यह भी लगाया जाता है कि ऐसी बैठकों में फैसले तो ले लिए जाते हैं, पर उन पर अमल नहीं किया जाता। इस बात को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता, लेकिन सच यह भी है कि ऐसी बैठकों से ही जागरूकता फैलती है और सरकारों पर जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने और धरती को स्वच्छ बनाने का दबाव पड़ता है। बेशक, कुछ सरकारें शिद्दत से काम नहीं कर रहीं, पर सभी को एक ही तराजू से नापना ठीक नहीं होगा। कई देश पर्यावरण सुधारने को लेकर गंभीरता से काम कर रहे हैं और उनको देखकर उन देशों पर दबाव पड़ रहा है, जो जलवायु परिवर्तन को लेकर उतनी गंभीरता नहीं दिखाते। ऐसे देशों को कॉप जैसी बैठकों में परोक्ष रूप से अपमानित भी

होना पड़ता है, क्योंकि कई संस्थाएं उनके खिलाफ बैठक–स्थल के आस–पास प्रदर्शन करती रहती हैं। इसलिए, हमें उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिए और ऐसी बैठकों की सफलता की कामना करनी चाहिए।

भूमंडलीय परिवेश में मान्य सीमा से अधिक फेरबदल का अर्थ है, आगे खतरा है। प्राणी जगत की सलामती के लिए वायुमंडल के संघटकों का संतुलन अनिवार्य है। पिछले कुछ वर्षों से मानवीय कुचेष्टाओं के कारण वैश्विक तापमान में असाधारण वृद्धि का सिलसिला गंभीर मंथन का विषय है। जलवायु परिवर्तन की परिणति तापमान–वृद्धि तक सीमित नहीं है। अन्य विकृतियां भी पृथ्वी के सभी भूभागों में अकाल, ध्रुवीय इलाकों में बर्फ का पिघलना, तूफान, सुनामी आदि के रूप में दिख रही हैं। समुद्री जलस्तर में वृद्धि से जल–जीवन तो डांवाडोल होता ही है, कई समुदाय भी विस्थापन को मजबूर होते हैं। पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले सभी देशों ने तय किया था कि वे तापमान में वृद्धि को नियंत्रित करेंगे, मगर कई ऐसी रिपोर्ट हैं, जो कहती हैं कि इस दिशा में नाममात्र का ही प्रयास किया गया है।

औद्योगिकीकृत देशों के क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते की सीमित सफलता के मूलतः दो कारण रहे। पहला, अनुकूल संरचनात्मक ढांचे निर्मित नहीं किए गए, बल्कि ऐसा सोचा ही नहीं गया। और दूसरा, इसमें सामाजिक भागीदारी की कल्पना नहीं की गई। 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के दौर में ग्लोबल वार्मिंग जैसी चुनौतियों से बिना लोक–सहभागिता के नहीं निपट सकते। घरेलू सामान का फिर से उपयोग, मोटर वाहन व बिजली की कम खपत का अभ्यास, वृक्षारोपण जैसी अनेक युक्तियों से कार्बन ई उत्सर्जन को घटाना सहज है, और बड़े एलानों के साथ इन उपायों को प्रोत्साहित करना लाभकर रहता, पर दुर्भाग्य से इस दिशा में अपेक्षित काम नहीं किया जा रहा।

यह समझना होगा कि वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार कोयला, लकड़ी, तेल जैसे जीवाश्मों को घरेलू कार्यों, परिवहन, बिजली उत्पादन आदि के लिए जलाना है। पृथ्वी का मौजूदा तापमान पिछले सवा दो सौ वर्षों में डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक बढ़ चुका है और यह सिलसिला थम नहीं रहा। पेरिस समझौते का लक्ष्य है कि 2030 तक उत्सर्जन आधे तक सीमित रह जाए, और 2050 तक यह शून्य स्तर पर टिक जाए। शून्य उत्सर्जन का अर्थ है, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन इतना कम हो, जितना पेड़–पौधे और समुद्र सहज अवशोषित कर लें, ताकि मानव–जाति सुरक्षित रहे। ऐसे में, यदि हम अब भी संभल जाएं, तो यह लक्ष्य पाया जा सकता है, मगर कागजी कार्रवाइयों से हमें ऊपर उठना होगा। दुखद है कि बड़े देश इसके लिए जरूरी इच्छाशक्ति नहीं दिखा रहे।

प्रदूषण कम करने के लिए केंद्र सरकार प्रतिबद्ध है। 131 लक्षित शहरों की वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए राष्ट्रीय स्तर की कार्यनीति के रूप में वर्ष 2019 में राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम शुरू की गई। वायु प्रदूषण निवारण के लिए केंद्र सरकार ने अप्रैल 2020 से ईंधन और वाहनों के लिए बीएस–4 से सीधे बीएस–6 मानदंडों में त्वरित परिवर्तन को लागू किया। सीएनजी, एलपीजी और इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल का विकल्प, ई20 ईंधन को ऑटोमोटिव ईंधन के रूप में अधिसूचित करना शामिल है। इथेनॉल सम्मिश्रण से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

इलेक्ट्रिक वाहनों को जल्द से जल्द अपनाने के लिए फेम स्कीम, इलेक्ट्रिक वाहनों में परमिट आवश्यकता की छूट, मेट्रो रेल विस्तार, रोपवे और केबल कार की शुरुआत की गई है। पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण के समाधान के लिए केंद्र सरकार ने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में फसल अवशेषों के प्रबंधन वाली मशीन पर सब्सिडी देने की योजना 2018–19 में शुरू की। वायु प्रदूषण के स्तर में अचानक वृद्धि की समस्या से निपटने के लिए वर्ष 2017 में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) शुरू किया गया। भारत सरकार ने इस्पात स्क्रैप पुनर्चक्रण नीति, 2019 में विभिन्न स्रोत और उत्पादों से सृजित स्क्रैप के वैज्ञानिक निपटारे के लिए धातु स्क्रैपिंग केंद्रों की स्थापना को सुविधाजनक बनाने और बढ़ावा देने की व्यवस्था की है। स्वच्छ भारत मिशन, स्मार्ट सिटी, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन, नमामि गंगे, गोबरधन योजना सहित कई अन्य योजनाएं सतत विकास लक्ष्यों को पाने के साथ–साथ पर्यावरण में सुधार के लिए चलाई जा रही है। सरकार के प्रयासों से शहरों में वायु प्रदूषण कम हुआ है। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम योजना में शामिल 131 शहरों में से 90 शहरों में वित्त वर्ष 2017–18 के स्तर की तुलना में 2022–23 के दौरान पीएम 10 की मात्रा में कमी देखी गई। टोल प्लाजा में जाम और प्रदूषण घटा है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर बने टोल प्लाजा पर सभी लेन को 15–16 फरवरी 2021 की मध्य रात्रि से शुल्क प्लाजा को फास्टैग लेन घोषित कर दिया गया। फास्टैग नहीं है तो शुल्क का दोगुना भुगतान करना होता है। इससे सालाना 35 करोड़ लीटर ईंधन के साथ करीब 10 लाख टन कॉर्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम हुआ।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की प्रगति का ही परिणाम है कि भारत संभवतः दुनिया का एकमात्र देश होगा जहां जैव ईंधन (बायो–फ्यूल) से वाणिज्यिक एयरक्राफ्ट ने उड़ान भरी है।

भारत ने एलईडी बल्ब इस्तेमाल की योजना शुरू की तो ऊर्जा की बचत हुई और 100 मिलियन टन से ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड का उत्पादन कम हुआ। नौ वर्षों में 115 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण कर भारत खुले में शौच मुक्त हुआ, उज्ज्वला योजना ने धुएं से मुक्ति दिलाई और पर्यावरण की रक्षा हुई।

केंद्र और राज्य सरकारों के तमाम प्रयासों के बाद भी हर वर्ष ठंड शुरू होते ही देश के एक बड़े हिस्से में वायु प्रदूषण एक गंभीर संकट का रूप ले लेता है। चूंकि ऐसा वर्षों से होता चला आ रहा है, इसलिए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई चारा नहीं कि वायु प्रदूषण के कारणों का निवारण करने के मामले में केवल कोरे वादे किए जा रहे हैं। अब तो ऐसा लगता है कि आने वाले वर्षों में भी उत्तर एवं मध्य भारत के लोगों को खतरनाक वायु प्रदूषण का इसी तरह सामना करना होगा। वायु प्रदूषण महानगरों को इसलिए अधिक चपेट में लेता है, क्योंकि

वहां कहीं अधिक सघन आबादी होती है। कई महानगर ऐसे हैं, जहां प्रति वर्ग किमी आबादी का घनत्व मानकों से कहीं अधिक है। लोगों के आर्थिक रूप से सक्षम होने के कारण वाहनों और विशेष रूप से कारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। वाहनों से होने वाला उत्सर्जन वायु प्रदूषण को बढ़ाने का ही काम करता है। चूंकि बड़े शहरों में सड़कों पर जाम और अतिक्रमण के चलते वाहन रेंगते हुए चलते हैं, इसलिए उनसे उत्सर्जन भी अधिक होता है। अनेक शहरों में तो दो–तीन किमी का सफर तय करने में भी 15–20 मिनट लग जाते हैं।

वैसे तो सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दे रही है, लेकिन अभी भी पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों की बहुतायात है। वाहन तय गति से चलें. इसके लिए सड़कों को अतिक्रमण से मुक्त करने के साथ ही उनकी चौड़ाई भी बढ़ानी होगी, लेकिन सरकारें और उनकी एजेंसियां यह काम करने में नाकाम हैं। सड़कों की चौड़ाई बढ़ने के स्थान पर फुटपाथ अतिक्रमण की भेंट चढ़ते जा रहे हैं। इसके चलते पैदल यात्रियों को भी सड़कों पर ही चलना पड़ता है। एक अर्से से यह कहा जा रहा है कि उन क्षेत्रों की पहचान की जाएगी, जहां सड़कों पर अतिक्रमण अथवा वाहनों की अवैध पार्किंग के कारण यातायात सुगमता से नहीं चलता, लेकिन इच्छाशक्ति के अभाव में यह काम भी नहीं हो पा रहा है। यदि कभी सड़कों को अतिक्रमण से मुक्त किया भी जाता है तो दो–चार दिन में वह फिर से कायम हो जाता है। यही स्थिति सड़क किनारे वाहनों की अवैध पार्किंग के मामले में भी देखने को मिलती है।

यह ठीक है कि खाना बनाने के लिए गैस का इस्तेमाल बढ़ा है, लेकिन अनेक घरों में अभी भी खाना पकाने के लिए कोयले, उपलों या लकड़ी का इस्तेमाल होता है। इससे भी वायु प्रदूषण बढ़ता है। इसके अलावा सड़कों एवं निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल भी वायुमंडल को विषाक्त करती है। सरकारें इससे अच्छी तरह परिचित हैं कि सड़कों की धूल वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण है, लेकिन इस कारण का भी निवारण नहीं हो पा रहा है। सड़कों पर पानी का छिड़काव करने और उन्हें वैक्यूम क्लीनर से साफ करने के तमाम दावों के बाद भी नतीजा ढाक के तीन पात वाला है। आम तौर पर सफाई कर्मी सड़कों की धूल को झाड़ से हटाते हैं। इस क्रम में वह उड़कर वायुमंडल का हिस्सा ही बनती है। एक समस्या यह भी है कि तमाम सड़कें ऐसी हैं, जिन पर वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल संभव नहीं।

वायु प्रदूषण का एक अन्य कारण खेतों में फसलों के अवशेष यानी पराली जलाना है। किसान पराली न जलाएं, इसके लिए सरकारें तमाम दावे तो करती हैं, लेकिन वे खोखले ही सिद्ध होते हैं। एक समय मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ही पराली जलाई जाती थी, लेकिन अब वह अन्य राज्यों में भी जलाई जाती है। जहां राज्य सरकारें पराली को जलाए जाने से रोकने के ठोस उपाय नहीं कर पा रहीं, वहीं किसान भी यह जानते हुए भी उसे जलाते हैं कि ऐसा करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पराली को जलाने से रोकने के जो कदम एक दशक पहले उठाए जाने चाहिए थे, वे अभी तक प्रभावी ढंग से नहीं उठाए जा सके हैं।

श्री राजीव दासगुप्ता, प्रोफेसर, जेएनयू के अनुसार दिल्ली–एनसीआर पर छाई धुंध का कारण पंजाब– हरियाणा जैसे राज्यों में जल रही पराली को बताया जा रहा है, लेकिन भारत में वायु प्रदूषण का स्रोत घरों, मोटरगाड़ियों और उद्योगों से निकलने वाला धुआं भी है। विकसित देशों में तो यह समस्या कम दिखती है, लेकिन औद्योगिकीकरण की तरफ बढ़ती अर्थव्यवस्थाएं गंभीर वायु प्रदूषण से जूझ रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दुनिया की लगभग 99 फीसदी आबादी ऐसी दूषित आबोहवा में सांस ले रही है, जिसमें तय सीमा से काफी अधिक प्रदूषक है। इसका विशेष नुकसान अल्प–विकसित या विकासशील देशों को हो रहा है। भारत भी ऐसा ही एक मुल्क है।

अनुमानतः दुनिया भर में घरेलू और बाह्य प्रदूषण के कारण हर साल करीब 55 लाख लोग समय से पहले मर जाते हैं, जिनमें से आधे से अधिक मौतें विश्व में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं–भारत और चीन में हो रही हैं। अति सूक्ष्म कण पीएम 2.5 के कारण विश्व में जितने लोगों की जान जा रही है, उसे देखते हुए यह कण पांचवां सबसे प्रमुख जोखिम का कारक माना जाता है। यूरोप में तो वायु प्रदूषण सबसे बड़ा पर्यावरणीय खतरा और समय से पहले मौत व बीमारी का एक प्रमुख कारक बनकर उभरा है।

श्री नितिन पाई, निदेशक, तक्षशिला संस्थान के अनुसार वैश्विक मानदंडों के प्रति पश्चिमी देशों का उपेक्षा भाव दुनिया को खतरे में डाल रहा है। पृथ्वी पर हर किसी के लिए इसके गंभीर परिणाम होंगे। हम इस बात को आज अनेक वैश्विक मामलों में देख रहे हैं कि अमेरिका, चीन और रूस द्वारा किए गए हस्तक्षेप या प्रहारों के चलते नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था चरमरा रही है।

मुक्त व्यापार व नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था से पश्चिमी देशों का पीछे हटते जाना दुनिया के लिए अशुभ है। बर्लिन की दीवार के गिरने के बाद से बहुपक्षवाद और अंतरराष्ट्रीय कानून के लिए पश्चिमी देशों की प्राथमिकता अपने हितों को ध्यान में रखते हुए ही तय हुई है। फिर भी, शायद एक दशक पहले तक यह धारणा थी कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थशास्त्र के जटिल मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय कानूनों और संस्थानों के माध्यम से हल किया जा सकता है, पर अब ऐसा नहीं है। विश्व व्यापार संगठन निष्क्रिय हैं, क्योंकि अमेरिका ने इसका दम घोंट दिया है। संयुक्त राष्ट्र की भूमिका घट गई है, क्योंकि पश्चिम ने इसकी बारीकियों की परवाह करना बंद कर दिया है। शायद ही पश्चिमी व्यवहार का यह चलन निकट भविष्य में बदलेगा। कुल मिलाकर, दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों का नतीजा समान हैः व्यापार, आव्रजन पर प्रतिबंध और अंतरराष्ट्रीय कानूनों की उपेक्षा। बाकी देश पश्चिमी देशों का व्यवहार देख रहे हैं और उसके अनुरूप आचरण के लिए बाध्य हैं। सबसे बड़ा सवाल जलवायु परिवर्तन को लेकर है। क्या होगा, अगर पश्चिमी देश जलवायु संबंधी प्रतिबद्धताओं से मुकर जाएं? ऐसा पहले भी हो चुका है। उदाहरण के लिए, अमेरिका का डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन 2017 में पेरिस समझौते से पीछे हट गया था। यूरोपीय संघ का दृष्टिकोण नतीजों की परवाह किए बिना अन्य देशों पर बोझ डालना है। दुनिया की सरकारों और उद्योगों को अमेरिका

व यूरोप, दोनों से जूझना पड़ रहा है। दुर्भाग्य से, शायद ही विकसित देशों की राजनीति ऐसे नेताओं को सामने ला सकती है, जो अंतरराष्ट्रीयता को फिर से जीवंत कर सकेंगे।

'अमेरिकन लंग एसोसिएशन' के मुताबिक, वायु प्रदूषण में लंबे समय तक रहने से अकाल मौत की आशंका तो है ही, अस्थमा की शिकायत बढ़ने, दिल के दौर व मानसिक आघात का खतरा पैदा होने, फेफड़े का कैंसर होने, बौनेपन की शिकायत, सीओपीडी, यानी सांस संबंधी पुरानी बीमारियों के गंभीर होने, बच्चों में फेफड़े की समस्या बढ़ने, फेफड़ों के ऊतकों में सूजन और जलन होने, शिशु का जन्म के समय कम वजन, खांसी व सांस की तकलीफ आदि बढ़ने की आशंका अधिक होती है। लीवर जैसे शरीर के अन्य अंगों के भी प्रदूषण से प्रभावित होने की बात कही जाती है।

हाल ही में स्विट्जरलैंड की एक संस्था आइक्यूएयर ने विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट जारी की है। उसके अनुसार बिगड़ती हवा के मामले में भारत 134 देशों की सूची में तीसरे नंबर पर है। पहले और दूसरे स्थान पर बांग्लादेश और पाकिस्तान हैं। भारत के मुकाबले इन दोनों देशों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। इस कारण वहां वायु प्रदूषण की समस्या होना समझ में आता है, लेकिन दुनिया की पांचवीं बड़ी आर्थिक ताकत बन कर उभरे भारत में हवा की यह दुर्दशा चिंतित करती है। आने वाले समय में जब देश विकसित होगा, उस स्थिति में यहां हवा की स्थिति की बस कल्पना ही कर सकते हैं। हालांकि विकसित देश बनना चुनौती है, पर अब शुद्ध हवा–पानी उससे भी बड़ी चुनौती बनने जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हवा में पीएम 2.5 सांद्रता पांच माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर होनी चाहिए, लेकिन अपने देश में इसका स्तर 10 गुना ज्यादा यानी 50 के ऊपर पाया गया है। यह आंकड़ा बांग्लादेश में 79 और पाकिस्तान में 73 है। पीएम यानी पार्टिकुलेट मैटर वायु में मौजूद छोटे कण होते हैं। ये वातावरण में मौजूद ठोस कणों और तरल बूंदों का मिश्रण हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि नग्न आंखों से नहीं देखे जा सकते। सांस के जरिये ये हमारे फेफड़ों और फिर रक्त के जरिये दूसरे अंगों में पहुंच जाते हैं और तमाम गंभीर रोगों का कारण बनते हैं। ऐसे में नए आंकड़े ज्यादा डराने वाले हैं। देश के 96 प्रतिशत लोग इस बुरी हवा की चपेट में हैं। दिल्ली दुनिया में सबसे प्रदूषित राजधानी पाई गई है। यहां पीएम 2.5 का स्तर 102 है। दुनिया में सबसे प्रदूषित शहर भी अपने ही देश में पाया गया है। इसमें बेगूसराय शीर्ष पर है। इस प्रकार दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में 80 शहर अपने ही देश में हैं। जाहिर है अपने देश में कोई भी शहर अब शुद्ध हवा–पानी में नहीं जीता। इसे देखते हुए अब देश में वायु प्रदूषण की समस्या को नए सिरे से समझना होगा। आखिर वे कौन–सी गतिविधियां हैं, जो तमाम प्रयत्नों के बाद भी हमारी प्राण वायु को संकट में डाल रही हैं। अपने ही प्राणों को हम संकट में डाल रहे हैं। इसको किसी भी तरह हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। हम आने वाले समय में विकसित देश बनने की और आगे बढ़ रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली में पीएम 2.5 का स्तर 102 माइक्रोग्राम प्रति घन क्यूबिक मीटर है। इस कारण देश के लोगों खासकर बच्चों और बुजुर्गों में सांस, त्वचा एवं हृदय की बीमारियां पनप रही हैं।

पर्यावरणविद श्री अनिल प्रकाश जोशी ने ठीक ही लिखा है कि विकसित बनने के साथ स्वच्छ एवं सुंदर रहना भी हमारा उद्देश्य होना चाहिए। पीएम 2.5 का स्तर आने वाले समय में हम सबके लिए सबसे घातक होने जा रहा है। आज भी अपने देश में यह मानकर चला जा रहा है कि या तो उद्योग या फिर परिवहन या हमारी फड़ती सुविधाओं को पूरा करने वाले आवश्यक उपभोक्ता सामान प्रदूषण के बड़े कारण हैं। वास्तव में शहरों में प्रदूषण का एक बड़ा कारण सड़कों पर बढ़ती धूल और असुरक्षित विनिर्माण हैं। एक आंकड़े के अनुसार देश में उद्योगों से मात्र सात प्रतिशत प्रदूषण होता है। परिवहन से भी यह 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होता। इस मामले में सबसे बड़ा खतरा सड़कों पर पड़ी धूल से पैदा हो रहा है। इस संबंध में हम विकसित देशों से सीख सकते हैं। कई देशों में सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां कभी भी धूल नहीं उड़ा पातीं, क्योंकि वहाँ सड़कों के दोनों तरफ घास की पट्टियां धूल को उड़ने नहीं देतीं। वहां की सड़कों को धूल मुक्त रखा जाता है। जबकि अपने देश की सड़कों पर ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की गई जो धूल को उड़ने न दे। जाहिर है जब उन पर 24 घंटे गाड़ियां दौड़ेंगी. तो धूल हवा में होगी ही होगी। धूल को स्थिर रखने के लिए व्यवस्था की जानी चाहिए। अमेरिका, चीन या अन्य विकसित देशों में सड़क केंद्रित धूल को प्रदूषण नियंत्रण के तहत टारगेट किया जाता है। हमारे देश में असुरक्षित विनिर्माण से होने वाला प्रदूषण भी एक बड़ा मुद्दा है। इसके अलावा थर्मल पावर प्लॉट और हमारी बढ़ती घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने वाले इलेक्ट्रानिक उपकरण भी इसमें बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। अगर हमने आज सही निर्णय नहीं लिया तो आने वाले दिनों में देश में दो बड़ी समस्याएं सबसे विकराल रूप लेने वाली हैं–एक पानी का संकट और दूसरा प्राणवायु का। यह दोनों एक दूसरे से जुड़े भी हुए हैं। अब जिस तरह से हालात बिगड़ चुके हैं, वे सही प्रबंधन के अभाव में और भी बदतर होंगे, ऐसे में इस समस्या को हल करने को हमें प्राथमिकता देनी होगी।

ऐसा नहीं है कि अपने यहां प्रदूषण थामने के उपाय नहीं किए जा रहे। करीब पांच साल पहले, जनवरी 2019 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) शुरू किया था। विभिन्न साझेदारों को शामिल करते हुए 24 राज्यों और केंद्रशासित क्षेत्रों के 131 शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार करना इसका लक्ष्य है। इसमें 2025–26 तक पीएम–10 में 40% तक कमी लाने की कल्पना की गई है। एनसीएपी के तहत 82 शहरों में पीएम–10 के स्तर में तीन से पंद्रह प्रतिशत तक कमी लाने का वार्षिक लक्ष्य है, ताकि इसमें समग्रता में 40% की कमी लाई जा सके। 15वें वित्त आयोग के वायु गुणवत्ता अनुदान के तहत 49 शहरों को 15% कमी लाने और वायु गुणवत्ता सुधारने का वार्षिक लक्ष्य दिया गया है। इसके अलावा भी कई कदम उठाए जा रहे हैं– जैसे, गाड़ियों से निकलने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए हम बीएस–छह की ओर बढ़ चले हैं, मेट्रो व क्षेत्रीय रेलवे में निवेश किया जा रहा है, एक्सप्रेस–वे बनाए जा रहे हैं, पुरानी गाड़ियों को प्रतिबंधित किया जा रहा है। औद्योगिक उत्सर्जन से निपटने के लिए एनसीआर में पेट कोक व फर्नेस ऑयल का उपयोग रोक दिया गया है और पीएनजी को बढ़ावा दिया जा रहा है। अपशिष्ट पदार्थों के जलाने

से होने वाले प्रदूषण को रोकने की भी कोशिश हो रही है, और वायु–गुणवत्ता की निगरानी करने के साथ–साथ पराली जलाने पर रोकथाम के प्रयास भी हो रहे हैं।

चूंकि वायु की गुणवत्ता धरती की जलवायु और पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ी हुई है, इसीलिए वायु प्रदूषण को कम करने की नीतियां जलवायु और स्वास्थ्य, दोनों के लिए फायदेमंद हैं। वायु प्रदूषण के पीछे अनियोजित विकास और जनता की नासमझी भी एक बड़ा कारण है। लोग यह जानते हैं कि पत्तियों और कूड़ा–करकट जलाने से प्रदूषण बढ़ता है, फिर भी अनेक लोग ऐसा करते हैं। एक ऐसे समय जब भारत की आर्थिक स्थिति लगातार बेहतर हो रही है, तब वायु प्रदूषण दूर करने के उपायों को अमल में लाने के लिए धन की जो आवश्यकता है, उसकी पूर्ति आसानी से की जा सकती है, लेकिन बात तब बनेगी, जब इस गंभीर समस्या से निपटने की इच्छाशक्ति दिखाई जाएगी। निःसंदेह सरकार जीवाश्म ईंधन की खपत कम करने के लिए प्रतिबद्ध है, पर यह प्रतिबद्धता अभी वांछित नतीजे नहीं दे पा रही है। अच्छा यह होगा कि सरकारें और उनकी विभिन्न एजेंसियां वायु प्रदूषण से होने वाले नुकसान को समझें और उसे दूर करने के लिए मिलकर ठोस उपाय करें। इन उपायों को जनता का सहयोग मिलना भी आवश्यक है।

श्री संजीव सिन्हा, प्रोफेसर, एनआईटी, पटना ने ठीक ही लिखा है कि जो समस्याएं बड़े शहरों तक सीमित थीं, अब छोटे शहरों में भी आ गई हैं। छोटे शहरों में भी अब वायु गुणवत्ता सूचकांक का स्तर 300 या उससे अधिक रिकॉर्ड किया जाने लगा है, जो बहुत चिंता का विषय है। मझोले व छोटे शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है और उसका असर भी लंबे समय तक रह रहा है। छोटे शहरों में भी प्रदूषकों का प्रभाव जलन, खांसी, सांस लेने में तकलीफ से लेकर अस्थमा, ब्रोंकाइटिस जैसे दीर्घकालिक रोगों तक होता है। वायु प्रदूषण जलवायु परिवर्तन के साथ भी जुड़ा हुआ है। विकास को गति जैसे–जैसे तेज हो रही है, समस्याएं भी बढ़ रही हैं। उत्सर्जन की समस्या बड़े पैमाने पर एक ही स्रोत (जैसे, जीवाश्म ईंधन या जैव ईंधन जलने) से आ रही है। ऐसे में, समय की मांग है कि इस समस्या पर गंभीरता से विचार किया जाए और बड़े शहरों की तरह ही छोटे शहरों में भी ठोस कदम उठाए जाएं।

शहरों में भूमि उपयोग योजना में सुधार की जरूरत है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों का विस्तार और विकास प्रकृति के अनुरूप हों। इसके लिए भूमि उपयोग के आधार पर क्षेत्रवार योजना बनाने की जरूरत है। भूमि उपयोग को पूर्व–निर्धारित करना होगा और हरित आवरण, खुले क्षेत्रों पर विशेष जोर देना होगा। प्रदूषण रोकने के कोर नियम बनाने पड़ेंगे और तमाम शहरों में नियमों व योजनाओं को सख्ती से लागू करना होगा।

शहरों में सार्वजनिक परिवहन और गैर–मोटर चालित परिवहन प्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए। सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में परिवहन के निजी साधनों की तुलना में कम प्रदूषणकारी, कम लागत और सुरक्षित होने का अंतर्निहित लाभ है। इसे और अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए सार्वजनिक परिवहन द्वारा कवरेज की गुणवत्ता व मात्रा, दोनों को बढ़ाना होगा। इसके अलावा, गैर–मोटर चालित परिवहनों, जैसे साइकिल आदि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। परिवहन के ये सार्वजनिक माध्यम स्पष्ट रूप से प्रति व्यक्ति कम ईंधन का उपयोग करेंगे। निजी यात्राओं के चलते होने वाला उत्सर्जन भी कम होगा। यात्रा मांग प्रबंधन (टीडीएम) पर भी ध्यान देना चाहिए। यात्रा की जरूरत को प्रबंधित करना परिवहन से उत्सर्जन को कम करने का एक उपाय है, जैसा कोविड काल या लॉकडाउन के वक्त देखा गया था। हमने देखा है, घर से काम, पढ़ाई, ऑनलाइन बैठक, कक्षाएं, सम्मेलन, ई–कॉमर्स आदि जैसे विभिन्न तरीकों को अपनाकर यात्रा की आवश्यकता को कैसे कम किया जा सकता है। शहरों में वनीकरण भी एक जरूरी उपाय है। ढांचागत विकास को जरूरतों को पूरा करने के लिए कई पेड़ों को काटा गया, हालांकि, इसके अनुपात में पेड़ों की बढ़ोतरी नहीं हुई है। परिणामस्वरूप, वायु प्रदूषण सहित कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। पेड़ों की अधिकता से न केवल सूक्ष्म कणों में कमी आएगी, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव में भी कमी आएगी।

प्रदूषण रोकने संबंधी नियमों व कानूनों का क्रियान्वयन भी अनिवार्य है। इनका प्रभावी क्रियान्वयन इस स्थिति को सुधारने में बहुत सहायक होगा। इन सभी उपायों को जमाने का वक्त आ गया है। जरूरत इस बात की है कि अब सुधारात्मक कार्रवाइयों को बैठकों व सम्मेलनों एक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे एक जन–आंदोलन बनाया जाए। लोगों को सिखाया जाना चाहिए कि जो किया जा रहा है, वह केवल उनके हित में और उनके प्रियजनों के लाभ के लिए है। स्वामित्व और जागरूकता की यह भावना किसी भी उपचारात्मक उपाय के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए बहुत उपयोगी होगी।

श्री मोहित ब्योत्रा, एयर पल्यूशन एक्शन ग्रुप के निदेशक के अनुसार हमारे पास वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ प्रमाणित मॉडल हैं, जो दिखाते हैं कि ऐसी रणनीतियां लोगों पर इसके प्रभाव को कम करने में मदद कर सकती हैं

लांसेट में छपे एक शोध के अनुसार, अकेले 2019 में ही भारत में वायु प्रदूषण के कारण 16.7 लाख लोगों की मौत हुई। यह संख्या उस साल देश में हुई कुल मौत का करीब 18% है। कुछ अनुमानों के अनुसार, इससे देश को 36.8 अरब डॉलर, यानी देश के कुल घरेलू उत्पाद मानक के 1.36% की आर्थिक हानि हुई।

2019 में केंद्र सरकार ने नैशनल क्लीन एयर प्रोग्राम (NCAP) की शुरुआत की थी, जिसका मकसद 2026 तक शहरों में वायु प्रदूषण स्तर को 40% तक कम करना है। हाल ही में, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM-NCR) की भी स्थापना की गई है, जो दिल्ली–एनसीआर में हवा की गुणवत्ता को लेकर काम करता है। ये कदम दिखाते हैं कि सरकार वायु को साफ करने के लिए प्रतिबद्ध है। हालांकि, इस जहरीली हवा पर काबू पाने के लिए हमें और भी प्रयास करने की जरूरत है। खासकर तब, जब लक्ष्य 2026 तक हासिल किया जाना है।

CAQM-NCR के नेतृत्व में, 2020 में एयर पल्यूशन एक्शन ग्रुप (ए–पैग) ने दिल्ली नगर निगम और अन्य स्थानीय

निकायों के साथ एक संयुक्त कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विशेष रूप से प्रशिक्षित सर्वेयर्स उन स्रोतों की पहचान करते हैं, जो कि शहर में प्रदूषण का कारण हैं– जैसे कच्ची सड़कें, गड्ढे, निर्माण से निकलने वाला कचरा, सड़क के किनारे डाला गया कचरा आदि। सर्वे करने वाली टीम इन स्रोतों की तस्वीरें एक ऐप पर उनके स्थान के विवरण के साथ अपलोड करती है। फिर ऐप संबंधित सरकारी अधिकारियों को ये काम आवंटित करता है। अधिकारी समाधान होने के बाद उन्हीं स्थानों की नई तस्वीरें अपलोड करते हैं। इससे ए–पैग को प्रत्येक उठाए गए मुद्दे के समाधान की स्थिति की निगरानी करने में आसानी होती है। अब तक, राजधानी दिल्ली में 1.5 लाख ऐसे मुद्दे पहचाने गए है, जिनमें से 85% का समाधान हो गया है!

दिल्ली में इस सफलता के बाद, एयर पल्यूशन एक्शन ग्रुप ने कुछ अन्य शहरों में भी वायु प्रदूषण के समाधान के लिए सरकारी अधिकारियों के साथ हाथ मिलाया। अब इस कार्यक्रम को नौ और शहरों में बढ़ाया जा चुका है– बिहार में पटना, मुजफ्फरपुर और गया; उत्तर प्रदेश में लखनऊ, वाराणसी, गाजियाबाद, मथुरा–वृंदावन और प्रयागराज तथा हरियाणा में गुरुग्राम। इन दस शहरों में प्रयोग की गई रणनीति से मिली सफलता बताती है कि इन्हें अन्य क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है। इससे यह पता चलता है कि जब प्राइवेट और पब्लिक सहयोगियों के बीच तालमेल हो तो वायु प्रदूषण की समस्या हल की जा सकती है। हालांकि, सरकार इन प्रयासों का नेतृत्व करती है क्योंकि सरकार के बिना बड़े पैमाने पर कोई भी बदलाव पूरी तरह संभव नहीं है। जमीन मालिक, शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) से लेकर गैर–लाभकारी संगठनों तक हर किसी को वायु प्रदूषण के स्तर में कमी लाने के लिए एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है। स्वच्छ हवा के फायदों को भी याद रखने की जरूरत है– लंबा जीवनकाल, हार्ट अटैक के न्यूनतम खतरे, अस्थमा और फेफड़ों की अन्य बीमारियों का कम होना और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य। यही नहीं, स्वच्छ हवा भारत की इस आर्थिक समृद्धि को भी बढ़ावा देगी, हेल्थकेयर पर कम खर्च और बढ़ी हुई उत्पादकता के माध्यम से।

हमारे पास वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने से जुड़े कुछ प्रमाणित मॉडल हैं, जो दिखाते हैं कि ऐसी रणनीतियां हमें बड़े पैमाने पर लोगों के दैनिक जीवन पर इसके प्रभाव को कम करने में मदद कर सकती हैं। सरकार द्वारा तय किए गए 2026 के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। हमें बस इस संकल्प को मजबूत करना है कि हम मिलकर हवा को साफ करने के लिए कदम बढ़ाएं।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

शब्दों का भंडार

i\dk'k feJk*

सब की पहली बोली है हिंदी
माँ की ममता है हिंदी
पिता का अनुशासन है हिंदी
भाई बहन का स्नेह है हिंदी।

राम–सी मर्यादित है हिंदी
कृष्ण–सी नटखट है हिंदी
सीता जैसा समर्पण है हिंदी
मीरा जैसी भक्ति है हिंदी।

हिमालय के हिम है हिंदी
सागर का नीर है हिंदी
खेत मे लहराते फसल है हिंदी
बागों मे खिलते फूल है हिंदी

चाँद पर टहलता प्रज्ञान हिंदी
तिरंगे पर अशोक चक्र हिंदी
वीरों का बलिदान हिंदी
सीमा का पहरेदार हिंदी।

शब्दों का भंडार, है हिंदी
हर जन का प्यार है हिंदी
संस्कृति का श्रृंगार है हिंदी
जैसे माथे पर तिलक और बिंदी है हिंदी

हर भाव, हर प्रयास में हिंदी
जीवन के हर उल्लास में हिंदी
बसी जन–जन के मन में हिंदी
भारत का विकास है हिंदी

शब्दों पर इतराती हिंदी
कविता में लहराती हिंदी
सबको समझ में आती हिंदी
तभी तो हमको भाती हिंदी

देश की शान है हिंदी
हमारी पहचान है हिंदी
गर्व से सब बोलो हिंदी
प्रकाश की उम्मीद है हिंदी।

* अकाउंट्स एसोसिएट, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

अमृत काल की शानदार शुरूआत

chjUn flg jkor*

भारत गणराज्य की आजादी के 75 साल पूरे होने का जश्न मनाने को समर्पित 75 सप्ताह के आजादी का अमृत महोत्सव का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी ने 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम से एक पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर किया। दरअसल, 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। 2021 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने 75 किलोमीटर की इस पदयात्रा का आयोजन किया था। आजादी के 75 साल पूरे होने को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा शुरु में आजादी के अमृत महोत्सव को 75 सप्ताह (15 अगस्त 2022) तक मनाने का निश्चय किया गया। आज़ादी का अमृत महोत्सव के शुभारंभ पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, 'आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – आज़ादी की ऊर्जा का अमृत, आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – आत्मनिर्भरता का अमृत। और इसीलिए, यह महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है। यह महोत्सव सुराज्य के सपने को पूरा करने का महोत्सव है। यह महोत्सव वैश्विक शांति का, विकास का महोत्सव है। आज़ादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य सहयोगात्मक अभियानों के माध्यम से इस जन आंदोलन को और प्रोत्साहित करके इसे भारत एवं विश्व के विभिन्न भागों तक पहुंचाना है।' माननीय प्रधानमंत्री द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के लिए घोषित 'पंच प्रण–स्वतंत्रता संग्राम, विचार, समाधान, कार्य एवं उपलब्धियाँ' के साथ पंक्तिबद्ध किए गए नौ महत्वपूर्ण विषयों के आधार पर निम्नलिखित अभियान चलाये गयेः महिलाएं एवं बच्चे, आदिवासी सशक्तिकरण, जल, सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण के लिए जीवन शैली (जीवन), स्वास्थ्य एवं कल्याण, समावेशी विकास, आत्मानिर्भर भारत और एकता। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ज्ञात–अज्ञात सभी स्वतंत्रता सेनानियों के अमर बलिदान को नमन करने, पिछले 75 वर्षों के दौरान की उपलब्धियों का जश्न मनाने, नई पीढ़ी को हमारे गौरवशाली इतिहास से रूबरू कराने और भविष्य के लिए संकल्प प्रस्तुत करने के उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकारों के मंत्रालयों, विभागों एवं कार्यालयों के द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के तहत उपर्युक्त विषयों पर अनेकानेक कार्यक्रम निर्धारित किए गए और उनका आयोजन किया गया। आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान सभी स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष एवं अमर बलिदान को याद करते हुए जहाँ एक ओर अल्लूरी सीताराम राजू, वरीकुटी चेन्नइया, टंट्या भील, तिरोत सिंह जैसे अनेक योद्धाओं के बारे में पूरे देश को जानने का अवसर मिला, तो वहीं दूसरी ओर कित्तूर की रानी चेनम्मा, रानी गाइदिनल्यू, रानी वेलु नचियार, मतंगिनी हाजरा, झलकारी बाई जैसी अनेक वीरांगनाओं को भी कृतज्ञ राष्ट्र ने नमन किया।

लोगों, विशेषकर देश की युवा आबादी के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाने और तिरंगे के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने की भावना से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की आजादी की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हर घर में तिरंगा लाने और उसे फहराने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए 22 जुलाई 2022 को 'हर घर तिरंगा' अभियान शुरू किया था और इस अभियान में विशेष तौर पर 13 से 15 अगस्त तक हर देशवासी से हिस्सा लेने का आग्रह किया गया था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय ध्वज के साथ संबंध को औपचारिक या संस्थागत रखने के बजाय अधिक व्यक्तिगत बनाने के साथ ही राष्ट्र निर्माण में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाना था। देश के सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और मंत्रालयों ने पूरे जोश के साथ इस अभियान में बड़े पैमाने पर भाग लिया। विभिन्न स्थानों के गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सहायता समूहों ने भी हर घर तिरंगा को आजादी के अमृत महोत्सव की कामयाबी के रास्ते में एक प्रतिष्ठित बेंचमार्क बनाने में योगदान दिया। पूरे मुल्क की देशभक्ति और एकता को चित्रित करने के लिए स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े विभिन्न स्थानों पर अलग–अलग क्षेत्रों के लोगों को शामिल करते हुए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। यहाँ, यह बताना समीचीन होगा कि पूर्व में भारतीय नागरिकों को चुनिंदा अवसरों को छोड़कर राष्ट्रीय ध्वज फहराने की अनुमति नहीं थी। हर घर तिरंगा अभियान के मद्देनजर भारतीय ध्वज संहिता को वर्ष 2022 में संशोधित किया गया था, जिसमें कपास, ऊन, रेशम और खादी के अलावा हाथ से बुने हुए और मशीन से बने झंडे बनाने के लिए पालिएस्टर के उपयोग की अनुमति दी गई थी। अब एक नागरिक, एक निजी संगठन या एक शैक्षणिक संस्थान सभी दिनों और अवसरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा सकता है या प्रदर्शित कर सकता है। ध्वज प्रदर्शन के समय पर कोई प्रतिबंध नहीं है। साथ ही, तिरंगे को खुले में और अलग–अलग घरों या इमारतों में दिन–रात प्रदर्शित किया जा सकता है। यह अभियान काफी हद तक सफल रहा। इस अभियान के दौरान कई नए कीर्तिमानों को छुआ गया जैसे चंडीगढ़ के सैक्टर–16 के क्रिकेट स्टेडियम में 5885 लोगों की भागीदारी से 'राष्ट्रीय ध्वज लहराती हुई दुनिया की सबसे बड़ी मानव श्रृंखला की तस्वीर' का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हर घर तिरंगा' अभियान को मजबूत करने के लिए एनआईडी फाउंडेशन और चंडीगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। एक और शानदार उपलब्धि ये रही कि हर घर तिरंगा की वेबसाइट पर आठ करोड़ से ज्यादा तिरंगा सेल्फी अपलोड की गईं। हाइब्रिड प्रारूप में तैयार किए गए इस कार्यक्रम

* वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

में व्यक्तिगत तौर पर राष्ट्रीय ध्वज के साथ वास्तविक और भावनात्मक जुड़ाव की परिकल्पना की गई थी। इसके अलावा, श्रीनगर जिला प्रशासन ने स्वतंत्रता के 75वें साल का जश्न मनाने के लिए बख्शी स्टेडियम में 1850 मीटर लंबे राष्ट्रीय ध्वज को प्रदर्शित करके एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया।

देश के 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2022 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अगले 25 साल की यात्रा को देश के लिए ''अत्यंत महत्वपूर्ण'' करार दिया और इस कालखंड को ''अमृत काल'' का नाम दिया। ''अमृत काल'' में i) विकसित भारत के बड़े संकल्प के साथ आगे बढ़ना, ii) गुलामी के सभी निशान मिटाना, iii) भारत की विरासत पर गर्व करना, iv) एकता एवं एकजुटता और अ) प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री सहित नागरिकों द्वारा अपने कर्तव्य पालन के ''पंच प्रण'' का आवाह्न किया गया। उन्होंने कहा, ''हमें पंच प्रण को लेकर 2047, जब देश स्वतंत्रता के 100 साल मनाएगा, तक चलना है। जब आजादी के 100 साल होंगे, आजादी के दीवानों के सारे सपने पूरा करने का जिम्मा उठा करके चलना है।'' अमृत काल की शुरुआत शानदार रही है। राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत निम्नलिखित दो अभूतपूर्व उपलब्धियों ने वर्ष 2023 को अविस्मरणीय बना दिया, यह भारत की साख, सुरक्षा और समृद्धि का प्रतीक वर्ष बना है।

dVuhfrd miyfCèk% यह भी सुखद संयोग रहा कि भारत को जी20 समूह की अध्यक्षता अमृत काल के पहले ही वर्ष में मिली और 15–16 नवम्बर 2022 के दौरान बाली, इंडोनेशिया में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन में भारत जी20 ट्रोइका (जी20 तिकड़ी) के एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में बाली घोषणा पत्र पर आम सहमति बनाने में सफल रहा था और इस प्रकार वैश्विक स्तर पर अपनी धाक जमाने में सफल रहा था। दरअसल जी20 समूह 19 देशों नामतः अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) का एक अनौपचारिक समूह है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के प्रतिनिधि भी शामिल होते हैं। सदस्यता में दुनिया की सबसे बड़ी, उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं का मिश्रण शामिल है, जो दुनिया की लगभग दो–तिहाई आबादी, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 85 प्रतिशत, वैश्विक निवेश का 80 प्रतिशत और वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है। जी20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक चक्रीय अध्यक्षता के साथ आयोजित किया जाता है और इस प्रकार इसका कोई स्थायी सचिवालय या मुख्यालय नहीं है। जब भी जी20 नेताओं का शिखर सम्मेलन होता है तो जी20 का शीर्ष समूह, जिसे जी20 तिकड़ी के नाम से जाना जाता है, सम्मेलन के एजेंडे की स्थिरता एवं निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करता है। इसमें वर्तमान, पूर्व और आगामी अध्यक्ष देश शामिल होते हैं। भारत जी20 तिकड़ी में 02 दिसंबर 2021 को शामिल हुआ जब 30–31 अक्टूबर 2021 के दौरान इटली में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन में इटली ने जी20 की अध्यक्षता इंडोनेशिया को सौंपी थी। इस प्रकार भारत के वर्ष 2023 में जी20 की अध्यक्षता संभालने की प्रक्रिया 02 दिसंबर 2021 को शुरू हो गई थी और फिर भारत ने 01 दिसंबर 2022 को इंडोनेशिया से जी20 की अध्यक्षता ग्रहण की।

15–16 नवम्बर 2022 के दौरान बाली, इंडोनेशिया में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन में दुनिया के दिग्गज नेताओं का जमावड़ा रहा। जी20 देशों के नेताओं की यह बैठक ऐसे समय में हुई, जब पूरी दुनिया यूक्रेन संकट से पैदा हुई चुनौतियों का सामना कर रही थी, कोविड–19 महामारी से उबर रही थी और जलवायु परिवर्तन की चुनौती अभी भी मुंह बाए खड़ी है। पूरी दुनिया यूक्रेन संकट पर दो ध्रुवों में बंटी दिख रही थी। अमेरिका के खेमे वाले देश हर मंच पर रूस की खिंचाई करते रहते हैं। लेकिन भारत ने जी20 को राजनीतिक घमासान का मंच नहीं बनने दिया। यूक्रेन में रूस के हमले के बाद दुनिया के देश भारत से उम्मीद लगाए बैठे थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कभी रुसी राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन से बात करते तो कभी यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से। भारत ने हर वैश्विक मंच पर बहुत ही सधी प्रतिक्रिया दी थी। ऐसे में जब जी20 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बोलना शुरू किया तो उन्होंने यूक्रेन संकट का भी जिक्र किया। उन्होंने यूक्रेन संघर्ष के समाधान के लिए 'संघर्ष विराम और कूटनीति' के रास्ते पर लौटने का आवाह्न किया। जी20 शिखर सम्मेलन के शुरू होने से पहले ही अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने एजेंडा तय कर लिया था। पूरी तैयारी रूस को यूक्रेन पर घेरने की थी। विशेष आमंत्रित अतिथि के तौर पर यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने जी20 शिखर सम्मेलन को वर्चुअल तरीके से संबोधित किया तो बार–बार समूह को 'जी19' कहकर पुकारा। हालांकि भारत के प्रधानमंत्री और उनकी टीम ने यह सुनिश्चित किया कि यहाँ कोई खेमेबाजी न हो और स्वस्थ चर्चा हो। पश्चिमी देशों, खासतौर से जी–7 के सदस्यों, के चलते घोषणापत्र पर आम सहमति नहीं बन पा रही थी। जी–7 के सदस्य यूक्रेन में रूस के आक्रमण पर पूरा फोकस करना चाहते थे। भारत के विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने बताया कि भारत ने जी20 घोषणापत्र को तैयार करने में रचनात्मक भूमिका निभाई। इसका परिणाम यह हुआ कि यूक्रेन–रूस मसले पर दुनिया के बंटने की जगह प्रधानमंत्री मोदी के शांति के संदेश पर दुनिया के बड़े देश एक साथ चले। प्रधानमंत्री मोदी की पुतिन को दी गई सलाह जी20 घोषणापत्र का आधार बनी। साझा बयान में भारत के प्रधानमंत्री के बयान को प्रमुखता से शामिल किया गया जिसमें उन्होंने कहा था कि आज का युग युद्ध का नहीं है।

भारत की अध्यक्षता में जी–20 को पीपुल्स जी–20 के रुप में पहचान मिली है। भारत के करोड़ों सामान्य नागरिक जी–20

से जुड़े और हमने इसे एक पर्व की तरह मनाया। 09–10 सितंबर 2023 को जी–20 नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में दुनिया के सबसे शक्तिशाली आर्थिक समूह के नेताओं की मेजबानी भारत ने की। इस शक्तिशाली समूह के अध्यक्ष के रूप में जी–20 में अफ्रीकन यूनियन का प्रवेश कराने और 09 सितंबर 2023 को नई दिल्ली घोषणापत्र को सर्वसम्मति से मंजूर करवाकर भारत ने इतिहास रच दिया। अपनी जी20 अध्यक्षता के माध्यम से भारत दुनिया के सबसे प्रभावशाली शक्तिशाली देशों को मेज पर इकट्ठा करने और दुनिया से संबंधित सबसे अधिक दबाव वाले मुद्दों पर चर्चा करने हेतु सहमत होने में सफल रहा था। जी–20 नई दिल्ली शिखर सम्मेलन घोषणा को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया, जिसने समावेशी, निर्णायक और कार्रवाई–उन्मुख तरीके से वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए जी20 नेताओं की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। घोषणा का सबसे बड़ा निष्कर्ष यह था कि घोषणा के सभी 83 पैरा को चीन और रूस के साथ 100 प्रतिशत आम सहमति के साथ सर्वसम्मति से पारित किया गया था। पहली बार घोषणा में कोई फुटनोट या अध्यक्ष का सारांश शामिल नहीं था। इसके अलावा, घोषणा सबसे महत्वाकांक्षी होने के नाते इसमें 112 परिणाम शामिल थे – परिणाम और संलग्न दस्तावेज दोनों, किसी भी अन्य की तुलना में ढाई गुना अधिक हैं। घोषणा का एक और बड़ा परिणाम वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन का शुभारंभ था। अग्रणी जैव ईंधन उत्पादक और उपभोक्ता ब्राज़ील, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका, अब अन्य इच्छुक देशों के साथ एक वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन के विकास की दिशा में काम कर रहे हैं। गठबंधन का उद्देश्य परिवहन क्षेत्र सहित सहयोग को सुविधाजनक बनाना और टिकाऊ जैव ईंधन के उपयोग को तेज करना है। यह बाजारों को मजबूत करने, वैश्विक जैव ईंधन व्यापार को सुविधाजनक बनाने, ठोस नीति पाठ–साझाकरण विकसित करने और दुनिया भर में राष्ट्रीय जैव ईंधन कार्यक्रमों के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने पर जोर देता है। यह पहले से लागू सर्वोत्तम प्रथाओं और सफलता के मामलों पर जोर देता है। एक अन्य प्रमुख उपलब्धि भारत, अमेरिका, सऊदी अरब और यूरोपीय संघ द्वारा एक मेगा भारत–मध्य पूर्व–यूरोप शिपिंग और रेलवे कनेक्टिविटी कॉरिडोर का शुभारंभ था।

oKkfud miyfCèk – जब 23 अगस्त 2023 को सूरज ढला और दुनिया ने चाँद की ओर देखा तो वहां उसने नया हिंदुस्तान देखा, नया भारत देखा। भारत का चंद्रयान–3 चाँद के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा, जहाँ दुनिया का कोई देश पहले पहुंच नहीं पाया था। जो काम पहले दुनिया में कोई अन्य देश नहीं कर पाया, वह भारत ने कर दिखाया। इस तरह, भारत चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला दुनिया का पहला देश बना। इसके साथ ही भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के साथ चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लैंड करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया। चंद्रयान–3 मिशन को 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था, जिसके बाद विक्रम लैंडर ने 23 अगस्त 2023 को चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग की थी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2019 में चंद्रयान–2 की असफलता से उबरते हुए चार वर्ष में ही यह शानदार उपलब्धि हासिल कर ली। इसरो ने चंद्रयान–2 को 22 जुलाई 2019 को लॉन्च किया था और 06–07 सितम्बर 2019 की आधी रात को चंद्रयान–2 के लैंडर विक्रम को चाँद की सतह पर उतरना था। चंद्रयान–2 जब चंद्रमा की सतह पर उतरने ही वाला था कि लैंडर विक्रम से संपर्क टूट गया। प्रधानमंत्री मोदी भी इस ऐतिहासिक क्षण का गवाह बनने के लिए इसरो मुख्यालय बेंगलुरू पहुंचे थे। लेकिन आखिरी पल में चंद्रयान–2 का 47 दिनों का सफ़र अधूरा रह गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगली ही सुबह इसरो प्रमुख के. सिवन से मिले तो भावुक हो गए। उन्होंने के. सिवन को गले लगा लिया और देर तक ढाढ़स बंधाते रहे। इसरो के वैज्ञानिकों को उनके प्रयासों के लिए बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान में नाकामी जैसी कोई चीज़ नहीं होती है बल्कि हर क़दम एक नया प्रयोग होता है। उन्होंने वैज्ञानिकों को इसी तरह से कोशिशों में जुटे रहने की सलाह भी दी थी। अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं विभिन्न क्षेत्रों की महान हस्तियों के साथ स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने भी इसरो के वैज्ञानिकों की हौसलाअफजाई की थी। उन्होंने ट्विटर पर लिखा था, 'केवल सम्पर्क टूटा है, संकल्प नहीं, हौसले अब भी बुलंद हैं। मुझे विश्वास है कि सफलता अवश्य मिलेगी। सारा देश साथ है, हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है। बस आप आगे बढ़िए...।' इस हौसलाअफजाई से निश्चित तौर पर इसरो के वैज्ञानिकों को दोगुने उत्साह से अपने मिशनों को पूरा करने की प्रेरणा मिली। वैसे चंद्रयान–2 मिशन को आंशिक रूप से सफल माना जा सकता है, क्योंकि यह मिशन पूरी तरह से फेल नहीं हुआ था। इसका ऑर्बिटर अभी भी चाँद की कक्षा में स्थापित है और चंद्रयान–3 के लैंडर विक्रम के चंद्रमा की सतह पर उतरने से कुछ ही दिन पहले, 21 अगस्त 2023 को इसरो ने बताया था – 'चंद्रयान–2 के ऑर्बिटर ने चंद्रयान–3 के लैंडर विक्रम को एक स्वागत संदेश भेजा है, जो चंद्रमा के दक्षिणी हिस्से पर उतरने का प्रयास कर रहा है। संदेश में लिखा था, 'स्वागत है दोस्त!'। तब अंतरिक्ष एजेंसी ने अपने पोस्ट में कहा था कि चंद्रयान–2 के ऑर्बिटर ने औपचारिक रूप से चंद्रयान–3 एलएम (लैंडर मॉड्यूल) का स्वागत किया। दोनों के बीच दो–तरफा संचार स्थापित हो गया है।' अविस्मरणीय, अभूतपूर्व और नए भारत के जयघोष का यह वर्ष सही अर्थों में मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। यह देश की 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। भारत में नई ऊर्जा, नया विश्वास, नई चेतना का है। भारत के उदयीमान भाग्य के आवाह्न का है। इन दो बड़ी उपलब्धियों ने एक बार फिर भारत के सामर्थ्य और भारतीयता के संस्कारों से दुनिया को परिचित कराया है। भारत ने यह बताया है कि यह

आज का भारत है, निर्भीक भारत, जुझारू भारत। यह वो भारत है, जो नया सोचता है, नए तरीके से सोचता है, जो डार्क जोन में जाकर भी दुनिया में रौशनी की किरण फैला देता है। यही भारत अब 21वीं सदी में दुनिया की बड़ी–बड़ी समस्याओं का समाधान करेगा। वर्ष 2023 की यह दो तारीख भारत के इतिहास के सबसे गौरवमयी तारीखों में शामिल हो गई हैं। यह विकसित भारत के शंखनाद का क्षण बन गया।

वर्ष 2023 में उपर्युक्त दो अविस्मरणीय उपलब्धियों के साथ–साथ भारत ने अन्य अनेक क्षेत्रों में शानदार, बेहद खास और ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल कीं, जिनमें से कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

[ksy% एशियाई खेलों के पहले 18 संस्करणों में भारत केवल 7 बार (नई दिल्ली 1951 में दूसरा, मनीला 1954 में पाँचवाँ, जकार्ता 1962 में तीसरा, बैंकॉक 1966 में पाँचवाँ, बैंकॉक 1970 में पाँचवाँ, नई दिल्ली 1982 में पाँचवा, सियोल 1986 में पाँचवा) पदक तालिका में पहले पाँच में स्थान पाने में सफल रहा था। 2018 में जकार्ता हुए एशियाई खेलों के 18वें संस्करण में भारत ने 16 स्वर्ण पदक सहित कुल 70 पदक जीते थे। तब भारत ने 570 सदस्यीय दल भेजा था जिन्होंने 36 खेलों में हिस्सा लिया था। उल्लेखनीय है कि इस प्रदर्शन के साथ भारत ने तब सबसे ज्यादा पदक हासिल करने के 2010 के अपने पिछले रिकॉर्ड (14 स्वर्ण पदक सहित कुल 65 पदक) को तोड़ दिया था। एशियाई खेलों के लिए भारतीय दल को रवाना करते समय भारत के केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने उम्मीद जताई थी कि भारत इस साल एशियाई खेलों में अवश्यमेव रिकॉर्ड तोड़ देगा। जब भारतीय खिलाड़ी 23 सितंबर से 08 अक्टूबर 2023 तक चीन के हांगझोउ शहर में आयोजित एशियाई खेलों के 19वें संस्करण में भाग लेने के लिए प्रस्थान कर रहे थे तो लक्ष्य रखा गया था 'अबकी बार, सौ के पार', यानी देश के लिए 100 पदक जीतने की चुनौती। भारतीय खिलाड़ियों ने इस चुनौती को स्वीकार किया और अपना लक्ष्य शानदार ढंग से हासिल करते हुए देश को पदक तालिका में चौथा स्थान दिलाने में महती भूमिका निभाई। भारत, चीन (383), जापान (188) और कोरिया गणराज्य (190) के बाद एशियाई खेलों के एक ही संस्करण में 100 या अधिक पदक जीतने वाला एकमात्र चौथा देश बना। भारत ने अपने एशियाई खेल 2023 अभियान को 107 पदकों की रिकॉर्ड संख्या के साथ समाप्त किया जिसमें 28 स्वर्ण, 38 रजत और 41 कांस्य पदक शामिल थे।

एशियाई खेलों के समापन के कुछ ही दिन बाद 22 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2023 के दौरान चीन के हांगझोउ शहर में ही एशियाई पैरा खेलों का अयोजन किया गया। भारत ने इन खेलों में 111 पदकों (29 स्वर्ण पदक, 31 रजत और 51 कांस्य) के अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ प्रतियोगिता का समापन करते हुए इतिहास रच दिया। पदक तालिका में भारत चीन, ईरान, जापान और कोरिया के बाद पाँचवें स्थान पर रहा, जो अपने आप में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह 2018 में उनकी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि से अधिक है, जिसमें 15 स्वर्ण, 24 रजत और 33 कांस्य शामिल थे। गौरतलब है कि पहला पैरा एशियाई खेल 2010 में चीन के ही ग्वांगझू में आयोजित किया गया था और उसमें भारत को सिर्फ एक स्वर्ण सहित चौदह पदक से संतोष करना पड़ा था। तब भारत पदक तालिका में पंद्रहवें स्थान पर रहा था। उसके बाद 2014 और 2018 संस्करण में भारत क्रमशः 15वें और नौवें स्थान पर रहा था, मगर इस बार पांचवें स्थान पर आना यह बताता है कि भारतीय खिलाड़ी अब किसी प्रतियोगिता में सिर्फ उपस्थिति दर्ज कराने के लिए नहीं, बल्कि सक्षम और मजबूत माने जाने वाले देशों के मुकाबले में खड़ा होकर मैदान जीतने के लिए जाते हैं।

flusek%

मार्च 2023 में आयोजित 95वें अकादमी पुरस्कार समारोह में भारत ने दो ऑस्कर पुरस्कार जीते। पहला, तेलुगु भाषा की हिट फिल्म 'आरआरआर' का गाना 'नाटू नाटू' (एक तेलुगु शब्द जिसका अर्थ कच्चा या देहाती है) ऑस्कर जीतने वाला पहला भारतीय फिल्मी गाना बना। इस गाने ने लेडी गागा और रिहाना जैसे दिग्गजों को पछाड़ते हुए सर्वश्रेष्ठ मूल गीत का पुरस्कार जीता। इसकी आकर्षक लय और कोरियोग्राफी ने दुनिया भर के दर्शकों को अपनी धुन पर थिरकने पर मजबूर कर दिया। इस गाने ने जनवरी 2023 में ही इतिहास रच दिया था जब इसने सर्वश्रेष्ठ मूल गीत के लिए गोल्डन ग्लोब जीता (भारत के लिए पहली बार) था। उसी महीने, इसने सर्वश्रेष्ठ गीत के लिए क्रिटिक्स च्वाइस पुरस्कार भी जीता था। ऑस्कर स्वीकार करते समय संगीतकार एमएम कीरावनी ने कहा कि यह गाना 'हर भारतीय का गौरव' है।

95वें अकादमी पुरस्कार समारोह में भारत ने 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' के लिए दूसरा ऑस्कर जीता, जिसने सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र लघु फिल्म श्रेणी में पुरस्कार जीता। वृत्तचित्र, जो एक जोड़े की कहानी बताता है जो अपने झुंड से अलग होने के बाद एक घायल हाथी के बच्चे की देखभाल करता है, इस श्रेणी में जीतने वाला यह पहला भारतीय उत्पादन है। दक्षिण भारत की सुरम्य नीलगिरि पहाड़ियों में फिल्माई गई 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' उस मधुर बंधन की पड़ताल करती है जो मनुष्य और जानवरों के बीच विकसित होता है क्योंकि वे सह–अस्तित्व में रहना शुरू करते हैं।

volajpuk%

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 दिसम्बर 2023 को गुजरात के सूरत में दुनिया के सबसे बड़े कार्यालय परिसर को देश को समर्पित किया, जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह भवन 659,611 वर्ग मीटर में फैला है इसे सूरत डायमंड बोर्स ने तैयार किया है। यह हीरा शोध एवं व्यापार (ड्रीम) सिटी का हिस्सा है और यह सूरत शहर के पास खजोद गांव में स्थित है। अभी तक यह उपलब्धि अमेरिका के रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन के नाम थी। अगले ही दिन, 18 दिसम्बर 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया के सबसे बड़े मेडिटेशन सेंटर का लोकार्पण किया। इसका निर्माण वाराणसी के चौबेपुर इलाके के उमरहा में किया गया है। नवनिर्मित यह स्वर्वेद महामंदिर तीन लाख वर्ग फीट में फैला है। मेडिटेशन सेंटर के इस महामंदिर के शीर्ष पर नौ अष्टकमल स्थापित हैं, जोकि इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। इसके अलावा, इसके चारों ओर 101 फव्वारे लगे हैं। सात फ्लोर के इस मंदिर में एक साथ 20 हजार लोग बैठकर साधना और योग कर सकेंगे।

इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 मई 2023 को आत्मनिर्भर भारत की भावना के प्रतीक लोकतंत्र के मंदिर नए संसद भवन का उद्घाटन किया। नए संसद भवन की आधारशिला पीएम मोदी ने 10 दिसंबर 2020 को रखी थी। इसमें लोकसभा कक्ष में पहले के 550 की जगह 888 सदस्य और राज्यसभा में 250 की जगह 384 सदस्य बैठ सकेंगे। संसद के संयुक्त सत्र के लिए लोकसभा हॉल में 1,272 सदस्य बैठ सकते हैं। टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड के द्वारा निर्मित यह भवन अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है, जो सदस्यों को अपने कार्यों को बेहतर तरीके से करने में मदद करेगा। त्रिभुजाकार वाले चार मंजिला संसद भवन का निर्मित क्षेत्र 64,500 वर्ग मीटर है। भवन के तीन मुख्य द्वार हैं– ज्ञान द्वार, शक्ति द्वार और कर्म द्वार। इसमें वीआईपी, सांसदों और आगंतुकों के लिए अलग–अलग प्रवेश द्वार हैं। भारत की विरासत पर गर्व करते हुए लोकसभा अध्यक्ष की कुर्सी के पास 'सेंगोल' लगाया गया है। जानकारों की मानें तो अगस्त 1947 में सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक के तौर पर ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को सौंपा गया रस्मी राजदंड (सेंगोल) इलाहाबाद संग्रहालय की नेहरू दीर्घा में रखा गया था। इसे सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है। चोल साम्राज्य में जब नए राजा का राज्याभिषेक होता था, तो सत्ता हस्तांतरण के समय राजदंड यानी सेंगोल दिया जाता था। इसके साथ ही, सेंगोल का उल्लेख महाभारत के शांतिपर्व में भी मिलता है।

ifjogu%

13 जनवरी 2023 को दुनिया के सबसे लंबे नदी क्रूज – एमवी गंगा विलास को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरी झंडी दिखाई थी। एमवी गंगा विलास क्रूज यात्रा कार्यक्रम में बिहार में पटना, झारखंड में साहिबगंज, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, बांग्लादेश में ढाका और असम में गुवाहाटी जैसे प्रमुख शहरों के लिए विश्व धरोहर स्थल, राष्ट्रीय उद्यान और नदी घाट शामिल हैं। लगभग 3,200 किमी के इस 51–दिवसीय यात्रा कार्यक्रम के दौरान पचास से अधिक गंतव्यों का दौरा किया जा सकेगा।

0;kikj ,oa vFkZ0;oLFkk%

वर्ष 2023 में टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयर इंडिया ने फ्रांस की एयरबस और अमेरिकी विमान निर्माता बोइंग से 470 यात्री विमान खरीदने का सौदा किया जो दुनिया की सबसे बड़ी कमर्शियल एयरक्राफ्ट डील थी। इस डील ने वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति को मजबूत कर दिया। सबसे महत्वपूर्ण, वर्ष 2023 में भारत ने दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया के बड़े देशों को पीछे छोड़ दिया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के अनुसार भारत की दूसरी तिमाही की वृद्धि दर दुनिया में सबसे अधिक रही और देश सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी गति बरकरार रखे हुए है। साथ ही, वर्ष 2023 में भारत डिजिटल भुगतान की लिस्ट में टॉप पर रहा।

उपर्युक्त के मद्देनजर यह कहा जा सकता है कि भारत के लिए अमृत काल की शुरुआत बहुत ही शानदार हुई है और यदि हम इसी प्रकार हर क्षेत्र में नित नई ऊंचाइयों को छूने का प्रयास गंभीरतापूर्वक करते रहें तो वर्ष 2047 तक भारत अवश्यमेव एक विकसित राष्ट्र होगा। जय हिन्द।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गांधी

जैसे ही आप अपनी पलकें झपकाते हो......

Mk- ,yhuk lkerjk;*

जब आप अपनी पलकें झपका कर शांत रहते हो,
मैं धीमे स्वर में तुम्हें बाबा पुकारती हूँ।
मेरा व्यथित मन स्मृति की उन गलियों में मुड़ जाता है,
जहाँ आप खड़े हो...मजबूती से....अपनी गर्वीली छवि में,
तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, मुस्कुराते, अपने प्रेरणात्मक शब्दों से मुझे सिखाते हुए,

आज भी सुनती हूँ वे शब्द,
जब आप अपनी पलकें झपका कर शांत रहते हो,
मैं धीमे स्वर में तुम्हें बाबा पुकारती हूँ।
फिर उत्सुक हूँ, तुम्हारा वह स्वर सुनने को,
तरसते हैं कान तुम्हारे वे ज्ञानवर्धक शब्द सुनने को,
जीवन अब पहले जैसा नहीं है, यह यात्रा उतार–चढ़ाव भरी हो गई है,
जब से तुम ने मौन धारण किया है......जब से तुम ने मौन धारण किया है................

अब कोई ध्वनि आकर्षित नहीं करती मुझे क्योंकि
मेरा नाम अब आप पुकारते नहीं.........उत्सुक हूँ, तुम्हारा वह स्वर सुनने को
चूँकि मेरा एक हिस्सा तुम्हारे साथ रहता है, जो मुझे सशक्त रूप से याद दिलाता है,
मानो तुम जागोगे.......बोलोगे.......मुस्कुराओगे, अपने बच्चे को पहचानोगे।
मेरे कानों का विश्वास........जैसे तुम मुझे बुलाओगी, बेटी!

हाँ! तुम बोलोगे, तुम जरूर जागोगे। हम साथ गाएँगे, बातें करेंगे।
उस सर्वशक्तिमान में गहरा विश्वास मेरा........
मेरी अंतरात्मा की आवाज कहती है 'तुम जीत जाओगे'. हम जीतेंगे।
जीवन को घेरे खड़े इस अंधकार.......
पीड़ा से बाहर आने के निरंतर प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाएंगे......
हमारा जीवन फिर से आपकी उज्ज्वल मुस्कान से रोशन हो जाएगा।
प्रसन्नता, हँसी और आपकी प्रचुर ऊर्जा से परिपूर्ण होगा।

जैसे ही आप एक वीर योद्धा के रूप में उभरेंगे,
इस असंबंध मन और शरीर के बीच चलते युद्ध में.........
आप ही हैं, जो मन के इस धागे को शरीर से जोड़ देंगे,
आप इस युद्ध में विजयी होंगे......हम विजयी होंगे....
फिर से कानों में गूँजेगी......तुम्हारी मधुर आवाज.....
मेरे जीवन में आनंद और उल्लास भरती।
मैं अपना जीवन फिर से जी सकूँगी ! हाँ, मैं अपना जीवन फिर से जीती हूँ !

---

* फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा
अनुवाद में सहयोग – श्रीमती सीमा शर्मा

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा हिंदी पखवाड़ा - 2023 का आयोजन

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा 14 – 29 सितंबर 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़ा – 2023 का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया। हिंदी पखवाड़ा – 2023 के संबंध में 12 सितंबर 2023 को परिपत्र जारी किया गया एवं उसके माध्यम से सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने का आह्वान किया गया।

हिंदी पखवाड़ा – 2023 के दौरान कुल सात प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं तथा इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित कुल 30 लोगों ने हिस्सा लिया और इनमें से 19 सदस्य कोई न कोई पुरस्कार हासिल करने में सफल रहे। निबंध एवं पत्र–लेखन प्रतियोगिता में श्री राजेश कुमार कर्ण ने प्रथम, सुश्री विभांशी राजपूत ने द्वितीय एवं श्री मनवीर सिंह भंडारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सामान्य टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में श्री नरेश कुमार ने प्रथम, श्री राजेश कुमार कर्ण ने द्वितीय एवं श्री दिगम्बर सिंह बिष्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता में श्री कृष्ण कुमार एवं श्री दिलीप सासमल ने प्रथम, श्री विश्वनाथ ने द्वितीय एवं श्री सतीश कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सस्वर काव्य पाठ/गीत/गजल प्रतियोगिता में श्री सतीश कुमार ने प्रथम, श्रीमती निधि अग्रवाल ने द्वितीय एवं श्री प्रकाश मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में श्री नरेश कुमार ने प्रथम, श्री मनवीर भंडारी ने द्वितीय एवं श्री नितिन जायसवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हिंदी टंकण एवं वर्ग पहेली प्रतियोगिता में श्री दिगम्बर सिंह बिष्ट ने प्रथम, श्रीमती सुधा वोहरा ने द्वितीय एवं श्री अनुज रावत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। त्वरित भाषण प्रतियोगिता में श्री हर्ष दीप ने प्रथम, श्री प्रकाश मिश्रा ने द्वितीय एवं श्रीमती राजेश्वरी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कारों का भी प्रावधान किया गया था।

अपरिहार्य कारणों से हिंदी पखवाड़ा – 2023 के पुरस्कार वितरण समारोह को 29 सितम्बर 2023 के बजाय 20 अक्तूबर 2023 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के महानिदेशक के साथ मंचासीन अतिथियों के द्वारा संस्थान की राजभाषा पत्रिका "श्रम संगम" के 17वें अंक का लोकार्पण भी किया गया। संस्थान के महानिदेशक डॉ. अरविंद के द्वारा सभी विजयी प्रतिभागियों के साथ–साथ केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वर्ष 2023 में आयोजित 10वीं की परीक्षा में हिंदी में उत्कृष्ट अंक (95 प्रतिशत) प्राप्त करने पर हिंदी प्रतिभा पुरस्कार योजना के तहत कु. अश्वथा महले, सुपुत्री डॉ. शशि बाला, सीनियर फेलो, को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर एक कविता पाठ का भी आयोजन किया गया, जिसमें अतिथि कवियों श्रीमती नमिता 'नमन' एवं श्री नील रतन कुमार के साथ–साथ हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित सस्वर काव्य पाठ/गीत/गजल प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों के द्वारा देशभक्ति, स्वतंत्रता आंदोलन एवं सामाजिक सरोकारों पर अपनी–अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति दी गई।

अंत में, संस्थान के महानिदेशक डॉ. अरविंद ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देने के साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के संबंध में अपने विचार रखे तथा सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का आह्वान किया।

महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित सरकार

jkt'k dekj d.k*

खेल, समाज, राजनीति, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में महिलाओं ने खूब नाम कमाए हैं। उनकी उपलब्धियां प्रशंसनीय हैं। फिर भी, यौन–उत्पीड़न व भेदभाव के डर से ऊपर उठने और राष्ट्र की प्रगति में पुरुषों के समान भागीदारी में अपना उचित मुकाम पाने के लिए उनको अब भी कई पहाड़ों पर चढ़ना होगा। यह उस देश में महिला होने का विरोधाभास है जहां कहा जाता है–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः''

अर्थात् जहां पर स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। जहां पर ऐसा नहीं होता है वहां पर सभी कार्य निष्फल होते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी सम्मान की संपूर्णता मात्र इस एक श्लोक से ही स्पष्ट हो जाती है।

महिला शक्ति के बिना किसी राष्ट्र की समृद्धि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में केवल नारी उत्थान नहीं, नारी के नेतृत्व में विकास की दृष्टि राष्ट्र की नीति बनी है। इसी नीति ने नारी शक्ति को सशक्त बनाया है और आज हर क्षेत्र में वह अभिमान बनकर उभर रही हैं। सेना हो या स्टार्टअप, ओलंपिक हो या रिसर्च, शिक्षा–विज्ञान हो या राजनीति, उद्यम, खेल सहित हर क्षेत्र में महिला शक्ति आज आसमान छू रही है। नए भारत में आज देश की बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही हैं।

अब अमृत काल में नारी शक्ति का अभ्युदय सुनिश्चित हो, इसके लिए सशक्तिकरण की इस यात्रा को तेज गति से आगे बढ़ाना सभी का दायित्व है। केंद्र सरकार की सोच है कि नारी शक्ति के प्रति सम्मान के साथ नए दृष्टिकोण का उद्देश्य केवल एक प्रतीक न हो, बल्कि वास्तविक हो, हर स्तर पर, हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व सुनिश्चित हो। तीन दशकों से लटका महिला आरक्षण बिल वर्तमान केंद्र सरकार के प्रयासों से यथार्थ बन गया। महिला के नेतृत्व में विकास को संकल्पबद्ध वर्तमान केंद्र सरकार ने संसद का विशेष सत्र बुलाकर नए संसद भवन में न केवल प्रवेश किया, बल्कि महिलाओं को विधायिका में 33% आरक्षण के दशकों से लंबित सपने को साकार करके दिखाया। केवल नारी उत्थान नहीं, नारी के नेतृत्व में विकास की दृष्टि पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्र की नीति बनी है। इसी नीति को अब वैश्विक एजेंडा बनाने के साथ ही भारत के नए संसद भवन में प्रवेश, भारत की नारी शक्ति के लिए विशेष अवसर बना।

भारतीय लोकतंत्र में निचले स्तर पर बदलाव पहले ही हो चुका है, ग्राम पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ चुकी है, लेकिन विधानसभा और लोकसभा के स्तर पर पुरुषों की पकड़ बरकरार है। महिला आरक्षण से अधिक महिला जन प्रतिनिधि चुनी जाएंगी, जिससे संसदीय बहस की गुणवत्ता सुधरेगी।

''बसुंधरा–तले भारत–रमणी नुहे हीन नुहे दीन
अमर कीरति कोटि युगे के भें जगतुं नोहिब लीन।''

अर्थात, भारत की नारी पृथ्वी पर किसी की तुलना में न तो हीन है, न दीन है। संपूर्ण जगत में उसकी अमर कीर्ति युगों–युगों तक कभी लुप्त नहीं होगी यानी सदैव बनी रहेगी। संसद के दोनों सदनों द्वारा नारी शक्ति वंदन अधिनियम को रिकॉर्ड मतों से पारित किया जा चुका है। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद 29 सितंबर, 2023 को कानून बन चुका है। लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं को 33% आरक्षण अब सिद्धि बन गई है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम कोई सामान्य कानून नहीं है। यह नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है। यह अमृतकाल में 'सबका प्रयास' से विकसित भारत के निर्माण की तरफ बहुत बड़ा और बहुत मजबूत कदम है। महिलाओं का जीवन स्तर सुधारने के लिए, क्वालिटी ऑफ लाइफ बेहतर करने के लिए, नारी के नेतृत्व में विकास का नया युग देश में लाने की जो गारंटी है, यह प्रधानमंत्री मोदी जी के संकल्प का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार ''संसद में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने के साथ, हम भारत की महिलाओं के लिए मजबूत प्रतिनिधित्व और सशक्तिकरण के युग की शुरुआत करते हैं। यह महज एक कानून नहीं है, यह उन अनगिनत महिलाओं का सम्मान है जिन्होंने देश को आगे बढ़ाया है। भारत को सुदृढ़ और समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है।''

अमृत काल की ओर बढ़ते भारत में नारी शक्ति, नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व का प्रतिबिंब बनी है क्योंकि वेदों और भारतीय परंपरा ने भी यही आह्वान किया है कि नारियां सक्षम हों, समर्थ हों और राष्ट्र को दिशा दें। बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर ने कहा था– 'महिलाएं अगर किसी देश में प्रगति कर रही हैं तो मैं समझता हूं कि वह समाज, वह राष्ट्र प्रगति कर रहा है।' इस सोच को साकार करते हुए केंद्र सरकार ने संविधान संशोधन के जरिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, लोकसभा, विधानसभाओं में 33% आरक्षण का प्रावधान किया है।

एससी–एसटी के लिए सीटों में आरक्षण पहले से ही है, उसमें भी 33% महिला आरक्षण सुनिश्चित होगा। इसकी

* आशुलिपिक ग्रेड–I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

अवधि 15 साल होगी और बाद में इसे संसद जरूरत समझे तो बढ़ा सकती है। लोकसभा की 543 सीटों में से महिला सांसदों की संख्या वर्तमान में 82 है, वह बढ़कर 181 हो जाएगी। इंटर पार्लियामेंट्री यूनियन के आंकड़ों के मुताबिक विश्व भर की नेशनल लेजिस्लेटिव बॉडीज में महिलाओं का औसत प्रतिनिधित्व 24% है। जबकि अभी भारत की लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 15.1% है, जो हाल ही के वर्षों में बढ़ा है। अब नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने से महिलाओं की 33% भागीदारी सुनिश्चित होगी। अभी तक जो महिलाएं संसद पहुंचती रही हैं, उनमें से ज्यादातर अभिजात वर्ग से आती हैं, पर महिला आरक्षण लागू होने से अब पिछड़े एवं वंचित वर्गों की महिलाएं भी ज्यादा संख्या में इनमें आएंगी। बेशक, यह भारतीय राजनीतिक इतिहास में महिला–पुरुष गैर–बराबरी या असमानता को पाटने वाला कदम साबित होगा।

यह 140 करोड़ की आबादी में 50% भागीदारी रखने वाली मातृ शक्ति का सच्चे अर्थ में सम्मान है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नारी के नेतृत्व में विकास की बात समग्र विश्व के सामने रखी। जी–20 की अध्यक्षता करते हुए भारत ने दुनिया को यह अहसास कराया कि मातृशक्ति, बेटियां न केवल नीतियों में सहभागिता कर सकती हैं, बल्कि नीति–निर्धारण में अपने पद को भी सुरक्षित कर पाने में सक्षम हैं।

इतना ही नहीं, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 2014 के बाद से तकनीकी शिक्षा में महिलाओं की संख्या दोगुनी हो गई है। भारत में लगभग 43% एसटीईएम यानी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित स्नातक महिलाएं हैं। भारत में लगभग एक–चौथाई अंतरिक्ष वैज्ञानिक महिलाएं हैं। चंद्रयान, गगनयान और मिशन मंगल जैसे प्रमुख कार्यक्रमों की सफलता के पीछे महिला वैज्ञानिकों की प्रतिभा और कड़ी मेहनत है। आज भारत में उच्च शिक्षा में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक संख्या में प्रवेश ले रही हैं। नागरिक उड्डयन क्षेत्र में महिला पायलटों के मामले में उच्चतम प्रतिशत वाले देशों में शामिल हैं। साथ ही भारतीय वायुसेना में महिला पायलट अब लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं। सभी सशस्त्र बलों में महिला अधिकारियों को ऑपरेशनल भूमिकाओं और लड़ाकू मोर्चों पर तैनात किया जा रहा है।

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों के मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण के अनुसार 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। महिलाओं से जुड़े मुद्दों और उनके अधिकारों की बात पर हमारी सरकार राजनीति नहीं करती बल्कि उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ती है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए अटूट प्रतिबद्धता का विषय है। इसीलिए हमने इस दिशा में कई निर्णायक कदम उठाए हैं। चाहे वह धारा 370 का उन्मूलन हो या ट्रिपल तलाक का खात्मा या अब महिला आरक्षण विधेयक को संसद के दोनों सदनों से पास कराना।

पिछले 9 वर्षों में, प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत 'महिला–नेतृत्व आधारित विकास मॉडल' की ओर अग्रसर हुआ है। वहीं, मातृ सशक्तिकरण के लिए उठाए गए इनिशटिव से देश के सामाजिक ताने–बाने में क्रांतिकारी बदलाव आ रहे हैं। उज्ज्वला योजना, स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, मुद्रा योजना, जल जीवन मिशन, पीएम आवास योजना, मातृत्व अवकाश में वृद्धि और सशस्त्र बलों में महिलाओं को स्थायी कमिशन जैसी पहल से महिलाओं को सशक्त बनाने के मोदी सरकार के अथक प्रयास धरातल पर दिखाई दे रहे हैं। स्टैंड–अप इंडिया के तहत लगभग 80% लाभार्थी महिलाएं हैं और पीएम मुद्रा योजना के तहत भी लगभग 70% कर्ज महिलाओं के लिए मंजूर किए गए हैं।

मोदी सरकार महिलाओं को सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित कराने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा यह समर्पण उज्ज्वला योजना के तहत एलपीजी सिलिंडर वितरित करने में स्पष्ट रूप से नजर आता है, जिससे लाखों महिलाओं को श्वास संबंधी बीमारियों से बचाया जा रहा है। स्वच्छ भारत अभियान की सफलता के साथ, अनगिनत महिलाओं के घरों में शौचालय बनाए गए, जिससे उनकी सुरक्षा और गरिमा की रक्षा को लेकर चिंताएं खत्म हो गई हैं। पीएम आवास योजना के तहत बने घरों का महिलाओं को संयुक्त स्वामित्व मिला है। जल जीवन मिशन से घरों में नल से जल पहुंच रहा है, जिससे महिलाओं को काफी सहूलियत हुई है।

मोदी सरकार के पिछले 9 वर्षों के कार्यकाल में महिलाओं की प्रगति, महिला पुलिसकर्मियों के बढ़ते प्रतिनिधित्व, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियां एवं विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित विषयों में महिलाओं के बढ़ते नामांकन से स्पष्ट है। 2014 के बाद से तकनीकी शिक्षा, विशेषकर औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी लगभग दोगुनी हो गई है। भारत में लगभग 43% विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित विषयों के स्नातक और लगभग एक चौथाई अंतरिक्ष महिलाएं हैं, जिनका समर्पण और मेहनत चंद्रयान, गगनयान और मंगल मिशन जैसे देश के प्रमुख अंतरिक्ष मिशनों में महत्वपूर्ण रहा है। आज भारत में उच्च शिक्षा में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक संख्या में प्रवेश ले रही हैं। आज भारत में सबसे अधिक संख्या में महिला पायलट हैं। साथ ही भारतीय वायुसेना में महिला पायलट अब लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं। सभी सशस्त्र बलों में महिला अधिकारियों को ऑपरेशनल भूमिकाओं और लड़ाकू मोर्चों पर तैनात किया जा रहा है। मोदी सरकार ने केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में महिलाओं के लिए पद आरक्षित किए और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और सैनिक स्कूलों में लड़कियों के प्रवेश की भी अनुमति दी।

ग्रामीण स्थानीय निकायों में 14 लाख यानी लगभग 46% निर्वाचित प्रतिनिधि महिलाएं हैं। हमारी सरकार ने हाल ही में नए भारत के प्रतीक नए संसद भवन के उद्घाटन के लिए एक विशेष सत्र बुलाया। हम सब उस ऐतहासिक और भविष्य की बुनियाद

रखने वाले पल के साक्षी बने, जब नए संसद भवन में आयोजित पहले सत्र की शुरुआत ही भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण विधेयकों में से एक 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' से हुई। यह शुभारंभ, आने वाली को शताब्दी के लिए राष्ट्र सेवा हेतु बनाई गई हमारी मजबूत बुनियाद के अनुरूप है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम ऐतिहासिक कानून है, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस परिवर्तन के केंद्र में हमारी नारी शक्ति है। यह परिवर्तनकारी यात्रा सामाजिक धारणाओं में एक आदर्श बदलाव का भी प्रतीक है– जहां महिलाएं अब केवल लाभार्थी नहीं हैं, बल्कि सक्रिय योगदानकर्ता और देश की नियति को आकार देने वाली हैं। महिला आरक्षण का यह रास्ता चुनौतीपूर्ण रहा है। लड़ाई लंबी चली, लेकिन आखिर में 'नारी शक्ति' विजयी हुई। सफलता के इस क्षण में, पंचायती राज व्यवस्था में 33% आरक्षण शुरू करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव का योगदान भी महत्वपूर्ण है। कई राज्यों ने तो जमीनी स्तर पर आरक्षण को 50% तक बढ़ाया है। महिलाओं के नेतृत्व आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करना हमारी राजनीतिक रणनीति नहीं बल्कि हमारे वैचारिक संस्कार हैं, जिसमें निर्णायक रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण की नीतियां शुरू से ही निहित रही हैं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने इस सिद्धांत को आत्मसात किया है कि किसी राष्ट्र का विकास, महिलाओं के विकास से अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मातृ सशक्तिकरण का ज्वलंत उदाहरण हैं। हमारी चुनी हुई महिला प्रतिनिधि निस्संदेह ही संसदीय बहसों की गुणवत्ता बढ़ाएंगी, कानून और नीति–निर्माण को प्रभावित करेंगी और सभी भारतीयों की बेहतरी के लिए शासन में सकारात्मक योगदान देंगी।

महिलाओं को सशक्त बनाने का मतलब राष्ट्र को सशक्त बनाना है। आज जब हम इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं, तो हमें यह सोचना चाहिए कि यह महिला आरक्षण के संबंध में हासिल किए गए मील के पत्थर का केवल जश्न मनाने के बारे में नहीं है, बल्कि आगे आने वाली असीमित संभावनाओं की राह तैयार करने के बारे में भी है। भारत वैश्विक मंच पर एक आदर्श उदाहरण स्थापित कर रहा है कि प्रतिबद्धता, दृष्टि और कार्य योजना के साथ लैंगिक बाधाओं को दूर किया जा सकता है, जिससे अधिक समावेशी, समृद्ध और संतुलित भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की सोच है कि महिला सशक्तीकरण अब केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। इसका परिणाम है कि सेना हो या स्टार्टअप, ओलंपिक–पैरालिंपिक खेल हों या शोध, न्यू इंडिया में आज देश की बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही है। आज भारत, मां, बहन और बेटियों के सामने आने वाली हर अड़चन को दूर कर रहा है। इसी सोच के साथ बीते 9 वर्षों मे केंद्र सरकार द्वारा जितनी भी कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गई हैं, उनके केंद्र में महिलाओं का जीवन आसान बनाना, महिलाओं को रोजगार–स्वरोजगार के नए अवसर देना और महिला सशक्तीकरण रहा है। गर्भावस्था के दौरान शिशु को पौष्टिक खाना मिले इसके लिए मातृ वंदना योजना चलाई, महिलाओं के बैंक खाते में पैसे भेजने शुरू किए। माता मृत्यु को रोकने के लिए, नवजात बच्चों की रक्षा के लिए, शिशु का जन्म अस्पताल में ही कराने का बहुत बड़ा अभियान चलाया गया। बेटी को कोख में ही न समाप्त कर दिया जाए, इसके लिए बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ जैसे जनआंदोलन भी शुरू किए। आज वर्षों बाद देश में जनसंख्या के आधार पर महिला–पुरुष के अनुपात में सुधार आया है।

जनधन योजना के विशेष अभियान के तहत 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खुले हैं और इनमें से 70% प्रतिशत खाते महिलाओं के नाम से खोले गए हैं। आज अधिकांश योजनाओं से लाभ की धनराशि सीधे महिलाओं के बैंक खाते में जा रही है। शौचालय न होने की वजह से बेटियां स्कूल न छोड़े, इसके लिए करोड़ों शौचालय बनाए। उज्ज्वला योजना के तहत लगभग 10 करोड़ परिवारों को मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन दिए गए और उन सभी परिवारों की महिलाओं को धुआं मुक्त जीवन मिला। पानी के लिए महिलाओं को परेशान नहीं होना पड़े, इसलिए नल–जल जैसी भागीरथी योजना से महज 4 साल में पानी का कनेक्शन 3 करोड़ से बढ़कर 13 करोड़ घरों में पहुंच चुका है। महिलाओं को अंधेरे में न रहना पड़े, इसके लिए सौभाग्य योजना से मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया। महिलाएं पैसे की कमी की वजह से अपनी बीमारी छिपाए नहीं, इसलिए 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा आयुश्मान भारत योजना के तहत दी जा रही है। महिलाओं का घर की संपत्ति पर भी अधिकार हो, इसके लिए पीएम आवास के घरों में उन्हें संयुक्त भागीदारी दी। महिलाएं स्वरोजगार कर सकें, इसके लिए बिना गारंटी मांगे लोन देने वाली मुद्रा योजना शुरू की गई। भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाला विकास हमारे लिए एक प्रमुख प्राथमिकता रही है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत लगभग 70% ऋण महिलाओं को स्वीकृत किए गए हैं। इसी तरह, स्टैंड–अप इंडिया के तहत 80% लाभार्थी महिलाएं हैं, जो ग्रीन फील्ड परियोजनाओं के लिए बैंक ऋण प्राप्त कर रही हैं। मातृत्व अवकाश में वृद्धि कर अब 26 सप्ताह का मातृत्व अवकाश किया गया। बेटियों के लिए सैनिक स्कूल के द्वार खोल दिए। सेना में अफसर बनने के लिए तीनों सेनाओं में नए रास्ते बना दिए गए। 9 करोड़ से अधिक महिलाओं को स्व–सहायता समूह से जोड़ आजीविका के नए अवसर दिए गए। प्रधानमंत्री आवास योजना में मालिकाना हक पाने वाली 80% लाभार्थी महिलाएं हैं।

देश के अंदर बालिकाओं के जीवन को सुरक्षित बनाने के लिए शुरू की गई सुकन्या समृद्धि योजना में 3 करोड़ 18 लाख खाते खोले जा चुके हैं। आज दुनिया भर के देशों में विमान उड़ाने वाली महिला पायलटों की संख्या 5% है, जबकि भारत में

यह संख्या 5% है जो पिछले 9 साल में बढ़ी है। सामाजिक स्तर पर भी तीन तलाक जैसी कुरीतियों जिन के कारण महिलाओं पर अत्याचार होते थे, कानून बनाकर उन्हें रोका है। करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को आज तीन तलाक की अमानवीय कुप्रथा से सुरक्षा मिली है। इस कानून के लागू होने से कुछ ही वर्षों में तीन तलाक के मामलों में 80% प्रतिशत की कमी आई है। समाज व्यवस्था में जो कमी है, उसे सुधारने के लिए ही केंद्र सरकार महिलाओं की प्रतिभागिता बढ़ाना चाहती है और इसलिए महिला आरक्षण का बिल लेकर आई। महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे प्रभावी तरीका महिला नेतृत्व वाला विकास दृष्टिकोण है।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री स्मृति इरानी ने ठीक ही लिखा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आज एक समावेशी राष्ट्र का निर्माण हो रहा है, जिसमें लैंगिक समानता को महत्व दिया जा रहा है। महिलाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रभावी नीतियां अपनाकर भारत की विकास गाथा में एक नया आयाम जोड़ा जा रहा है। पूर्व में लैंगिक समानता के मोर्चे पर निराशा की स्थिति थी, लेकिन आज उसकी जगह लोकतांत्रिक नीतियों और उनके सफल कार्यान्वयन ने ले ली है। जी–20 का नई दिल्ली घोषणापत्र आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक डिजिटल विभाजन को पाटने, लैंगिक–समावेशी जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देने और महिलाओं की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। यह वैश्विक लैंगिक समानता के लिए भारत के समर्पण का प्रमाण है। विश्व आर्थिक मंच पर भारत की प्रभावशाली उपस्थिति इसे लैंगिक सशक्तिकरण के एक मजबूत समर्थक के रूप में प्रतिबिंबित करती है।

महिलाओं को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने और विकास में समान रूप से सहभागी बनाने के उद्देश्य से ही राष्ट्रीय स्तर पर महिला सुरक्षा से जुड़े अनेकों प्रयास किए गए हैं। आज देश में महिलाओं के खिलाफ अपराध पर कड़े कानून हैं, बलात्कार जैसे जघन्य मामलों में फांसी का भी प्रावधान किया गया है। देशभर में बड़ी संख्या में फास्टट्रैक कोर्ट बनाए जा रहे हैं और कानूनों का सख्ती से अनुपालन कराने के लिए भी व्यवस्थाओं को सुधारा जा रहा है। थानों में महिला सहायता डेस्क की संख्या बढ़ाना हो, चौबीस घंटे उपलब्ध रहने वाली हेल्पलाइन हो, साइबर क्राइम से निपटने के लिए पोर्टल हो, ऐसे अनेक प्रयास महिलाओं की सुरक्षा के कवच बन रहे हैं। मौजूदा केंद्र सरकार महिलाओं के खिलाफ अपराध पर 'जीरो टॉलरेंस' की नीति से काम कर रही है। हिंसा पीड़ित महिलाओं को राहत देने के मकसद से सरकार ने हाल ही में मेडिकल टर्मिनेशन प्रेगनेंसी एक्ट को मंजूरी दी है जिसमें गर्भपात के लिए समय सीमा को 20 सप्ताह से बढ़ाकर 24 सप्ताह कर दिया गया है।

सिर्फ कानूनी संरक्षण ही नहीं, महिलाओं के आत्मसम्मान के लिए भी केंद्र सरकार ने अभियान चला रखा है। केंद्र सरकार की अधिकांश योजनाओं के जरिए परिवार की महिलाओं को ही केंद्र में रखकर दस्तावेज दिए जाते हैं। इतना ही नहीं, पहले जम्मू–कश्मीर में गैर कश्मीरी से विवाह करने पर महिलाओं और उसके बच्चों को पैतृक संपत्ति के हक से वंचित कर दिया जाता था। लेकिन अनुच्छेद–370 और 35ए को निरस्त किए जाने के बाद इस क्षेत्र की महिलाओं को उसका हक मिला है। प्रवासी भारतीयों द्वारा शादी करने और फिर छोड़ देने जैसे मामलों में भी कानून को सख्त बनाया गया है।

भारत की महिलाएं आज स्वतंत्र है, आर्थिक रूप से सशक्त है, दृढ़ संकल्प से लैस है, सुरक्षा का भाव है और सिर्फ सपने देख नहीं रहीं, बल्कि उसे साकार भी कर रही हैं तो उसकी बड़ी वजह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली दृढ़ निश्चयी सरकार के प्रयास हैं। जिसकी वजह से दशकों से चली आ रही लड़की या महिला को कमतर मानने की सोच में क्रांतिकारी बदलाव आया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार "आज जब महिलाएं हर सेक्टर में तेजी से आगे बढ़ रही हैं, नेतृत्व कर रही हैं, तो बहुत आवश्यक है कि नीति–निर्धारण में, पॉलिसी मेकिंग में हमारी माताएं, बहनें, हमारी नारी शक्ति ज्यादा से ज्यादा योगदान दें। योगदान ही नहीं, वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।"

आज परिवार से लेकर पंचायत तक, अर्थव्यवस्था से लेकर शिक्षा और उद्यम तक, नारी शक्ति हर क्षेत्र में अभूतपूर्व काम कर रही हैं। भारत को चांद तक पहुंचाने में महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका रही है। चंद्रयान–3 अभियान नारी शक्ति का जीवंत उदाहरण है, उससे कोई भी असहमत नहीं हो सकता, क्योंकि सारी दुनिया ने यह देखा कि इस अभियान को संचालित करने में बड़ी संख्या में महिला विज्ञानी और इंजीनियर शामिल थीं। यह पहली बार नहीं, जब इसरो के किसी अभियान में महिला विज्ञानियों और इंजीनियरों ने अपना महती योगदान दिया हो। सारी दुनिया में चर्चा और सराहना का पात्र बने मंगल अभियान को सफल बनाने में भी महिला विज्ञानियों का योगदान था।

मंगल अभियान की मिशन डायरेक्टर महिला थीं, जिन्हें 'रॉकेट वुमेन' के नाम से जाना जाता है। एसोशिएट डायरेक्टर सहित इस अभियान के कई महत्वपूर्ण पदों पर महिलाएं विराजमान थीं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत को विश्व पटल पर मजबूत बनाने वाले चंद्रयान–3 की सफलता में 50 से अधिक महिलाओं का शामिल होना यह बताता है कि आधी आबादी कौशल व योग्यता में पुरुषों से कतई कमतर नहीं है।

विज्ञान, तकनीक और शोध–अनुसंधान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी इस धारणा को खारिज करती है कि वे चुनौती भरे कामों को अंजाम देने में समर्थ नहीं। एक समय था, जब विज्ञान एवं तकनीक से जुड़े शिक्षा संस्थानों में लड़कियों की संख्या नगण्य सी हुआ करती थी, लेकिन हाल के वर्षों में उनकी संख्या में अच्छी–खासी वृद्धि हुई है। इससे यही पता चलता है कि भारत में तेजी के साथ नारी सशक्तिकरण हो रहा है। महिलाएं केवल विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में ही

अपनी काबिलियत का परिचय नहीं दे रही हैं अन्य अनेक क्षेत्रों में भी उनके कदम बढ़ रहे हैं। वे विज्ञानी, इंजीनियर के साथ पायलट आदि भी बन रही हैं। इसके अतिरिक्त वे खेल जगत में भी अपनी सफलता से प्रसिद्धि हासिल करने के साथ अन्य लड़कियों को प्रेरणा प्रदान करने का काम कर रही हैं। इसी तरह उद्योग–व्यापार के क्षेत्र में भी वे अपने को साबित कर रही हैं। अमृतकाल के दौरान 2047 तक भारत के विकसित राष्ट्र बनने के मार्ग में नारी शक्ति की एक विशेष भूमिका होगी। विभिन्न कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की हिस्सेदारी और बढ़े, इसके लिए अभी और प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि कोई भी देश सच्चे अर्थों में सामर्थ्यवान तब बनता है, जब वहां की महिलाओं की हर क्षेत्र में भागीदारी बढ़ती है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के अनुसार मोदी सरकार ने नौ वर्षों में न सिर्फ महिला सशक्तिकरण के लिए काम किया, बल्कि हमारी पौराणिक संस्कृति के अनुसार महिलाओं को सम्मान भी दिया है। महिला सशक्तिकरण हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत रही है। वैदिक युग में ऋषि–मुनियों ने महिला सशक्तिकरण और ज्ञान के विकास में अहम योगदान दिया। गार्गी–याज्ञवल्क्य शास्त्रार्थ, की आज तक मिसाल दी जाती है। उपनिषदों के बारे में विदुषी मैत्रेयी की समझ अभी भी विद्वानों का मार्गदर्शन करती है। यामी धर्म की अवधारणा की प्रारंभिक प्रस्तावक थीं। विज्ञान, अंतरिक्ष अन्वेषण और स्वास्थ्य सेवा में महिलाओं द्वारा की गई प्रगति ने वर्तमान युग में दुनिया को भारत की ओर प्रशंसा की दृष्टि से देखने पर मजबूर किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महिला सशक्तिकरण पर जी–20 सम्मेलन में मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के अपने संबोधन में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा निभाई गई परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि भारत में महिला सशक्तिकरण केवल एक विशेष क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वास्तव में वह हर क्षेत्र में महिला नेतृत्व की क्षमता को आगे ले जाना चाहते हैं। मोदी जी ने महिलाओं के सशक्तिकरण से लेकर उन्हें नेतृत्व देने की क्षमता के लिए जो काम करना शुरू किया, उस दिशा में अमृतकाल में महिलाओं को राजनीति में आरक्षण देना एक बड़ी उपलब्धि है। इस महिला आरक्षण के कारण भावी राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की बड़ी भूमिका नजर आ रही है। इस आरक्षण के लागू होने के बाद नारी शक्ति की भागीदारी के साथ समावेशी शासन के एक नए युग की शुरुआत होगी। महिला आरक्षण विधेयक की ऐतिहासिकता के साथ–साथ उसके संदर्भ को भी समझना होगा। पिछले नौ वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के मुखर समर्थक और सक्रिय प्रस्तावक रहे हैं। 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' जैसी पहल से लिंग अनुपात में सुधार हुआ और शैक्षणिक संस्थानों में लड़कियों का नामांकन बढ़ा। लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में भी मोदी सरकार द्वारा प्रदान की गई छात्रवृत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि' और 'प्रधानमंत्री जन धन खाता' जैसी योजनाओं ने 30 करोड़ महिलाओं की वित्तीय सुरक्षा एवं समावेशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुद्रा योजना से कोलैटरल–फ्री लोन ने 40 करोड़ महिलाओं को अपनी उद्यमशील क्षमता का लाभ उठाने के लिए सशक्त बनाया है। इस व्यवस्था ने न केवल महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक जरूरतों को पूरा किया, बल्कि उन्हें गरीबी से भी उबारा। जब कोई परिवार भोजन, आवास, दवाइयों और पेयजल जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है, तो उस परिवार की महिला को सबसे अधिक पीड़ा होती है। मोदी सरकार ने तीन करोड़ गरीबों को घर दिए, जिनमें से 75% महिलाओं को दिए गए। 80 करोड़ गरीबों को मिलने वाले खाद्यान्न से में भी सबसे बड़ी राहत महिलाओं को मिली। मोदी सरकार द्वारा 11 करोड़ जल आपूर्ति कनेक्शन और 50 करोड़ लाभार्थियों को स्वास्थ्य बीमा प्रदान करने से भी सबसे बड़ा लाभ महिलाओं को मिला। उज्ज्वला योजना के तहत जारी 9.6 करोड़ गैस कनेक्शन से गरीब महिलाओं को उस घरेलू प्रदूषण से छुटकारा मिला, जिसके कारण उन्हें कई बीमारियों का सामना करना पड़ता था। मोदी सरकार ने मातृत्व अवकाश की अधिकतम अवधि 26 सप्ताह तक बढ़ाकर कामकाजी महिलाओं को बड़ी राहत प्रदान की, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के समकक्ष है।

लैंगिक रूढ़िवादिता को खत्म करते हुए मोदी सरकार ने पहली बार भारतीय सेना में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन के योग्य बनाया। प्रधानमंत्री द्वारा महिला सशक्तिकरण के प्रयासों का ही फल है कि आज भारत के पास सबसे अधिक महिला फाइटर जेट पायलट हैं। यह भी देश के इतिहास में पहली बार है कि व्यावसायिक पायलटों की 15% सीटों पर अब महिलाओं का कब्जा है, जबकि वैश्विक औसत मात्र 5% है। देश की आधी आबादी के जीवन में व्यापक बदलाव लाने में पिछले नौ वर्षों में हासिल किए गए ये सभी मील के पत्थर 'जहां चाह, वहां राह' की इच्छाशक्ति का परिणाम हैं। महिलाओं के जीवन से जुड़े ज्वलंत विषय इसके पहले शायद ही कभी देश के राजनीतिक विमर्श के केंद्र में रहे हों।

महिला आरक्षण के लंबित विधेयक को कानून में बदलने की मोदी सरकार की पहल उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति और प्रतिबद्धता का एक जीवंत उदाहरण है। विश्व स्तर पर सरकार में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने प्रजातांत्रिक संस्थाओं को मजबूती दी है, भ्रष्टाचार कम किया है और सरकारों को और अधिक संवेदनशील बनाया है। देश को समान प्रतिनिधित्व के माध्यम से लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता देनी चाहिए। दोनों सदनों से पारित 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' के माध्यम से मोदी जी ने अमृतकाल में एक अधिक समावेशी संसदीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी है, जहां महिलाओं की बात अधिक सुनी जाएगी और उनके मुद्दों पर अधिक जोरदार ढंग से चर्चा की जाएगी।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

हिन्दी के प्रथम डी. लिटः डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

l|èkk okgjk*

हिन्दी साहित्य के विकास को आम तौर पर चार ऐतिहासिक भागों में वर्गीकृत किया गया है – आदिकाल (वीरगाथा काल), भक्ति काल (पूर्व मध्य काल), रीति काल (उत्तर मध्य काल) और आधुनिक काल (गद्य काल)। आदि काल का साहित्य मुख्यतः चार रूपों में मिलता है – सिद्ध साहित्य एवं नाथ साहित्य, जैन साहित्य, चारणी साहित्य तथा प्रकीर्णक साहित्य। इसी प्रकार, भक्ति काल को चार काव्य धाराओं युक्त दो भागों में वर्गीकृत किया जाता हैः सगुण भक्ति – रामभक्ति काव्यधारा एवं कृष्णभक्ति काव्यधारा, निर्गुण भक्ति – संत काव्यधारा एवं सूफी काव्यधारा। प्राचीन भारतीय दर्शन के अनुसार मुक्ति अथवा जीवन–मरण के बंधन से छुटकारा प्राप्त करना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। मुक्ति प्राप्त करने के तीन मार्ग हैं – ज्ञान, कर्म और भक्ति। दिल्ली के सुल्तानों के काल में कई हिन्दू संतों और सुधारकों ने एक आंदोलन का सूत्रपात किया। यह आंदोलन चूँकि भक्ति पर जोर देता था, इसलिए इसे भक्ति आंदोलन कहा जाने लगा। यह आंदोलन भक्ति काल में और समृद्ध हुआ किंतु समय के साथ गुलामी से त्रस्त भारतीय समाज में कहीं न कहीं यह भ्रांति भी फैली कि भक्ति आन्दोलन हिन्दू समाज की निराशा का परिणाम था।

इस भ्रांति को दूर करने के साथ ही भक्ति आंदोलन को हिन्दू समाज की भक्ति धारा के विकास के रूप में स्थापित करने और अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी को उसका रसूख दिलाने का काम किया हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने। जब देश पराधीन था, साम्राज्यवादी ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मों से देशवासी त्रस्त थे और साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन काल में हमारे देश में अंग्रेजी और अंग्रेजीयत तेजी से अंकुरित हो रही थी। समाज पर भी इसका गहरा असर दिखने लगा था। ऐसी अनेक विपरीत परिस्थितियों में मां भारती के अमर सपूतों/ साहित्यकारों ने अपने कृत्यों / कृतियों के माध्यम से पराधीन भारतीयों के मध्य 'स्व' की भावना का संचार किया। मां भारती के इन अमर सपूतों में दार्शनिक व्यक्तित्व के धनी प्रसिद्ध साहित्यकार, निबंधकार, समीक्षक एवं शोधकर्ता डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने निर्गुण, नाथ, संत इत्यादि साहित्य पर निरंतर कार्य किया और अपने गूढ़ विचारों के साथ इन पर प्रकाश डाला। उन्होंने मौलिक सृजन कर हिन्दी साहित्य में अनुसंधान का जो नया मार्ग प्रशस्त किया वह साहित्य के अनेक शोधार्थियों के लिए आधार बना।

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल का जन्म 13 दिसम्बर 1901 ई. को लैंसडाउन (जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, तत्कालीन उत्तर प्रदेश) के निकट कौड़िया पट्टी के पाली ग्राम में एक कर्मकांडी ब्राह्मण के घर पर हुआ था। इनके पिता श्री गौरी दत्त बड़थ्वाल प्रख्यात ज्योतिषी और माता धर्मपरायण एवं सत्यवादी थीं। बाल्यकाल में ही पिता का साया उठ जाने के बाद इनके ताऊ मणिराम जी ने इनकी देखभाल की। कर्मकांडी संस्कारों के बीच पले पीताम्बर बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि, प्रतिभा सम्पन्न और अत्यंत मेघावी थे। इसके फलस्वरूप ही इन्होंने अमर कोश, हितोपदेश आदि के श्लोकों को कंठाग्र कर लिया था। प्रारंभिक शिक्षा घर पर करने के उपरांत पीताम्बर दत्त ने जूनियर हाई स्कूल की परीक्षा श्रीनगर (गढ़वाल) से पास की। इसके पश्चात् शिक्षा के लिये लखनऊ जाकर इन्होंने वर्ष 1920 में कालीचरण हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा सम्मान सहित उत्तीर्ण की। इसी प्रवास में उनका परिचय हिन्दी के ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व बाबू श्याम सुन्दर दास जी से हुआ जो उनके हैडमास्टर थे। बाद में यही परिचय साहित्यिक सहयोग में परिवर्तित हो गया था। छात्रवृत्ति के सहयोग से इन्होंने 1922 में कानपुर से एफ. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। इधर ताऊ जी की आकस्मिक मृत्यु और उधर स्वयं अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें अपनी शिक्षा का क्रम दो वर्ष के लिए स्थगित रखना पड़ा। वे दुबारा बनारस गए और 1926 ई. में बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तब बाबू श्याम सुन्दर दास यहाँ हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष थे। उसी साल विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी की कक्षाएँ शुरू हुईं। वे हिन्दी के पहले बैच के विद्यार्थी के रूप में नामांकित हुए। विलक्षण प्रतिभा के फलस्वरूप 1928 ई. में इन्होंने एम. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इस परीक्षा में उनके द्वारा लिखित छायावाद पर निबंध सर्वाधिक चर्चित हुआ। बाबू श्याम सुन्दर दास स्वयं इसे प्रकाशित कराना चाहते थे, किन्तु धन उपलब्ध न होने के कारण यह सम्भव नहीं हो सका। 1929 ई. में इन्होंने बनारस से ही कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की किन्तु साहित्य साधना की ओर उन्मुख पीताम्बर इसे (कानून) पेशा नहीं बना सके।

उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् लगातार कुछ वर्षों तक पीताम्बर नौकरी के लिये दर–दर भटकते रहे, फिर इन्होंने 140 रुपये प्रतिमाह पर बाबू श्याम सुन्दर जी के साथ शोध कार्य प्रारम्भ किया। 1930 में इन्हें इसी विभाग में प्रवक्ता के पद

* आशुलिपिक ग्रेड–I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

पर नौकरी मिल गई। अध्यापन कार्य के बाद इन्हें जो समय मिलता उसका उपयोग इन्होंने शोध कार्य में लगाया इनकी अध्ययनशीलता को देखकर ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इन्हें अपने शोध विभाग का संचालक नियुक्त किया। इस अवधि में बड़थ्वाल जी ने सैकड़ों दुर्लभ शोध ग्रन्थों (पांडुलिपियों) का पता लगाकर उनकी परिचय तालिकायें बनाईं। तीन वर्ष के कठोर परिश्रम एवं अनवरत साहित्य साधना के फलस्वरूप 1931 ई. में इन्होंने अपना शोध ग्रन्थ 'दि निर्गुण स्कूल आफ हिन्दी पोयट्री' (हिन्दी काव्य में निर्गुणवाद) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। इनके शोध ग्रन्थ के परीक्षक थे डॉ. टी. ग्राहम वेली (आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के हिन्दी–उर्दू विभागाध्यक्ष), प्रो. रामचन्द्र रानाडे (प्रयाग विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष) तथा डॉ. श्याम सुन्दर दास। प्रो. बेली ने राय व्यक्त की कि यह शोध कार्य पीएच. डी. डिग्री के लिये उपयुक्त है। इस पर बड़थ्वाल जी ने इसे वापस लेकर कुछ संशोधनों के साथ दुबारा परीक्षण के लिये प्रस्तुत किया। इस बार परीक्षकों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुये उनके शोध प्रबन्ध पर उन्हें डी. लिट (डाक्टर्स आफ लिटरेचर्स) की उपाधि से सम्मानित किया। यह उपाधि उन्हें 1933 के दीक्षांत समारोह में प्रदान की गई। इस पदवी को प्राप्त करने वाले वे प्रथम भारतीय बने। डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल को हिन्दी साहित्य में डी. लिट. की उपाधि मिलना भारत के साहित्य जगत में एक उल्लेखनीय घटना थी। इस गौरव को प्राप्त करने के बाद इनकी गणना देश के ख्याति प्राप्त विद्वानों में होने लगी थी।

बड़थ्वाल जी ने अपनी साहित्यिक छवि के दर्शन बचपन में ही करा दिये थे। बाल्यकाल में ही वे "अम्बर" उपनाम से कविताएँ लिखने लगे थे। किशोरावस्था में पहुँचकर उन्होंने कहानी लेखन प्रारंभ कर दिया। 1918 में दुगड्डा से प्रकाशित "पुरूषार्थ" मासिक पत्र में उनकी तीन कविताएं "सुशील," "कपट और विकट", तथा "माधवी" और दो कहानियाँ प्रकाशित हुईं। 1922 तक वे निरन्तर इस पत्र से जुड़े रहे। एक कवि के रूप में डॉ. विनय डबराल ने उन्हें नई पहचान दी है। इनकी कविताएं मुख्यतः शांत रस और वीर रस से परिपूर्ण रही हैं। कानपुर में अपने छात्र जीवन के दौरान ही उन्होंने 'हिलमैन' नामक अंग्रेजी मासिक पत्रिका का संपादन करते हुए अपनी संपादकीय प्रतिभा को भी प्रदर्शित किया। जिस समय बड़थ्वाल जी में साहित्यिक चेतना जगी उस समय हिन्दी के समक्ष अनेक चुनौतियाँ थीं। कठिन संघर्षों और प्रयत्नों के बाद उच्च कक्षाओं में हिन्दी के पठन–पाठन की व्यवस्था तो हो गई थी, लेकिन हिन्दी साहित्य के गहन अध्ययन और शोध को कोई ठोस आधार नहीं मिल पाया था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बाबू श्याम सुन्दर दास जैसे रचनाकार आलोचना के क्षेत्र में सक्रिय थे। बड़थ्वाल जी ने इस परिदृश्य में अपनी अन्वेषणात्मक क्षमता के सहारे हिंदी क्षेत्र में शोध की सुदृढ़ परंपरा की नींव डाली। संत साहित्य के संदर्भ में स्थापित नवीन मान्यताओं ने उनकी शोध क्षमता को उजागर किया। उन्होंने पहली बार संत, सिद्ध, नाथ और भक्ति साहित्य की खोज और विश्लेषण में अपनी अनुसंधनात्मक दृष्टि को लगाया। इस संदर्भ में लिखे उनके शोध लेख उनके गंभीर अध्ययन और मनन के साथ–साथ उनकी मौलिक दृष्टि के भी परिचायक हैं। परवर्ती साहित्यकारों ने उनकी साहित्यिक मान्यताओं को विश्लेषण का आधार बनाया। उन्होंने स्वयं कहा, 'भाषा फलती फूलती तो है साहित्य में, पर अंकुरित होती है बोलचाल में, साधारण बोलचाल पर बोली मँज–सुधरकर साहित्यिक भाषा बन जाती है।' इस तरह भावाभिव्यंजन के लिये उन्होंने जिस शैली को अपनाया उसमें उनका सर्वाधिक ध्यान भाषा पर ही रहा। उन्होंने संस्कृत, अवधी, ब्रजभाषा, अरबी एवं फारसी के शब्दों को खड़ी बोली के व्याकरण और उच्चारण में ढालकर अपनाया।

1937 में डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, शिमला में उनकी साहित्यक शाखा में निबन्ध पाठ के लिये आमंत्रित किया गया। इसके पश्चात् 1940 ई. में तिरूपति (आंध्र प्रदेश) में आयोजित ओरियण्टल कॉन्फ्रेंस (प्राच्य विद्या सम्मेलन) में इन्हें हिन्दी विभाग का सभापति मनोनीत किया गया। इस मंच से इन्होंने पहली बार हिन्दी संत साहित्य की निरंजनी धारा का मौलिक विश्लेषण किया। इस तरह अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पीताम्बर ने गवेषणापूर्ण निबंधों पर व्याख्यान दिये। अध्यापन क्षेत्र में भी इन्होंने हिन्दी साहित्य के क्रमिक विकास और उसके गूढ़ दार्शनिक पक्षों पर छात्रों को प्रभावपूर्ण शिक्षा दी। 1938 ई. में वेतन विसंगतियों के विरोध में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को छोड़कर पीताम्बर बड़थ्वाल लखनऊ विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता हो गये। निरंतर अध्ययन तथा भीतर–बाहर के आघातों ने उन्हें रोगी बना दिया था। फलस्वरूप लखनऊ छोड़ कर वे घर चले आये, और लम्बी रूग्ण अवस्था के बीच 24 जुलाई 1944 ई. को उनका पाली गाँव में देहांत हो गया। बड़थ्वाल जी निश्चय ही विपुल साहित्य की सर्जना करते, यदि वे लम्बी उम्र ले कर आते। डॉ. सम्पूर्णानंद ने उनकी मृत्यु पर अपने विचार प्रकट करते हुये लिखा था कि 'डॉ. बड़थ्वाल की मृत्यु से हिन्दी संसार को बड़ी क्षति हुई है। उन्होंने हमारे वांगमय के एक विशेष क्षेत्र, जिसका संबंध आध्यात्मिक रचनाओं से है, को अपने अध्ययन का विषय बनाया था। इस दिशा में उन्होंने जो कार्य किया उसका आदर विद्वत समाज में सदैव होगा। यदि आयु ने धोखा न दिया होता तो वह और भी गंभीर रचनाओं का सर्जन करते।' अल्पावधि में ही उन्होंने अध्ययन और अनुसंधान की जो सुदृढ़ नींव डाली उसके लिये वह हमेशा याद किये जाएँगे।

डॉ. बड़थ्वाल की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने पौड़ी, लैंसडाउन, देहरादून, मसूरी तथा कानपुर तक सभा संगोष्ठियों में व्याख्यान देकर श्रुत परम्परा को गद्य–पद्य में लिपिबद्ध करने का न सिर्फ आह्वान किया वरन इसके लिये प्रयास भी किया। उन्होंने हिन्दी अंग्रेजी में 70 से अधिक शोधपूर्ण निबंध लिखे। इनकी विषय वस्तु मध्यकालीन सन्त कवियों के मूल्यांकन से लेकर महात्मा गाँधी और छायावाद के अध्ययन तक व्याप्त है। इसके अतिरिक्त इन्होंने कठिन परिश्रम से गोरखनाथ से संबंधित वाणियों का सम्पादन "गोरखबानी" के नाम से किया है। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की अद्वितीय कृति के रूप में देखा जाता है। संत साहित्य के प्रेरक व्यक्तित्व पीताम्बर बड़थ्वाल ने हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा में लिखा। इसके साथ ही उन्होंने नाथ और सिद्धों के साहित्य का गंभीर अनुशीलन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाबू श्याम सुन्दर जी के सहयोग से गोस्वामी तुलसीदास तथा 'रूपक रहस्य' का सम्पादन किया। उनकी अन्य प्रमुख प्रकाशित पुस्तकों के विवरण इस प्रकार हैं

– हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, "कबीर और उनकी कृति", "युग प्रवर्तक रामानन्द,' 'हिन्दी काव्य की योग धारा' "डॉ. बड़थ्वाल के श्रेष्ठ निबन्ध" (सम्पादक डॉ. चातक)। ये रचनाएं डॉ. बड़थ्वाल की बौद्धिकता और उनके दार्शनिक चिंतन का परिचय देती हैं।

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल गढ़वाली साहित्य के मर्मज्ञ भी थे। 1932 में पौड़ी में स्थापित गढ़वाली साहित्य के स्थायी अध्यक्ष पर रहते हुये उन्होंने गढ़वाली साहित्य की दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संकलन किया। इसी अवधि में इन्होंने गढ़वाली बोली में कुछ नाटक भी लिखे।

हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी उन्होंने कुछ श्रेष्ठ साहित्यिक निबंध लिखे, जिनमें – 'मिस्टिसिज्म इन हिन्दी पोयट्री' और 'मिस्टिसिज्म इन कबीर' विशेष उल्लेखनीय हैं। बड़थ्वाल जी के निबंधों की विशिष्टता यह है कि निबंध का मूल भाव प्रारंभ में ही स्पष्ट हो जाता है। निबंध के प्रारंभिक वाक्य रोचक प्रस्तावना की तरह उभरते हैं। फिर लेखक विषय की गहराई में उतरता चला जाता है। तार्किक ढंग से विषय सामग्री को सजाकर वह पाठक को लुभाते हुए बडी रोचकता और जिज्ञासा के साथ विषय के निष्कर्ष तक पहुँचाता है। शोध लेखों और निबंधों के अतिरिक्त उन्होंने 'प्राणायाम विज्ञान और कला' तथा 'ध्यान से आत्म चिकित्सा' जैसी पुस्तकें लिखकर प्राकृतिक चिकित्सा और योग प्रणाली में अपनी रुचि प्रकट की। बच्चों के लिये उन्होंने 'किंग आर्थर एंड नाइट्स आव द राउड टेबल' का हिन्दी अनुवाद भी किया। शोधकर्ता और निबंधकार के साथ–साथ बड़थ्वाल जी अपनी दार्शनिक प्रवृत्ति के लिए भी विख्यात थे। आध्यात्मिक रचनाओं को उन्होंने अपने अध्ययन का आधार बनाया। उन्होंने धर्म, दर्शन और संस्कृति की विवेचना की। उनका समूचा लेखन उनकी गहरी अध्ययनशीलता का परिणाम है। कहा जाता है कि मस्तिष्क की दासता उनके स्वभाव के विपरीत थी। एक–एक पंक्ति को प्रकाशित होने से पहले कई बार लिखते हुए उन्हें देखा गया। ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल जी को शत–शत नमन।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

वाह! गुरु जी

chjUn flg jkor*

शिक्षक महोदय सिखा रहे, थे बच्चों को ए बी सी।
पर बच्चों को समझ न आती, और सोचते मुसीबत है ये कैसी।
शिक्षक महोदय ने निकाला, तरीका एक बहुत ही आसान।
ए से अंकित की अम्मा, बी से बबलू की अम्मा मान।।

निरीक्षण करने आए जिले से, ठीक चल रहा है काम गुरु जी।
बच्चे अच्छे से पढ़ लिख रहे हैं, कर सकते हैं पूछना शुरू जी।
निरीक्षक महोदय ने डब्ल्यू लिख, प्रगति जाननी चाहिए सांगे की।
सांगा बोला, लगती तो है अम्मा मांगे की, परंतु क्यों इसने ऊपर टांगे की।।

बड़ी कक्षा में गए निरीक्षक, लिख एनएटीयूआरई पूछा ये क्या है भूरे।
खुशी–खुशी खड़ा हुआ भूरा, और ज़ोर से बोला नटूरे (Nature)।
देख निरीक्षक का गुस्सा, शिक्षक ने किए जतन पूरे।
माफ करें, नादान हैं, सब सीखेंगे और सुधारेंगे अपना फुटूरे (Future)।।

लगाई झिड़की निरीक्षक ने, बोले ये कैसा मेरा भारत महान है!
आता खुद को कुछ नहीं, और बोलते बच्चे अभी नादान हैं।
बड़े ही उत्साह से बोले थे कि, कर सकते हैं पूछना आप शुरू जी।
सीखें और सिखाएँ, वरना पत्ता है आपका साफ गुरु जी।।

---

* वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

कहानी

करवा का व्रत

;'kiky*

कन्हैयालाल अपने दफ़्तर के हमजोलियों और मित्रों से दो तीन बरस बड़ा ही था, परन्तु ब्याह उसका उन लोगों के बाद हुआ। उसके बहुत अनुरोध करने पर भी साहब ने उसे ब्याह के लिए सप्ताह–भर से अधिक छुट्टी न दी थी। लौटा तो उसके अन्तरंग मित्रों ने भी उससे वही प्रश्न पूछे जो प्रायः ऐसे अवसर पर दूसरों से पूछे जाते हैं और फिर वही परामर्श उसे दिये गये जो अनुभवी लोग नवविवाहितों को दिया करते हैं।

हेमराज को कन्हैयालाल समझदार मानता था। हेमराज ने समझाया–बहू को प्यार तो करना ही चाहिए, पर प्यार से उसे बिगाड़ देना या सिर चढ़ा लेना भी ठीक नहीं। औरत सरकश हो जाती है, तो आदमी को उम्रभर जोरू का गुलाम ही बना रहना पड़ता है। उसकी ज़रूरतें पूरी करो, पर रखो अपने काबू में। मार–पीट बुरी बात है, पर यह भी नहीं कि औरत को मर्द का डर ही न रहे। डर उसे ज़रूर रहना चाहिए...मारे नहीं तो कम–से–कम गुर्रा तो ज़रूर दे। तीन बात उसकी मानो तो एक में ना भी कर दो। यह न समझ ले कि जो चाहे कर या करा सकती है। उसे तुम्हारी खुशी–नाराज़गी की परवाह रहे। हमारे साहब जैसा हाल न हो जाये......मैं तो देखकर हैरान हो गया। एम्पोरियम से कुछ चीज़ें लेने के लिये जा रहे थे तो घरवाली को पुकारकर पैसे लिये। बीवी ने कह दिया–'कालीन इस महीने रहने दो, अगले महीने सही', तो भीगी बिल्ली की तरह बोले 'अच्छा!' मर्द को रुपया–पैसा तो अपने पास में रखना चाहिये। मालिक तो मर्द है।

कन्हैया के विवाह के समय नक्षत्रों का योग ऐसा था कि ससुराल वाले लड़की की विदाई कराने के लिये किसी तरह तैयार नहीं हुये। अधिक छुट्टी नहीं थी इसलिये गौने की बात 'फिर' पर ही टल गई थी। एक तरह से अच्छा ही हुआ। हेमराज ने कन्हैया को लिखा–पढ़ा दिया कि पहले तुम ऐसा मत करना कि वह समझे कि तुम उसके बिना रह नहीं सकते, या बहुत खुशामद करने लगो......अपनी मर्ज़ी रखना, समझे। औरत और बिल्ली की जात एक। पहले दिन के व्यवहार का असर उस पर सदा रहता है। तभी तो कहते हैं कि 'गुर्बारा वररोजे अव्वल कुश्तन'– बिल्ली के आते ही पहले दिन हाथ लगा दे तो फिर रास्ता नहीं पकड़ती......तुम कहते हो, पढ़ी–लिखी है, तो तुम्हें और भी चौकस रहना चाहिये। पढ़ी–लिखीयाँ भी मिजाज दिखाती हैं।

निस्वार्थ–भाव से हेमराज की दी हुई सीख कन्हैया ने पल्ले बांध ली थी। सोचा – मुझे बाज़ार–होटल में खाना पड़े या खुद चौका–बर्तन करना पड़े, तो शादी का लाभ क्या? इसलिए वह लाजो को दिल्ली ले आया था। दिल्ली में सबसे बड़ी दिक़्क़त मकान की होती है। रेलवे में काम करनेवाले, कन्हैया के ज़िले के बाबू ने उसे अपने क्वार्टर का एक कमरा और रसोई की जगह सस्ते किराये पर दे दी थी। सो सवा साल से मजे में चल रहा था। लाजवन्ती अलीगढ़ में आठवीं जमात तक पढ़ी थी। बहुत–सी चीज़ों के शौक़ थे। कई ऐसी चीज़ों के भी जिन्हें दूसरे घरों की लड़कियों को या नयी ब्याही बहुओं को करते देख मन मारकर रह जाना पड़ता था। उसके पिता और बड़े भाई पुराने ख़्याल के थे। सोचती थी, ब्याह के बाद सही। उन चीज़ों के लिये कन्हैया से कहती। लाजो के कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि कन्हैया का दिल इनकार करने को न करता, पर इस ख़्याल से कि वह बहुत सरकश न हो जाये, दो बात मानकर तीसरी पर इनकार भी कर देता। लाजो मुंह फुला लेती। लाजो मुंह फुलाती तो सोचती कि मनायेंगे तो मान जाऊँगी, आखिर तो मनायेंगे ही। पर कन्हैया मनाने की अपेक्षा डाँट ही देता। एक–आध बार उसने थप्पड़ भी चला दिया। मनौती की प्रतीक्षा में जब थप्पड़ पड़ जाता तो दिल कटकर रह जाता और लाजो अकेले में फूट–फूटकर रोती। फिर उसने सोच लिया – 'चलो, क़िस्मत में यही है तो क्या हो सकता है?' वह हार मानकर खुद ही बोल पड़ती। कन्हैया का हाथ पहली दो बार तो क्रोध की बेबसी में ही चला था, जब चल गया तो उसे अपने अधिकार और शक्ति का अनुभव होने लगा। अपनी शक्ति अनुभव करने के नशे से बड़ा नशा दूसरा कौन होगा? इस नशे में राजा देश–पर–देश समेटते जाते थे, जमींदार गाँव–पर–गाँव और सेठ मिल और बैंक ख़रीदते चले जाते हैं। इस नशे की सीमा नहीं। यह चस्का पड़ा तो कन्हैया के हाथ उतना क्रोध आने की प्रतीक्षा किये बिना भी चल जाते।

मार से लाजो को शारीरिक पीड़ा तो होती ही थी, पर उससे अधिक होती थी अपमान की पीड़ा। ऐसा होने पर वह कई दिनों के लिये उदास हो जाती। घर का सब काम करती। बुलाने पर उत्तर भी दे देती। इच्छा न होने पर भी कन्हैया की इच्छा का विरोध न करती, पर मन–ही–मन सोचती रहती, इससे तो अच्छा है मर जाऊँ। और फिर समय पीड़ा को कम कर देता। जीवन था तो हँसने और खुश होने की इच्छा भी फूट ही पड़ती और लाजो हँसने लगती। सोच यह लिया था, 'मेरा पति है, जैसा भी है मेरे लिये तो यही सब कुछ है। जैसे यह चाहता है, वैसे ही मैं चलूँ।' लाजो के सब तरह अधीन हो जाने पर भी कन्हैया की तेज़ी बढ़ती ही जा रही थी। वह जितनी अधिक बेपरवाही और स्वच्छंदता लाजो के प्रति दिखा सकता, अपने मन में उसे उतना ही अधिक अपनी समझने और प्यार का संतोष पाता। क्वार के अन्त में पड़ोस की स्त्रियाँ करवा चौथ के व्रत की बात करने लगीं। एक–दूसरे को बता रही थीं कि उनके मायके से करवे में क्या आया। पहले बरस लाजो का भाई आकर करवा दे गया था। इस बरस भी वह प्रतीक्षा में थी। जिनके मायके शहर से दूर थे, उनके यहाँ मायके से रुपये आ गए थे। कन्हैया अपनी चिठ्ठी–पत्री दफ़्तर के पते से ही मँगाता था। दफ़्तर से आकर

* प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार एवं कथाकार

उसने बताया, 'तुम्हारे भाई ने करवे के दो रुपये भेजे हैं।'

करवे के रुपये आ जाने से ही लाजो को संतोष हो गया। सोचा, भैया इतनी दूर कैसे आते? कन्हैया दफ़्तर जा रहा था तो उसने अभिमान से गर्दन कन्धे पर टेढ़ी कर और लाड़ के स्वर में याद दिलाया– 'हमारे लिए सरघी में क्या–क्या लाओगे?'

और लाजो ने ऐसे अवसर पर लाई जाने वाली चीजें याद दिला दीं। लाजो पड़ोस में कह आई कि उसने भी सरघी का सामान मँगाया है। करवा चौथ का व्रत भला कौन हिन्दू स्त्री नहीं करती? जनम–जनम यही पति मिले, इसलिए दूसरे व्रतों की परवाह न करने वाली पढ़ी–लिखी स्त्रियाँ भी इस व्रत की उपेक्षा नहीं कर सकतीं। अवसर की बात, उस दिन कन्हैया लंच की छुट्टी में साथियों के साथ कुछ ऐसे काबू में आ गया कि सवा तीन रुपये खर्च हो गये। वह लाजो का बताया सरघी का सामान घर नहीं ला सका। कन्हैया ख़ाली हाथ घर लौटा तो लाजो का मन बुझ गया। उसने गम खाना सीखकर रूठना छोड़ दिया था, परन्तु उस साँझ मुँह लटक ही गया। आँसू पोंछ लिए और बिना बोले चौके–बर्तन के काम में लग गयी। रात के भोजन के समय कन्हैया ने देखा कि लाजो मुँह सुजाये है, बोल नहीं रही है, तो अपनी भूल कबूल कर उसे मनाने या कोई और प्रबंध करने का आश्वासन देने के बजाय उसने उसे डाँट दिया।

लाजो का मन और भी बिंध गया. कुछ ऐसा ख़्याल आने लगा – इन्हीं के लिए तो व्रत कर रही हूँ और यही ऐसी रुखाई दिखा रहे हैं........मैं व्रत कर रही हूँ कि अगले जनम में भी 'इन' से ही ब्याह हो और मैं सुहा ही नहीं रही हूँ ....अपनी उपेक्षा और निरादर से भी रोना आ गया। कुछ खाते न बना। ऐसे ही सो गयी।

तड़के पड़ोस में रोज की अपेक्षा जल्दी ही बर्तन भांडे खटकने की आवाज़ आने लगी। लाजो को याद आने लगा–शान्ति बता रही थी कि उसके बाबू सरघी के लिये फेनियाँ लाये हैं, तार वाले बाबू की घरवाली ने बताया था कि खोए की मिठाई लाये हैं। लाजो ने सोचा, उन मर्दों को ख़याल है न कि हमारी बहू हमारे लिये व्रत कर रही है; इन्हें जरा भी खयाल नहीं।

लाजो का मन इतना खिन्न हो गया कि सरघी में उसने कुछ भी न खाया। न खाने पर भी पति के नाम का व्रत कैसे न रखती। सुबह–सुबह पड़ोस की स्त्रियों के साथ उसने भी करवे का व्रत करने वाली रानी और करवे का व्रत करने वाली राजा की प्रेयसी दासी की कथा सुनने और व्रत के दूसरे उपचार निबाहे। खाना बनाकर कन्हैयालाल को दफ़्तर जाने के समय खिला दिया। कन्हैया ने दफ़्तर जाते समय देखा कि लाजो मुँह सुजाए है। उसने फिर डाँटा– 'मालूम होता है कि दो–चार खाये बिना तुम सीधी नहीं होगी।' लाजो को और भी रुलाई आ गयी। कन्हैया दफ़्तर चला गया तो वह अकेली बैठी कुछ देर रोती रही। क्या जुल्म है, इन्हीं के लिये व्रत कर रही हूँ और इन्हें ही गुस्सा आ रहा है। ....जनम–जनम ये ही मिलें इसीलिये मैं भूखी मर रही हूँ।

.................बड़ा सुख मिल रहा है न! ....अगले जनम में और बड़ा सुख देंगे!................ये ही जनम निबाहना मुश्क़िल हो रहा है। ....इस जनम में तो इस मुसीबत से मर जाना अच्छा लगता है, दूसरे जनम के लिये वही मुसीबत पक्की कर रही हूँ.. .... लाजो पिछली रात भूखी थी, बल्कि पिछली दोपहर के पहले का ही खाया हुआ था। भूख के मारे कुड़मुड़ा रही थी और उस पर पति का निर्दयी व्यवहार। जनम–जनम, कितने जनम तक उसे ऐसा ही व्यवहार सहना पड़ेगा! सोचकर लाजो का मन डूबने लगा। सिर में दर्द होने लगा तो वह धोती के आँचल सिर बाँधकर खाट पर लेटने लगी तो झिझक गई–करवे के दिन बान पर नहीं लेटा या बैठा जाता। वह दीवार के साथ फर्श पर ही लेट रही।

लाजो को पड़ोसिनों की पुकार सुनाई दी। वे उसे बुलाने आई थीं। करवा–चौथ का व्रत होने के कारण सभी स्त्रियाँ उपवास करके भी प्रसन्न थीं। आज करवे के कारण नित्य की तरह दोपहर के समय सीने–पिरोने, काढ़ने–बुनने का काम किया नहीं जा सकता था; करवे के दिन सुई, सलाई, और चरखा छुआ नहीं जाता। काज से छुट्टी थी और विनोद के लिए ताश या जुए की बैठक जमाने का उपक्रम हो रहा था। वे लाजो को भी उसी के लिये बुलाने आयी थीं। सिर–दर्द और मन के दुःख के कारण लाजो जा नहीं सकी। सिर–दर्द और बदन टूटने की बात कहकर वह टाल गयी और फिर सोचने लगी–ये सब तो सुबह सरघी खाये हुये हैं। जान तो मेरी ही निकल रही है। ... .फिर अपने दुःखी जीवन के कारण मर जाने का ख़याल आया और कल्पना करने लगी कि करवा–चौथ के दिन उपवास किये–किये मर जाये, तो इस पुण्य से ज़रूर ही यही पति अगले जन्म में मिले............

लाजो की कल्पना बावली हो उठी। वह सोचने लगी–मैं मर जाऊँ तो इनका क्या है, और ब्याह कर लेंगे। जो आएगी वह भी करवाचौथ का व्रत करेगी। अगले जनम में दोनों का इन्हीं से ब्याह होगा, हम सौतें बनेंगी। सौत का ख़याल उसे और भी बुरा लगा। फिर अपने–आप समाधान हो गया – नहीं, पहले मुझसे ब्याह होगा, मैं मर जाऊँगी तो दूसरी से होगा। अपने उपवास के इतने भयंकर परिणाम की चिंता से मन अधीर हो उठा। भूख अलग व्याकुल किये थी। उसने सोचा–क्यों मैं अपना अगला जनम भी बरबाद करूँ? भूख के कारण शरीर निढाल होने पर भी खाने को मन नहीं हो रहा था, परन्तु उपवास के परिणाम की कल्पना से मन क्रोध से जल उठा; वह उठ खड़ी हुई।

कन्हैयालाल के लिये उसने सुबह जो खाना बनाया था उसमें से बची दो रोटियाँ कटोरदान में पड़ी थीं। लाजो उठी और उपवास के फल से बचने के लिये उसने मन को वश में कर एक रोटी रूखी ही खा ली और एक गिलास पानी पीकर फिर लेट गई। मन बहुत खिन्न था। कभी सोचती–ठीक ही तो किया, अपना अगला जनम क्यों बरबाद करूँ? ऐसे पड़े–पड़े झपकी आ गई। कमरे के किवाड़ पर धम–धम सुनकर लाजो ने देखा, रोशनदान से प्रकाश की जगह अंधकार भीतर आ रहा था। समझ गई, दफ़्तर से लौटे हैं। उसने किवाड़ खोले और चुपचाप एक ओर हट गई। कन्हैयालाल ने क्रोध से उसकी तरफ देखा–'अभी

तक पारा नहीं उतरा! मालूम होता है झाड़े बिना नहीं उतरेगा!'

लाजो के दुखे हुये दिल पर और चोट पड़ी और पीड़ा क्रोध में बदल गई। कुछ उत्तर न दे वह घूमकर फिर दीवार के सहारे फ़र्श पर बैठ गई। कन्हैयालाल का गुस्सा भी उबल पड़ा – 'यह अकड़ है! ....आज तुझे ठीक कर ही दूँ.' उसने कहा और लाजो को बाँह से पकड़, खींचकर गिराते हुये दो थप्पड़ पूरे हाथ के जोर से ताबड़तोड़ जड़ दिये और हाँफते हुये लात उटाकर कहा, 'और मिज़ाज दिखा?.......खड़ी हो सीधी.' लाजो का क्रोध भी सीमा पार कर चुका था. खींची जाने पर भी फ़र्श से उठी नहीं। और मार खाने के लिये तैयार हो उसने चिल्लाकर कहा,' मार ले, मार ले! जान से मार डाल! पीछा छूटे! आज ही तो मारेगा! मैने कौन व्रत रखा है तेरे लिये जो जनम–जनम मार खाऊंगी। मार, मार डाल......!'

कन्हैयालाल का लात मारने के लिये उठा पाँव अधर में ही रुक गया। लाजो का हाथ उसके हाथ से छूट गया। वह स्तब्ध रह गया। मुँह में आई गाली भी मुँह में ही रह गई। ऐसे जान पड़ा कि अँधेरे में कुत्ते के धोखे जिस जानवर को मार बैठा था उसकी गुर्राहट से जाना कि वह शेर था; या लाजो को डाँट और मार सकने का अधिकार एक भ्रम ही था। कुछ क्षण वह हाँफता हुआ खड़ा सोचता रहा और फिर खाट पर बैठकर चिन्ता में डूब गया। लाजो फ़र्श पर पड़ी रो रही थी। उस ओर देखने का साहस कन्हैयालाल को न हो रहा था। वह उठा और बाहर चला गया।

लाजो फ़र्श पर पड़ी फूट–फूटकर रोती रही। जब घंटे–भर रो चुकी तो उठी। चूल्हा जलाकर कम–से–कम कन्हैया के लिए खाना तो बनाना ही था। बड़े बेमन उसने खाना बनाया। बना चुकी तब भी कन्हैयालाल लौटा नहीं था। लाजो ने खाना ढँक दिया और कमरे के किवाड़ उड़काकर फिर फ़र्श पर लेट गई। यही सोच रही थी, क्या मुसीबत है ज़िन्दगी। यही झेलना था तो पैदा ही क्यों हुई थी?.......मैने क्या किया था जो मारने लगे।

किवाड़ों के खुलने का शब्द सुनाई दिया। वह उठने के लिये आँसुओं से भीगे चेहरे को आँचल से पोंछने लगी। कन्हैयालाल ने आते ही एक नजर उसकी ओर डाली। उसे पुकारे बिना ही वह दीवार के साथ बिछी चटाई पर चुपचाप बैठ गया। कन्हैयालाल का ऐसे चुप बैठ जाना नई बात थी, पर लाजो गुस्से में कुछ न बोल रसोई में चली गई। आसन डाल थाली–कटोरी रख खाना परोस दिया और लोटे में पानी लेकर हाथ धुलाने के लिए खड़ी थी। जब पाँच मिनट हो गये और कन्हैयालाल नहीं आया तो उसे पुकारना ही पड़ा, 'खाना परस दिया है.' कन्हैयालाल आया तो हाथ नल से धोकर झाड़ते हुये भीतर आया। अब तक हाथ धुलाने के लिए लाजो ही उठकर पानी देती थी। कन्हैयालाल दो ही रोटी खाकर उठ गया। लाजो और देने लगी तो उसने कह दिया 'और नहीं चाहिये।' कन्हैयालाल खाकर उठा तो रोज़ की तरह हाथ धुलाने के लिये न कहकर नल की ओर चला गया।

लाजो मन मारकर स्वयं खाने बैठी तो देखा कि कद्दू की तरकारी बिलकुल कड़वी हो रही थी। मन की अवस्था ठीक न होने से हल्दी–नमक दो बार पड़ गया था। बड़ी लज्जा अनुभव हुई, 'हाय, इन्होंने कुछ कहा भी नहीं। यह तो ज़रा कम–ज्यादा हो जाने पर डाँट देते थे।'

लाजो से दुःख में खाया नहीं गया। यों ही कुल्ला कर, हाथ धोकर इधर आई कि बिस्तर ठीक कर दे, चौका फिर समेट देगी। देखा तो कन्हैयालाल स्वयं ही बिस्तर झाड़कर बिछा रहा था। लाजो जिस दिन से इस घर में आई थी ऐसा कभी नहीं हुआ था।

लाजो ने शरमाकर कहा, 'मैं आ गई, रहने दो। किये देती हूँ।' और पति के हाथ से दरी चादर पकड़ ली। लाजो बिस्तर ठीक करने लगी तो कन्हैयालाल दूसरी ओर से मदद करता रहा। फिर लाजो को सम्बोधित किया, 'तुमने कुछ खाया नहीं। कद्दू में नमक ज़्यादा हो गया है। सुबह और पिछली रात भी तुमने कुछ नहीं खाया था। ठहरो, मैं तुम्हारे लिये दूध ले आता हूँ।' लाजो के प्रति इतनी चिन्ता कन्हैयालाल ने कभी नहीं दिखाई थी। ज़रूरत भी नहीं समझी थी। लाजो को उसने 'चीज़' समझा था। आज वह ऐसे बात कर रहा था जैसे लाजो भी इन्सान हो; उसका भी ख़याल किया जाना चाहिये। लाजो को शर्म तो आ ही रही थी पर अच्छा भी लग रहा था। उसी रात से कन्हैयालाल के व्यवहार में एक नरमी–सी आ गई। कड़े बोल की तो बात क्या, बल्कि एक झिझक–सी हर बात में; जैसे लाजो के किसी बात के बुरा मान जाने की या नाराज़ हो जाने की आशंका हो। कोई काम अधूरा देखता तो स्वयं करने लगता। लाजो को मलेरिया बुख़ार आ गया तो उसने उसे चौके के समीप नहीं जाने दिया। बर्तन भी खुद साफ़ कर लिये। कई दिन तो लाजो को बड़ी उलझन और शर्म महसूस हुई, पर फिर पति पर और अधिक प्यार आने लगा। जहाँ तक बन पड़ता घर का काम उसे नहीं करने देती, 'यह काम करते मर्द अच्छे नहीं लगते...........'

उन लोगों का जीवन कुछ दूसरी ही तरह का हो गया। लाजो खाने के लिये पुकारती तो कन्हैया ज़िद करता, 'तुम सब बना लो, फिर एक साथ बैठकर खायेंगे।' कन्हैया पहले कोई पत्रिका या पुस्तक लाता था तो अकेला मन–ही–मन पढ़ा करता था। अब लाजो को सुनाकर पढ़ता या खुद सुन लेता। यह भी पूछ लेता, 'तुम्हें नींद तो नहीं आ रही? 'साल बीतते मालूम न हुआ। फिर करवाचौथ का व्रत आ गया। जाने क्यों लाजो के भाई का मनीआर्डर करवे के लिये न पहुँचा था। करवाचौथ के पहले दिन कन्हैयालाल दफ़्तर जा रहा था। लाजो ने खिन्नता और लज्जा से कहा, 'भैया करवा भेजना शायद भूल गये।'

कन्हैयालाल ने सांत्वना के स्वर में कहा,' तो क्या हुआ? उन्होंने ज़रूर भेजा होगा। डाकखाने वालों का हाल आजकल बुरा है। शायद आज आ जाये या और दो दिन बाद आये। डाकखाने वाले आजकल मनीआर्डर के पन्द्रह–पन्द्रह दिन लगा देते हैं। तुम व्रत–उपवास के झगड़े में मत पड़ना। तबियत ख़राब हो जाती है। यों कुछ मंगाना ही है तो बता दो, लेते आयेंगे, पर व्रत–उपवास से होता क्या है ? 'सब ढकोसले हैं।'

'वाह, यह कैसे हो सकता है! हम तो ज़रूर रखेंगे व्रत। भैया ने करवा नहीं भेजा न सही। बात तो व्रत की है, करवे की थोड़े ही।' लाजो ने बेपरवाही से कहा। संध्या–समय कन्हैयालाल आया तो रूमाल में बँधी छोटी गाँठ लाजो को थमाकर बोला, 'लो, फेनी तो मैं ले आया हूँ, पर व्रत–व्रत के झगड़े में नहीं पड़ना।' लाजो ने मुस्कुराकर रूमाल लेकर आलमारी में रख दिया।

अगले दिन लाजो ने समय पर खाना तैयार कर कन्हैया को रसोई से पुकारा, 'आओ, खाना परस दिया है।' कन्हैया ने जाकर देखा, खाना एक ही आदमी के लिये परोसा था – 'और तुम?' उसने लाजो की ओर देखा। 'वाह, मेरा तो व्रत है! सुबह सरघी भी खा ली। तुम अभी सो ही रहे थे।' लाजो ने मुस्कराकर प्यार से बताया।

'यह बात.............! तो हमारा भी व्रत रहा।' आसन से उठते हुये कन्हैयालाल ने कहा। लाजो ने पति का हाथ पकड़कर रोकते हुये समझाया, 'क्या पागल हो, कहीं मर्द भी करवाचौथ का व्रत रखते हैं!............तुमने सरघी कहाँ खाई?' 'नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है।' कन्हैया नहीं माना,' तुम्हें अगले जनम में मेरी ज़रूरत है तो क्या मुझे तुम्हारी नहीं है? या तुम भी व्रत न रखो आज!'

लाजो पति की ओर कातर आँखों से देखती हार मान गई। पति के उपासे दफ़्तर जाने पर उसका हृदय गर्व से फूला नहीं समा रहा था।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

हाँ, मैं एक नारी हूँ

fufèk vxoky*

हाँ, मैं एक नारी हूँ
पैदा होने से पहले ही जिसे नकारा गया है,
दुनिया में आने के बाद जिसे मारा गया है।
ऐसी मैं भगवान की रचना न्यारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

घर के बेटे को सब पूछते हैं, सब की अनदेखी मैं सहती हूँ,
सब देखकर भी कहाँ कुछ मैं कहती हूँ।
क्यूं नहीं मैं भी बेटे की तरह सबकी दुलारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

यूं तो कहते हैं सब, हो तुम देवी का स्वरूप,
फिर भी औलाद में चाहिये सबको बेटे का रूप।
क्यूं सिर्फ नौ दिनों के लिये ही मैं प्यारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

बेटे को पढ़ाते हैं कहकर, करेगा वो घर को आबाद,
कहा जाता है मुझसे, करना जो करना हो षादी के बाद।
क्योंकि अभी तो मैं कंवारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

शादी में माँगते हैं गाड़ी और पैसा,
फिर भी कहते हैं तुम्हारे यहाँ से मिला क्या है ऐसा।
ऐसे अनगिनत दहेज के लिये, कितनी बार गई मैं मारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

आसमां को रख के सर,
जा चुकी हूँ चाँद पर।
लेकिन दुनिया के लिये मैं अब भी बेचारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

उठाती हूँ जो कदम खुद को आगे बढ़ाने को,
कोशिश करते हैं सब मेरा मनोबल गिराने को।
गैरों से ज्यादा अपनों से ही मैं हारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

काम करूँ दफ्तर में या जाऊँ किसी सफर में,
क्यूँ मैं सुरक्षित नहीं हूँ अपने ही घर में।
बस, अपमान अब न सहूँगी मैं, सहकर चुप न रहूँगी मैं,
सुरक्षा और सम्मान की मैं भी अधिकारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

कंधे से कंधा मिला कर चलती हूँ,
जितनी बार गिरती हूँ, खुद ही संभलती हूँ।
मौका मिले तो सब पर भारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

बाहर जाकर ऑफिस भी संभालती हूँ,
घर आकर घर को भी निखारती हूँ।
नारी होना यूं तो बिल्कुल भी आसान नहीं,
फिर भी उस ईश्वर की मैं आभारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।।

* आशुलिपिक ग्रेड–II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

हॉकी की गौरव गाथा

Xkhrk vjkMk*

ओलंपिक खेलों (1928 से 1956 तक) में देश को लगातार 6 स्वर्ण पदक दिलाने वाला खेल 'हॉकी' पूर्व में पूरे भारत में सबसे लोकप्रिय खेल था। भारतीय हॉकी खिलाड़ियों ने तब वास्तव में बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया था और लगातार स्वर्णिम जीत मिलती रहने के कारण ही शायद इसे राष्ट्रीय खेल के तौर पर जाना जाने लगा। भारत में अधिकतर लोगों को यह लगता है कि भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। हम बचपन से इस बारे में सुनते आ रहे थे कि भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। हालांकि आधिकारिक तौर पर भारत का कोई भी राष्ट्रीय खेल नहीं है। दरअसल, वर्ष 2020 में महाराष्ट्र के धुले जिले के एक स्कूल शिक्षक ने भारत सरकार के साथ आरटीआई दायर की थी। इसमें वह यह जानना चाहते थे कि हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल कब घोषित किया गया था? इसके जवाब में सरकार ने बताया, 'सरकार ने किसी भी खेल को भारत का राष्ट्रीय खेल घोषित नहीं किया है, क्योंकि भारत सरकार सभी खेलों को समान रूप से मान्यता देती है और एक खेल को दूसरे से अधिक प्रोत्साहित नहीं करना चाहती है। सरकार का उद्देश्य सभी लोकप्रिय स्पोर्ट्स डिसिप्लिन को बढ़ावा देना है।'

हॉकी कई देशों में खेला जाने वाला एक बेहद लोकप्रिय और दिलचस्प खेल है। इस खेल में दो टीमें होती हैं और दोनों टीमों में 11–11 खिलाड़ी होते हैं। एक टीम के खिलाड़ियों का लक्ष्य दूसरी टीम के खिलाफ हॉकी के प्रयोग से विरोधी टीम के नेट पर बॉल मारकर अधिक से अधिक गोल करना होता है। हॉकी के स्वर्णिम काल (1928 से 1956 तक) के दौरान भारत ने ओलंपिक खेलों में सक्रिय रुप से भागीदारी की और हॉकी के 24 मैच खेले। सबसे अधिक आश्चर्यचकित करने वाला तथ्य यह था कि भारत ने इन मैचों में 178 गोल किए जबकि विरोधी टीमें मात्र 07 गोल करने में ही सफल रही थीं। इसके बाद भारतीय टीम ने टोक्यो ओलंपिक (1964) में और मॉस्को ओलंपिक (1980) में स्वर्ण पदक जीते। इस प्रकार हॉकी में भारत के पास 08 ओलंपिक स्वर्ण पदकों का उत्कृष्ट रिकॉर्ड है। साथ ही, ओलंपिक खेलों में हॉकी में भारत ने एक रजत एवं 03 कांस्य पदक भी जीते हैं।

वर्श 1928 में एमस्टर्डम ओलंपिक में भारतीय टीम पहली बार प्रतियोगिता में शामिल हुई। भारतीय टीम ने पाँच मुक़ाबलों में एक भी गोल दिए बगैर स्वर्ण पदक जीता। जयपाल सिंह की कप्तानी में टीम ने, जिसमें महान खिलाड़ी ध्यानचंद भी शामिल थे, अंतिम मुक़ाबले में हॉलैंड को आसानी से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इन खेलों में हॉकी में कुल 9 टीमों ने भाग लिया था। भारत को बेल्जियम, डेनमार्क, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया के साथ ग्रुप 'ए' में रखा गया था। वहीं, मेजबान नीदरलैंड्स जर्मनी, फ्रांस और स्पेन ग्रुप 'बी' में थे। दोनों ग्रुप की टॉप टीम ने स्वर्ण पदक के लिए एक–दूसरे का सामना किया, जबकि दूसरे स्थान पर रहने वाली टीमों ने कांस्य पदक के लिए मैच खेले। भारत ने ऑस्ट्रिया को 6–0 से, बेल्जियम को 9–0 से और डेनमार्क को 5–0 से मात दी। स्विट्जरलैंड को 6–0 से हराने के साथ ही भारतीय टीम फाइनल में पहुंच गई। फाइनल में भारत ने 23 हजार फैंस के सामने नीदरलैंड्स को 3–0 से मात दे दी। ध्यानचंद ने दो और जॉर्ज मार्टिंस ने एक गोल दागकर भारतीय हॉकी के स्वर्ण युग की शुरुआत की। पूरे टूर्नामेंट में भारत ने कुल 29 गोल किए थे, जिसमें से 14 गोल तो अकेले ध्यानचंद ने दागे थे। भारतीय टीम के विजयी अभियान की एक खास बात यह रही थी कि उसने पूरे टूर्नामेंट में एक भी गोल नहीं खाया। इसमें सबसे बड़ा योगदान भारतीय गोलकीपर रिचर्ड एलन का था। एलन गोलपोस्ट के सामने दीवार बनकर खड़े हो गए थे और विपक्षी टीम का कोई भी खिलाड़ी इस दीवार को भेद नहीं सका था।

वर्ष 1932 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों में हिस्सा लेने के लिए बहुत ही कम देश पहुंचे थे। नतीजा ये हुआ कि हॉकी का इवेंट सिर्फ़ तीन देशों के ही बीच खेला जा सका था। तीनों ही देशों को राउंड रॉबिन मुक़ाबलों में एक दूसरे के साथ भिड़ना था और जिसके नाम सबसे ज्यादा प्वाइंट्स रहते वही होता चैंपियन। पहले मैच में भारतीय हॉकी टीम ने जापान को 11–1 से रौंद डाला था। अगले मैच में आत्मविश्वास से लबरेज़ भारत ने अपने सभी 15 खिलाड़ियों को अदला बदली करते हुए अमेरिका के खिलाफ मैदान में उतारा। इस मैच में भी ध्यानचंद और उनके भाई रूप सिंह ने गोलों की ऐसी बारिश की जिसमें अमेरिका कहीं डूब–सा गया, जब मैच ख़त्म हुआ तो स्कोर लाइन पर भारत 24–1 से मैच जीत चुका था। रूप सिंह ने बड़े भाई ध्यानचंद को भी पीछे छोड़ते हुए गोलों का दहला (10) लगा दिया था जबकि ध्यानचंद के नाम 8 गोल थे। इसके अलावा गुरमित सिंह ने पांच और एरिक पिनिगर ने एक गोल किए थे। इस प्रकार भारत ने शान से अपने ख़िताब की रक्षा करते हुए लगातार दूसरा ओलंपिक स्वर्ण पदक अपने नाम किया था।

1936 के बर्लिन ओलंपिक खेलों में भारत ने ग्रुप 'ए' में हंगरी (4–0), संयुक्त राज्य अमेरिका (7–0) और जापान (9–0) को धूल चटाने के बाद सेमीफाइनल में फ्रांस पर 10–0 की जीत के साथ ओलंपिक के फाइनल में जगह बनाई। इस मैच में ध्यानचंद ने चार गोल किए। फाइनल में जर्मनी को 8–1 से हराकर भारत ने ओलंपिक में स्वर्ण पदकों की पहली हैट्रिक पूरी की। हॉकी के जादूगर कैप्टन ध्यानचंद टूर्नामेंट के शीर्ष गोल स्कोरर रहे। ध्यानचंद ने फाइनल में तीन गोल किए थे। जर्मन गोलकीपर टिटो वार्नहोल्ट्ज के साथ टकराने पर उनके दांत भी टूट गए थे। ध्यानचंद इलाज के बाद मैदान पर लौटे और कहा जाता है कि दूसरे हाफ में तेजी से दौड़ने के लिए उन्होंने अपने जूते उतार दिए थे। भारतीय हॉकी टीम ने पाँच मैचों में कुल 38

* पर्यवेक्षक, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

गोल किए और अपने खिलाफ सिर्फ एक गोल होने दिया।

1936 के बर्लिन ओलंपिक के बाद दूसरे विश्व युद्ध के कारण लगातार दो बार, 1940 और 1994 में ओलंपिक खेलों का आयोजन नहीं किया जा सका था। 12 साल के अंतराल के बाद 1948 में लंदन ओलंपिक खेल आयोजित किए गए। अब तक भारत ने 1928, 1932, 1936 में जो ओलिंपिक पदक जीते थे वो अंग्रेज हुकूमत के तले जीते थे, लेकिन 1948 में पहली बार ओलंपिक खेलों में स्वतंत्र भारत की टीम उतर रही थी। भारत ने हॉकी में चौथा ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने की चुनौती को बखूबी पूरा किया। इन ओलंपिक में टीम उतारना ही भारत के लिए चुनौतीपूर्ण था क्योंकि हाल ही में भारत को आजादी मिली थी और साथ ही देश का बंटवारा भी हुआ था। कई खिलाड़ी सरहद पार चले गए थे। टीम चुनना आसान नहीं था, आखिरकार टीम चुनी गई। भारतीय हॉकी महासंघ ने काफी मशक्कत के बाद टीम बनाई, लेकिन इस टीम में एक भी ऐसा खिलाडी नहीं था जो पहले ओलंपिक खेल चुका हो। इस टीम ने निराश नहीं किया और मुश्किल समय में भारतीयों के चेहरे पर मुस्कान लेकर आई। भारत ने ग्रुप 'ए' में ऑस्ट्रिया (8–0), अर्जेंटीना (9–1) और स्पेन (2–0) के खिलाफ जीत दर्ज करते हुए सेमीफाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल में भारत का सामना हॉलैंड से हुआ था। भारत ने यह मैच 2–1 से जीता। भारत ने अपने दमदार खेल के दम पर फाइनल में जगह बना ली थी और अब खिताब के लिए उसका सामना होना था उस ग्रेट ब्रिटेन से, जिससे एक साल पहले ही भारत को आजादी मिली थी। फाइनल की तारीख थी 12 अगस्त 1948 और 15 अगस्त 1947 को ही देश आजाद हुआ था। जाहिर सी बात है कि ग्रेट ब्रिटेन को सामने देख भारतीय खिलाड़ियों के मन में जीत की भावना और प्रतिबद्धता कई गुना बढ़ गई होगी। वह किसी भी कीमत पर ग्रेट ब्रिटेन से हारना नहीं चाहते होंगे। हारे भी नहीं, भारत ने अपने पुराने आका को 4–0 से धूल चटाई। शानदार खेल दिखाते हुए बलबीर सिंह ने भारत के लिए दो गोल किए थे। आजाद भारत को अपना पहला स्वर्ण पदक मिल चुका था। आजादी से पहले भारत ने जो तीन ओलंपिक पदक जीते थे उनमें ध्यानचंद का रोल अहम था। लेकिन आजादी के बाद के पहले ओलंपिक खेलों में ध्यानचंद नहीं थे। इन खेलों में भारतीय हॉकी के क्षितिज पर बलबीर सिंह नाम का एक नया सितारा उभर कर आया। अर्जेंटीना के खिलाफ हुए मैच में पदार्पण कर रहे बलबीर सिंह ने 6 गोल दाग कर अपना नाम हमेशा के लिए बना लिया। बलबीर सिंह ने लंबे समय तक भारतीय हॉकी की जादूगरी को कायम रखा।

लगातार चार बार ओलंपिक स्वर्ण पदक जीत चुकी भारतीय टीम का यह स्वर्णिम सफर 1952 हेलसिंकी में भी जारी रहा। 1952 में ओलंपिक खेलों में हॉकी के मुकाबले नॉकआउट की तर्ज पर खेले गए और 1948 की टॉप चारों टीमों को सीधे क्वार्टर फाइनल में प्रवेश मिला। क्वार्टर फाइनल में भारत ने ऑस्ट्रिया को 4–0 से मात दी। इसके बाद सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ उन्होंने 3–1 से जीत हासिल की और फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल में नीदरलैंड्स ने भारत को चुनौती देने की कोशिश की लेकिन कुछ समय बाद ही वह ओलंपिक चैंपियन के सामने घुटने टेक चुकी थी। भारत ने इस मुकाबले में 6–1 से जीत दर्ज की और इस प्रकार कुंवर दिग्विजय सिंह (के. डी. सिंह बाबू) की कप्तानी में भारतीय टीम ने देश के लिए पाँचवाँ स्वर्ण पदक हासिल किया। भारत की ओर से पाँच गोल दागने वाले बलबीर सिंह के नाम ओलंपिक फाइनल मुकाबले में सबसे ज्यादा गोल का रिकॉर्ड दर्ज हो गया, जो आज भी कायम है। पूरी भारतीय टीम ने टूर्नामेंट में 13 गोल किए थे जिसमें से बलबीर सिंह ने नौ गोल दागे थे।

1956 के मेलबर्न ओलंपिक खेलों में कुल 12 हॉकी टीमें तीन ग्रुप में हिस्सा ले रही थीं। भारतीय हॉकी टीम ने ग्रुप में अपने सभी मैच जीते थे, भारतीय हॉकी टीम के कप्तान थे बलबीर सिंह सीनियर। भारत ने अफगानिस्तान को 14–0 से, अमेरिका को 16–0 से और सिंगापुर को 6–0 से पराजित करते हुए सेमीफाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल के रोमांचक मुकाबले में भारत ने जर्मनी को 1–0 से पराजित किया और फाइनल में भारत ने 1–0 से पाकिस्तान को हरा कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम की ये छठी जीत थी। ये ओलंपिक में टीम खेल में किसी भी देश के लिए एक रिकॉर्ड है।

1960 के रोम ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम की जीत का स्वर्णिम सिलसिला थम गया था। इस ओलंपिक में खिताब की प्रबल दावेदार भारत ने ग्रुप 'ए' में डेनमार्क को 10–0 से, नीदरलैंड्स को 4–1 से और न्यूजीलैंड को 3–0 से हराकर अंतिम आठ में जगह पक्की की। क्वार्टर फाइनल में भारत का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से हुआ, जिसे भारत ने एक्स्ट्रा टाइम में 1–0 से अपने नाम किया था। इसके बाद भारत ने सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन को 1–0 से हराया। फाइनल में भारत के सामने पाकिस्तानी टीम थी, जिसने स्पेन को मात देकर फाइनल का टिकट कटाया था। मुकाबले के छठे मिनट में ही अहमद नासीर ने गोल करके पाक टीम को बढ़त दिला दी। इसके बाद भारत ने बराबरी करने की पूरी कोशिश की, लेकिन पाकिस्तान के डिफेंस को भेद नहीं पाई। अंततः, भारत यह मुकाबला 0–1 से हार गया था। इस हार के साथ ही भारत का लगातार 7वीं बार स्वर्ण पदक जीतने का सपना टूट गया था।

हालांकि कप्तान चरणजीत सिंह के नेतृत्व में भारतीय हॉकी टीम टोक्यो 1964 में अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को शिकस्त देकर एक बार पुनः स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाने में सफल रही थी किंतु हॉकी के विश्व पटल पर भारतीय हॉकी की चमक कम होनी शुरु हो गयी थी। 1968 के मैक्सिको और 1972 के म्यूनिख ओलंपिक खेलों में भारत को हॉकी में कांस्य पदकों से ही संतोश करना। 1976 के मॉन्ट्रियल ओलंपिक में भारतीय टीम पदक जीतने से महरूम रह गई थी। ऐसा पहली बार हुआ जब भारत के हिस्से हॉकी में कोई ओलंपिक पदक नहीं आया था, उस समय भारतीय टीम तब तक के अपने सबसे निचले स्तर (सातवें पायदान) पर रही थी।

इसके बाद 1980 के मॉस्को ओलंपिक खेलों में टीम से उतनी अपेक्षाएं नहीं थीं। लेकिन 29 जुलाई 1980 को मॉस्को में भारतीय टीम ने फिर से फाइनल में परचम लहराया और स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इन खेलों में भारत की जीत का एक

बड़ा कारण कई देशों का खेलों में हिस्सा न लेना भी था। तब अमेरिका एवं सोवियत संघ के नेतृत्व वाले नॉटो एवं वारसॉ देशों के मध्य जारी शीतयुद्ध के चलते पश्चिमी देशों के साथ–साथ अमेरिका का समर्थन करने वाले अन्य अनेक देशों ने मॉस्को ओलंपिक खेलों का बहिष्कार किया था। इन ओलंपिक खेलों में सिर्फ छह टीमें उतरी थीं। भारतीय टीम ने पहले मैच में तंजानिया को 18–0 से हराया, उसके बाद लगातार दो मैच पोलैंड (2–2) एवं स्पेन (2–2) के साथ ड्रॉ रहे। इसके बाद भारतीय हॉकी टीम ने क्यूबा को 13–0 से और मेजबान रूस को 4–2 से हराते हुए फाइनल में जगह बनाई। बेहद रोमांचक फाइनल में भारत ने स्पेन को 4–3 से हराकर ओलंपिक में अपना आठवाँ और आखिरी ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। 1980 के ओलंपिक से पहले भारतीय हॉकी टीम ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उतना खास प्रदर्शन नहीं किया था, केवल जफर इकबाल, मर्विन फर्नांडिस, एमएम सोमैया, वीर बहादुर छेत्री और कप्तान वासुदेवन भाष्करन ने ही विदेशी विरोधियों के खिलाफ मैच खेले थे। इतने युवाओं के साथ कप्तान भाष्करन ने महसूस किया कि उनकी टीम को भारत से बाहर जाने से पहले अपना आत्मविश्वास बनाने के लिए प्रेरणा की एक अतिरिक्त खुराक की आवश्यकता थी। कप्तान वासुदेवन ने बताया था कि टीम भाग्यशाली थी कि उन्हें पूर्व सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ से बात करने का मौका दो बार मिला। मानेकशॉ ने उनसे ओलंपिक में लक्ष्य के बारे में बात की और भारतीय टीम का मनोबल बढ़ाया।

1980 के बाद कई ओलंपिक में भारतीय टीम ने हिस्सा लिया लेकिन एक बार भी पदक नहीं जीत पाई। अंततः, 41 वर्ष के लम्बे अंतराल के बाद भारतीय हॉकी टीम 2020 के टोक्यो ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक हासिल करने में सफल हो पाई। तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में भारतीय हॉकी टीम ने जर्मनी को 5–4 से हराया। खास बात यह रही कि भारतीय हॉकी टीम एक समय 1–3 से पीछे थी, लेकिन उसके बाद भारतीय जांबाजों ने शानदार वापसी करते हुए देशवासियों को जश्न मनाने का मौका दिया। यह भी एक उत्साहजनक तथ्य है कि 19 सदस्यीय हॉकी टीम में 13 खिलाड़ियों ने पहली बार ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था।

एशियाई खेलों में भारतीय हॉकी टीम का प्रदर्शन भी कमोबेश उल्लेखनीय रहा है। हाल ही में, 23 सितंबर से 08 अक्टूबर 2023 तक चीन के हांगझोउ शहर में आयोजित 19वें एशियाई खेलों में भारतीय हॉकी टीम ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। भारतीय टीम इस पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही। उसने लगातार सात मैच जीते। भारत को पूल–ए में पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, सिंगापुर, जापान और बांग्लादेश के साथ रखा गया था। पहले मैच में भारत ने उज्बेकिस्तान को 16–0 से रौंदा। दूसरे मैच में सिंगापुर को 16–1 से परास्त किया। तीसरे मैच में जापान को 4–2 से हराया। वहीं, चौथे मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 10–2 से करारी शिकस्त दी। यह भारत की पाकिस्तान पर सबसे बड़ी जीत रही। पाँचवें और आखिरी ग्रुप मैच में भारत ने बांग्लादेश को 12–0 से हराया था। सेमीफाइनल में भारत ने दक्षिण कोरिया को 5–3 से शिकस्त दी। वहीं, फाइनल में जापान को 5–1 से हराकर स्वर्ण पर कब्जा किया। भारतीय हॉकी टीम ने पूरे टूर्नामेंट में कुल मिलाकर 68 गोल दागे, जो कि सबसे ज्यादा हैं। वहीं, उसके खिलाफ कुल नौ गोल हुए। भारत के लिए कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने सबसे ज्यादा 13 गोल दागे। वहीं, फॉरवर्ड मनदीप सिंह ने 12 गोल किए। अभिषेक ने नौ और वरुण कुमार ने आठ गोल दागे। हरमनप्रीत ने इन एशियाई खेलों में तीन मैचों में गोल की हैट्रिक लगाई। यह हॉकी में भारत का चौथा स्वर्ण रहा। इससे पहले 1966, 1998 और 2014 में भारत ने सोना पर कब्जा जमाया था। वहीं, एशियाड में कुल मिलाकर भारतीय हॉकी टीम का यह 16वां पदक रहा। चार स्वर्ण के अलावा टीम इंडिया ने 1958, 1962, 1970, 1974, 1978, 1982, 1990, 1994, 2002 एशियाई खेलों में रजत जीता था, जबकि 1986, 2010 और 2018 एशियाई खेलों में कांस्य पर कब्जा जमाया था।

हॉकी में हमारे शानदार और सफल इतिहास ने समय के साथ कुछ उल्लेखनीय खिलाड़ियों को जन्म दिया है। महानतम हॉकी खिलाड़ियों की सूची में सबसे पहला नाम आता है हॉकी के जादूगर ध्यानचन्द का। उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों की वजह से उन्हें हॉकी के जादूगर के रूप में जाना जाता है। 1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीत की हैट्रिक लगाने में ध्यानचंद (कुल 39 गोल) की महती भूमिका रही थी। ध्यानचंद ने अपने करियर में 400 से अधिक गोल किये और एक ऐसी विरासत छोड़ी जिसका मुकाबला करना बहुत कठिन लगता है। महान ध्यानचंद की तरह उनके भाई रूप सिंह भी एक शानदार खिलाड़ी थे। 1932 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक में रूप सिंह ने संयुक्त राज्य अमेरिका के खिलाफ मैच में अकेले 10 गोल किए थे और 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भी उन्होंने भारत को स्वर्ण पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने 9 गोल किये और सभी मैचों में गोल करने वाले वह एकमात्र भारतीय खिलाड़ी थे। आज़ादी से पहले भारतीय हॉकी टीम के लिए जो महत्व ध्यानचंद का था, वैसा ही महत्व आजादी के बाद बलबीर सिंह सीनियर का था। 1948, 1952 और 1956 में लगातार तीन स्वर्ण पदक जीतने के दौरान वह भारत के प्रमुख खिलाड़ियों में से एक थे। ओलंपिक पुरुष हॉकी फ़ाइनल (1952 में) में किसी खिलाड़ी द्वारा सर्वाधिक पाँच गोल करने का उनका ओलंपिक रिकॉर्ड अजेय है। वह भारत के अब तक के सर्वश्रेष्ठ सेंट्रल फॉरवर्ड साबित हुए थे। बलबीर सिंह 1975 में हॉकी विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम के प्रबंधक और मुख्य कोच थे। ओलंपिक में तीन हॉकी स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ियों में

से एक, उधम सिंह एक मजबूत रियर–गार्ड थे, लेकिन उनमें इनसाइड–फॉरवर्ड के रूप में खेलने की क्षमता भी थी। एक ऐसा खिलाड़ी जो अपने खेल में चतुराई के लिए जाना जाता था। उन्होंने चार ओलंपिक (1952 से 1964 तक) में भाग लिया था। लेस्ली क्लॉडियस को उधम सिंह के साथ हॉकी में चार ओलंपिक पदक जीतने वाले केवल दो भारतीय खिलाड़ियों में से एक होने का गौरव प्राप्त है। 1948, 1952 और 1956 में स्वर्ण पदक विजेता टीम का सदस्य होने के साथ ही उन्होंने 1960 में टीम की कप्तानी करते हुए रजत पदक भी जीता था। वह 100 कैप अर्जित करने वाले पहले खिलाड़ी थे। भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान अजीत पाल सिंह को दुनिया के सबसे असाधारण सेंटर–हाफ खिलाड़ियों में से एक माना जाता था। 1960 में पदार्पण करने के बाद अजीत ने खुद को टीम के एक प्रमुख सदस्य के रूप में स्थापित किया और 1975 में भारत को अपना एकमात्र विश्व कप जिताने में प्रमुख भूमिका निभाई। कुँवर दिग्विजय सिंह, जिन्हें आमतौर पर केडी सिंह 'बाबू' के नाम से जाना जाता है, को भारतीय हॉकी के अब तक के सर्वश्रेश्ठ इनसाइड राइट्स में से एक माना जाता है। उन्होंने ओलंपिक खेलों में दो स्वर्ण पदक (1948, 1952) जीते। वह 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान थे। शंकर लक्ष्मण 1956, 1960 और 1964 के ओलंपिक में दो स्वर्ण पदक और एक रजत पदक जीतने वाली भारतीय टीम के गोलकीपर थे। वह अंतर्राष्ट्रीय हॉकी टीम के कप्तान बनने वाले पहले गोलकीपर थे। वह 1966 के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान थे। आधुनिक समय के दिग्गज धनराज पिल्लै भारत के सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ियों में से एक रहे हैं। तीव्र आक्रामक रवैये के साथ एक बेहद अच्छे फॉरवर्ड खिलाड़ी, वह तेज फुटवर्क के साथ सटीक गोल करके दर्शकों मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनकी कप्तानी में भारत ने एशियाई खेलों में 32 साल के लंबे अंतराल के बाद 1998 में स्वर्ण पदक अपने नाम किया था। भारतीय हॉकी इतिहास में एक और कभी न भूलने वाला नाम है मोहम्मद शाहिद, जिनके बारे में कहा जाता है कि देश में उन जैसा प्रतिभाशाली हॉकी खिलाड़ी कोई दूसरा नहीं था। उन्हें हॉकी के खेल में सर्वश्रेष्ठ ड्रिबलर्स में से एक माना जाता है। वह उस भारतीय टीम के सदस्य थे जिसने मॉस्को में 1980 के ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक, 1982 के एशियाई खेलों में रजत और 1986 के एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीता था। गोलकीपर पी. आर. श्रीजेश एक ऐसे भारतीय हॉकी खिलाड़ी हैं जिन्होंने स्कूल में रहने तक ये नहीं सोचा था कि उन्हें हॉकी में करियर बनाना है। लेकिन इसके बाद श्रीजेश ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग छाप छोड़ी। वह टीम की दीवार बन गए और एक बेहतरीन लीडर भी, उनकी इस क़ाबिलियत ने उन्हें विश्व के सबसे बेहतरीन गोलकीपरों में से एक बना दिया। भारतीय पुरुष हॉकी टीम टोक्यो ओलंपिक–2020 में कांस्य पदक के मैच में 5–4 से आगे थी और आखिरी छह सेकेंड में जर्मनी को पेनल्टी कॉर्नर मिला था। भारतीय टीम की दीवार कहे जाने वाले गोलकीपर श्रीजेश ने जर्मनी के ड्रैग फिल्कर के स्ट्रोक को रोकते हुए भारत के लिए कांस्य पदक पक्का कर दिया और इसी के साथ भारत का ओलंपिक में हॉकी में पदक का 41 साल का सूखा खत्म हो गया। ऐतिहासिक पदक के बाद श्रीजेश ने कहा कि यह पदक उनके लिए 'पुनर्जन्म है।' उन्होंने उम्मीद जताई कि इस जीत से आने वाली पीढ़ी में कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी पैदा होंगे।

जब हम हॉकी के गौरवशाली इतिहास को देखते हैं तो यह पता चलता है कि हॉकी में हमारे गौरव का पहला सच्चा क्षण 1928 में आया, जब भारतीय टीम ने ओलंपिक में पहली बार भाग लेते हुए ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता था। इसने अगले पांच दशकों तक अंतर्राष्ट्रीय सर्किट पर भारतीय प्रभुत्व के युग की शुरुआत की। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में हमारे प्रदर्शन में निरंतरता की कमी झलकती है, लेकिन हम अभी भी दुनिया की शीर्ष टीमों में से एक हैं। यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन होगा कि वर्तमान में भारतीय हॉकी टीम का प्रदर्शन सुधारने में भारत सरकार के साथ–साथ ओडिशा सरकार और माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक जी का विशेष योगदान है। ओडिशा सरकार 2018 से भारतीय हॉकी टीमों की आधिकारिक प्रायोजक रही है। टोक्यो ओलंपिक खेलों में शानदार प्रदर्शन करने वाली भारतीय हॉकी टीमों के सम्मान समारोह में माननीय मुख्यमंत्री ने कहा, 'टीमों ने टोक्यो ओलंपिक में अपने शानदार प्रदर्शन के साथ इतिहास रचा है।' 'आपने टोक्यो में अपनी उत्साही लड़ाई से हम सभी को गौरवान्वित किया है। भारतीय हॉकी के पुनरुद्धार का गवाह बनने के लिए ये भारत के लिए बेहद भावनात्मक क्षण हैं।' "हम, ओडिशा में, इस बात से उत्साहित हैं कि हॉकी इंडिया के साथ हमारी साझेदारी ने देश के लिए यह बड़ी उपलब्धि हासिल की है। मेरा मानना है कि ओडिशा और हॉकी का पर्यायवाची बनना तय है। हम हॉकी इंडिया के साथ अपनी साझेदारी जारी रखेंगे। ओडिशा 10 और वर्षों तक भारतीय हॉकी टीमों का समर्थन करना जारी रखेगा'। 2016–17 से 2020–21 के दौरान केंद्र सरकार ने पुरुषों की हॉकी टीम पर 65 करोड़ से ज्यादा रुपए खर्च किए। केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने 02.12.2021 को राज्यसभा में एक लिखित उत्तर के जरिए इस बात की जानकारी दी थी। जवाब के मुताबिक सीनियर पुरुष टीम पर 45.05 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं. वहीं, पुरुषों की जूनियर टीम को कोचिंग शिविरों, विदेशी प्रतियोगिताओं, घरेलू प्रतियोगिताओं, कोचों के वेतन के लिए इस अवधि के दौरान 20.23 करोड़ रुपए आवंटित किए गए। इसके अलावा हॉकी की 20 बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के लिए 2016–17 के बाद से खेलो इंडिया स्कीम के तहत 103.98 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं। अपने वादे पर खरा उतरते हुए ओडिशा सरकार ने भारतीय हॉकी टीम के आधिकारिक प्रायोजक के रूप में अपना अनुबंध 24 अप्रैल 2023 को अगले 10 साल के लिए बढ़ा दिया है। अब साल 2033 तक ओडिशा सरकार भारत की पुरुष और महिला टीम की प्रायोजक होगी। ओडिशा सरकार ने जूनियर और सीनियर दोनों स्तर पर हॉकी टीम की प्रयोजक बने रहने का फैसला किया है। इस प्रकार के विभिन्न प्रयासों से ही हम हॉकी की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने में सफल हो सकेंगे। जय हिंद।

अंतरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान

jkt'k dekj d.k*

23 अगस्त 2023 का दिन, भारत के इतिहास के सबसे गौरवमयी दिनों में से एक है। यह पल अविस्मरणीय है, यह क्षण अभूतपूर्व है। यह क्षण है विकसित भारत के शंखनाद का, नए भारत के जयघोश का। यह क्षण, भारत में नई ऊर्जा, नया विश्वास, नई चेतना का है। यह क्षण, भारत के उदयीमान भाग्य के आह्वान का है क्योंकि अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की यह अमृतवर्षा है जिसका संकल्प धरती पर लिया और चांद पर उसे साकार किया। हम अंतरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान के साक्षी बने हैं।

भारत के वैज्ञानिकों के परिश्रम और प्रतिभा से देश चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। अब चांद से जुड़े मिथक और कथानक भी बदल गए हैं। नई पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल गई है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों के साथ टीम चंद्रयान को, इसरो को और देश के सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा, ''भारत में तो हम सभी लोग धरती को मां कहते हैं और चांद को मामा बुलाते हैं। कभी कहा जाता था, चंदा मामा बहुत 'दूर' के हैं। अब एक दिन वो भी आएगा जब बच्चे कहा करेंगे– चंदा मामा बस एक 'टूर' के हैं।''

चंद्रयान–3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर साफ्ट लैंडिंग ऐतिहासिक उपलब्धि है, लेकिन इसके पीछे जिस तैयारी, सीख और धैर्य की भूमिका रही है– उसे कहीं ज्यादा बड़ा दर्जा देना होगा। इसरो सितंबर, 2019 में चंद्रयान–2 की क्रैश लैंडिंग ने हर भारतवासी के दिल में एक कचोट पैदा की थी। हमारे विज्ञानी चंद्रयान–2 की नाकामी में भी एक सबक देख रहे थे। यह एक सच्चाई है कि चंद्रयान–2 की असफलता ने भावी अंतरिक्ष कार्यक्रमों को लेकर हमारे विज्ञानियों के समक्ष सवाल खड़े कर दिए थे। अंतरराष्ट्रीय पटल पर आलोचकों को यह कहने का मौका मिल गया था कि अंतरिक्ष में अमेरिका–रूस–चीन की बराबरी का कोई अभियान छेड़ने से पहले भारत को गरीबी–बेरोजगारी जैसी दुश्वारियों का कोई तोड निकालना चाहिए। ऐसे में चंद्रयान–3 को चाँद पर उतारकर इसरो ने उन सभी आलोचकों को एक झटके में जवाब दे दिया है जो भारत को अंतरिक्ष के मोर्चे पर उक्त तीन देशों से कमतर मानते रहे हैं।

चंद्रयान महाअभियान की यह उपलब्धि, भारत की उड़ान को चंद्रमा की कक्षाओं से आगे ले जाएगी। यह सौरमंडल की सीमाओं का सामर्थ्य परखेंगे और मानव के लिए ब्रह्मांड की अनंत संभावनाओं को साकार करने के लिए भी काम करेंगे। अंतरिक्ष की यह उड़ान यही नहीं थमने वाली, नए भारत ने भविष्य के लिए कई बड़े और महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए हैं। सूर्य का अध्ययन करने वाली पहली अंतरिक्ष आधारित भारतीय वेधशाला आदित्य एल–1 का लांच भी 2 सितंबर 2023 को हुआ। इसरो ने विश्व में दूसरे और देश के ऐसे पहले उपग्रह (एक्सपोसैट) का सफल प्रक्षेपण किया, जो अंतरिक्ष में रेडिएशन, आकाशगंगा, पल्सर और ब्लैक होल का अध्ययन कर इनके बारे में जानकारियां जुटाएगा। हमें उम्मीद है कि इसरो को अपने इस अभियान में भी शानदार सफलता मिलेगी और आसमान से आने वाली हानिकारक किरणों व अन्य चीजों की जानकारी हासिल करके वैज्ञानिक उनका निदान करेंगे। यह हमारे लिए सचमुच गर्व की बात है। यह भारत के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण रॉकेट पीएसएलवी–सी57 के साथ अंतरिक्ष में भेजा गया था। साल 2024 हमारे देश के लिए एक शानदार उपलब्धि लेकर आएगा, क्योंकि इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार, सूर्ययान करीब चार महीनों के बाद सूरज के करीब पहुंचेगा। चंद्रयान–2 की असफलता के बाद इसरो के वैज्ञानिकों ने नए सिरे से काम किया और चंद्रयान–3 को चांद की सतह पर उतार दिया। चंद्रयान मिशन की कामयाबी से देश का जनमानस इस कदर आह्लादित था कि पूरे देश में मानो त्योहार जैसा माहौल बन गया था। भारत की यह सफलता कितनी बड़ी है, इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि चांद के जिस हिस्से में हमारा यान उतरा, वहां आज तक दुनिया के किसी देश को अपने यान उतारने में कामयाबी नहीं हासिल हो सकी है। इसरो के तेजी से आसमान की ओर बढ़ते कदमों और पृथ्वी से इतर ग्रहों के रहस्यों को खोलने के उसके प्रयासों को देखकर अब पूरी दुनिया दांतों तले अपनी अंगुली दबा रही है। अगर एक्सपोसैट अपने मकसद में कामयाब रहा, तो नासा को भी इसरो का लोहा मानना पड़ेगा। इसके बाद शुक्र भी इसरो के लक्ष्यों में से एक है। गगनयान के जरिए देश अपने पहले मानव स्पेस फ्लाइट मिशन के लिए भी पूरी तैयारी के साथ जुटा है। भारत आज देश ही नहीं, दुनिया के अंतरिक्ष मिशन का भी केंद्र बनकर उभर रहा है।

चंद्रमा के जिस हिस्से पर चंद्रयान उत्तरा है, भारत ने उस स्थान को 'शिव शक्ति' नाम दिया है। इसकी व्याख्या करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि शिव में मानवता के कल्याण का संकल्प समाहित है और 'शक्ति' से हमें उन संकल्पों को पूरा करने का सामर्थ्य मिलता है।

विज्ञान और तकनीक देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार है। आज पूरी दुनिया भारत की साइंटिफिक स्प्रिट का, हमारी टेक्नोलॉजी का और हमारे सैंटिफिक टेंपरामेंट का लोहा मान चुकी है। चंद्रयान महाअभियान सिर्फ भारत की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की सफलता है।

आजाद भारत में भारत की जिन सफलताओं ने करोड़ों देशवासियों को प्रेरणा दी, उन्हें आत्मविश्वास दिया, उनमें अंतरिक्ष क्षेत्र की उपलब्धियों का विशेष योगदान है। कोई वैज्ञानिक हो या

---

* आशुलिपिक ग्रेड–I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

किसान–मजदूर, विज्ञान की तकनीकियों को समझता हो या नहीं लेकिन इन सबसे ऊपर नए भारत का अंतरिक्ष मिशन देश के जन गण के मन का मिशन बन जाता है। चंद्रयान–2 का मिशन हो या फिर चंद्रयान–3 का मिशन, देश और दुनिया ने इस दौरान भारत की भावनात्मक एकजुटता को देखा है। भारत का अंतरिक्ष अभियान एक तरह से 'आत्मनिर्भर भारत' की सबसे बड़ी पहचान है।

आज दुनिया की 17.18 प्रतिशत मानव आबादी भारत में रहती है। ऐसे विज्ञान से जुड़े कार्य, जिनसे भारत की जरूरतें पूरी होंगी, उनसे विश्व की 17.18 प्रतिशत मानवता को गति मिलेगी, जिसका प्रभाव संपूर्ण मानवता पर पड़ेगा। सरकार की इसी सोच का परिणाम है कि भारत आज चांद तक अपना परचम लहरा रहा है। बेशक आने वाले दिनों में भारत की अंतरिक्ष ताकत नई ऊंचाई पर होगी। वर्तमान केंद्र सरकार ने इसके लिए सबसे पहले पुरानी सोच को बदला और फिर अंतरिक्ष क्षेत्र में इनोवेशन के लिए सरकार, स्टार्टअप, एक–दूसरे से सहयोग का मंत्र दिया। यह नई सोच, नया मंत्र इसलिए जरूरी है क्योंकि भारत के लिए अब ये परंपरागत नहीं, संभावित इनोवेशन का समय है। यह तभी संभव है जब सरकार संचालक की बजाय योग्य बनाने के लिए सहयोग की भूमिका निभाए। यही कारण है कि आज केंद्र सरकार रक्षा से लेकर अंतरिक्ष क्षेत्र तक, अपनी विशेषज्ञता को साझा कर रही है। निजी क्षेत्र के लिए लॉन्च पैड उपलब्ध करा रही है। इसरो की सुविधाओं को निजी क्षेत्र के लिए खोला गया है। स्पेस सेक्टर से जुड़े सभी मामलों में इन–स्पेस एक सिंगल विंडो, स्वतंत्र एजेंसी के तौर पर काम कर रही है। इससे प्राइवेट सेक्टर के प्लेयर्स को, उसके प्रोजेक्ट्स को और गति मिलनी शुरू हो गई है।

इस समय दुनिया में स्पेस इंडस्ट्री का आकार करीब 400 बिलियन डॉलर का है। 2040 तक इसके एक ट्रिलियन डॉलर होने की संभावना है। इसमें भारत की भागीदारी केवल 2% ही थी जबकि भारत के पास क्षमता भी है और अनुभव भी। अब दुनिया के बड़े–बड़े विशेषज्ञ भी कह रहे हैं कि अगले कुछ वर्षों में भारत की स्पेस इंडस्ट्री 8 बिलियन डॉलर से बढ़कर 16 बिलियन डॉलर की हो जाएगी। केंद्र सरकार भी गंभीरता को समझते हुए स्पेस सेक्टर में लगातार क्रांतिकारी सुधार कर रही है। युवा भी इसमें बेहद रूचि ले रहे हैं। यही कारण है कि पिछले चार साल में स्पेस सेक्टर में काम करने वाले स्टार्टअप की संख्या 4 से बढ़कर लगभग 150 हो गई है। यह दिखाता है कि अनंत आकाश में कितनी अनंत संभावनाएं भारत का इंतजार कर रही हैं। सरकारी कंपनियों, स्पेस इंडस्ट्री, स्टार्टअप और संस्थाओं के बीच सामंजस्य के साथ आगे बढ़ने के लिए वर्तमान सरकार ने, नई भारतीय अंतरिक्ष नीति को मंजूरी दी है। स्पेस सेक्टर में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रही है।

अंतरिक्ष में स्पेस सेक्टर में भी नए सुधारों के जरिए भारत एक ग्लोबल गेम चेंजर की भूमिका में सामने आ रहा है। प्रकृति के लिए विज्ञान का उपयोग और आध्यात्मिकता के साथ प्रौद्योगिकी का समागम गतिशील भारत की आत्मा है। आज का भारत इनोवेट (नवाचार) कर रहा है, इंप्रूव (सुधार) कर रहा है और पूरी दुनिया को इंफ्लूएंस (प्रभावित) भी कर रहा है। भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र का बजट 10 वर्षों में ही दोगुना से अधिक बढ़ा है। अब भारत की धरती से विदेशी उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण हो रहा है। युवाओं–छात्राओं के उपग्रह लांचिंग की संख्या बढ़ी है। इसरो के प्रक्षेपण दर में भी बढ़ोतरी हुई है। इन–स्पेस ने उद्योग, शिक्षा और इनोवेशन का एक ईको–सिस्टम तैयार किया है जो अंतरिक्ष अनुसंधान को नई दिशा दे रहा है। चंद्रयान मिशन भारतीय हृदय में भारतीय आत्मा का रूप बनी है। महर्षि पतंजलि का एक सूत्र है– परमाणु परम महत्त्व अन्तः अस्य वशीकारः।। यानि जब हम किसी लक्ष्य के लिए पूरी तरह समर्पित हो जाते हैं तो परमाणु से लेकर ब्रह्मांड तक सब कुछ वश में आ जाता है। 2014 के बाद से भारत ने जिस तरह साइंस और टेक्नोलॉजी पर जोर देना शुरू किया है, वह बड़े बदलावों का कारण बना है। स्पेस सेक्टर में भी नए सुधारों के जरिए भारत एक ग्लोबल गेम चेंजर की भूमिका में सामने आ रहा है।

नया भारत तीन आई यानी इंटेंट, इनोवेशन और इम्प्लीमेंटेशन के मंत्र पर आगे बढ़ रहा है। दरअसल, किसी भी सशक्त राष्ट्र के लिए भविष्य में सुरक्षा के मायने क्या होंगे, स्पेस टेक्नोलॉजी इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है। स्पेस टेक्नोलॉजी भारत की उदार सोच वाली स्पेस कूटनीति की नई परिभाषाओं को गढ़ रही है, नई संभावनाओं को जन्म दे रही है। इसका लाभ कई अफ्रीकन देशों को, कई अन्य छोटे देशों को हो रहा है। ऐसे 60 से ज्यादा विकासशील देश हैं, जिनके साथ भारत अपनी स्पेस साइंस को साझा कर रहा है। साउथ एशिया सैटेलाइट इसका एक प्रभावी उदाहरण है। अगले साल तक, आसियान के दस देशों को भी भारत के सैटेलाइट डाटा तक रीयल–टाइम पहुंच मिलेगी। यहां तक कि यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देश भी भारतीय सैटेलाइट डेटा का उपयोग कर रहे हैं। आने वाले समय में देश निरंतर ऐसी तकनीकों का नेतृत्व करेगा, जो भारत में विकसित होंगी, वो भारत को ग्लोबल लीडर बनाएंगी।

केंद्र सरकार ने अंतरिक्ष कार्यकलापों के संवर्धन और प्राधिकरण के लिए एकल खिड़की एजेंसी के रूप में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र का गठन किया है।

इस समय भारत अपनी आजादी के अमृतकाल के शुरुआती वर्षों में है। जिसके सामने 2047 के स्पष्ट लक्ष्य हैं– भारत को विकसित बनाना, आत्मनिर्भर बनाना। भारत की आर्थिक प्रगति हो या सतत विकास लक्ष्य या फिर इनोवेशन के लिए समावेशी ईको–सिस्टम का निर्माण करना, तकनीक हर कदम पर जरूरी है। इसलिए आज भारत, एक नई सोच और 360 समग्र दृष्टिकोण के साथ इस क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। भारत तकनीक को अपना दबदबा कायम करने का माध्यम नहीं बल्कि देश की प्रगति को गति देने का एक उपकरण मानता है। भारत के युवा मस्तिष्क को इनोवेशन की तरफ प्रेरित करने के लिए, बीते 9 वर्षों में देश में एक मजबूत बुनियाद बन चुकी है। कुछ साल पहले शुरू की गई अटल टिंकरिंग लैब, आज देश की इनोवेशन नर्सरी बन रही हैं। आज देश के 35 राज्यों में, 700 जिलों में 10 हजार से ज्यादा अटल टिंकरिंग लैब बनाई जा चुकी हैं। इसमें लगभग 60% अटल टिंकरिंग लैब सरकारी और ग्रामीण स्कूलों में खुली हैं। आज अटल टिंकरिंग लैब में 75 लाख से ज्यादा छात्र

12 लाख से ज्यादा इनोवेशन प्रोजेक्ट पर जी–जान से जुटे हुए हैं। अगले 25 वर्षों में भारत जिस ऊंचाई पर होगा, उसमें भारत की वैज्ञानिक शक्ति को भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। विज्ञान में इच्छाशक्ति के साथ जब देश की सेवा का संकल्प जुड़ जाता है, तो नतीजे भी अभूतपूर्व आते हैं। इसमें संदेह नहीं कि भारत का वैज्ञानिक समुदाय, भारत को 21वीं सदी में वो मुकाम हासिल कराएगा, जिसका वो हमेशा हकदार रहा है। आज का भारत जिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ रहा है, उसके नतीजे भी दिख रहे हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भारत तेजी से विश्व के शीर्ष देशों में शामिल हो रहा है। 2015 तक भारत 130 देशों की ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 81वें नंबर पर था लेकिन, 2022 में छलांग लगाकर 40वें नंबर पर पहुंच गया है। आज भारत, पीएचडी के मामले में दुनिया में टॉप–3 देशों में है। आज भारत स्टार्ट अप ईको–सिस्टम के मामले में दुनिया के टॉप–3 देशों में है। स्पेस सेक्टर में सुधारों का परिणाम है कि आज इसमें आईं 60 से ज्यादा भारतीय प्राइवेट कंपनियां नेतृत्व कर रही हैं।

विज्ञान की उपलब्धियां बन रहीं उत्सव शास्त्रों में कहा गया है – ज्ञानम् विज्ञान सहितम् यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात।। अर्थात, ज्ञान जब विज्ञान के साथ जुड़ता है, जब ज्ञान और विज्ञान से हमारा परिचय होता है, तो संसार की सभी समस्याओं और संकटों से मुक्ति का रास्ता अपने आप खुल जाता है। समाधान का, विकास का और इनोवेशन का आधार विज्ञान ही है। इसी प्रेरणा से आज का नया भारत, जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ ही जय अनुसंधान का आह्वान करते हुए आगे बढ़ रहा है। भारतीय वैज्ञानिक सी.वी. रमन, जगदीश चंद्र बोस, सत्येंद्रनाथ बोस, मेघनाद साहा, एस चंद्रशेखर जैसे अनगिनत वैज्ञानिक अपनी नई–नई खोज सामने ले कर आ रहे थे तथा इन सभी वैज्ञानिकों ने भविष्य को बेहतर बनाने के कई रास्ते खोल दिए। किंतु हमने अपने वैज्ञानिकों के काम को उतना सेलिब्रेट नहीं किया, जितना किया जाना चाहिए था। इस वजह से विज्ञान को लेकर भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से में उदासीनता का भाव पैदा हो गया। जब हम कला को प्रोत्साहित करते हैं तो नए कलाकारों को प्रेरणा भी देते हैं। उसी तरह जब हम अपने वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को सेलिब्रेट करते हैं तो विज्ञान हमारे समाज और संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बन जाती है। अब नया भारत अपने देश के वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को जमकर सेलिब्रेट करता है, गौरवगान करता है, महिमामंडन करता है। नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री के शब्दों में ''हमारी युवा पीढ़ी को निरंतर प्रेरणा मिलती रहे, इसके लिए निर्णय लिया गया है कि 23 अगस्त को जब भारत ने चंद्रमा पर तिरंगा फहराया, उस दिन को अब हिंदुस्तान 'नेशनल स्पेस डे' के रूप में मनाएगा। अब हर वर्ष देश 'नेशनल स्पेस डे' साईस, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन की स्पिरिट को सेलिब्रेट करेगा, तो ये हमें हमेशा प्रेरित करता रहेगा।''

भारत का रिसर्च और इनोवेशन इकोसिस्टम, दुनिया में श्रेष्ठ हो, अमृतकाल में इसके लिए पूरी ईमानदारी के साथ नया भारत जुट गया है, ताकि अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीक आम नागरिकों के जीवन में सुगमता के साथ–साथ सुशासन में भी नए अध्याय जोड़ने का अभियान जारी रहे।

दरअसल, अंतरिक्ष क्षेत्र, 140 करोड़ देशवासियों की प्रगति का एक बड़ा माध्यम है, जो सामान्य जन–जीवन के लिए बेहतर मैपिंग, इमेजिंग और कनेक्टिविटी की सुविधा में सहयोग करती है। अंतरिक्ष क्षेत्र यानी उद्यमियों के लिए शिपमेंट से लेकर डिलीवरी तक बेहतर स्पीड, किसानों और मछुआरों के लिए बेहतर भविष्यवाणी, बेहतर सुरक्षा और आमदनी, पर्यावरण की बेहतर निगरानी, प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी, हजारों–लाखों लोगों के जीवन की रक्षा है। 21वी सदी के इस समय में आपकी–हमारी जिंदगी में हर रोज स्पेस टेक्नोलॉजी की भूमिका बढ़ती जा रही है। स्पेस–टेक एक बड़ी क्रांति का आधार बनने वाला है। स्पेस–टेक अब केवल दूर स्पेस की नहीं बल्कि हमारे पर्सनल स्पेस की टेक्नोलॉजी बनने जा रही है। सामान्य मानवी के जीवन में हम टीवी खोलते हैं, इतने सारे चौनल हमें उपलब्ध हैं। यह सैटेलाइट की मदद से हो रहा है। कहीं आना–जाना हो, ये देखना हो कि ट्रैफिक है या नहीं है, सैटेलाइट की मदद से हो रहा है। शहरी नियोजन के इतने काम हैं, कहीं रोड बन रही है, कहीं ब्रिज बन रहा है, कहीं स्कूल, कहीं अस्पताल बन रहे हैं, कहीं ग्राउंड वॉटर टेबल चेक करना है, इंफ्रा प्रोजेक्ट्स की मॉनीटरिंग करनी है, ये सारे काम सैटेलाइट की मदद से हो रहे हैं। तटवर्ती क्षेत्र में योजना और विकास के लिए भी स्पेस टेक्नोलॉजी की बड़ी भूमिका है। समुद्र में जाने वाले मछुआरों को भी सैटेलाइट के जरिए फिशिंग और समुद्री तूफान की जानकारी पहले से ही मिल जाती है। आज बारिश के जो अनुमान आ रहे हैं और करीब–करीब सही निकल रहे हैं। उसी प्रकार से जब साइक्लोन आता है, उसके बारे में सारी जानकारियां सैटेलाइट की मदद से मिल रही हैं। इतना ही नहीं, कृषि क्षेत्र में चाहे फसल बीमा योजना हो, सॉयल हेल्थ कार्ड का अभियान हो, सभी में स्पेस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हो रहा है। बिना स्पेस टेक्नोलॉजी के हम आज के आधुनिक उड्डयन क्षेत्र की कल्पना भी नहीं कर सकते। भविष्य में ऐसे ही अनेक क्षेत्रों में स्पेस–टेक का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा बढ़ने वाला है। केंद्र सरकार स्पेस टेक्नोलॉजी को सामान्य मानवी के लिए ज्यादा से ज्यादा सुलभ बनाने की दिशा में काम कर रही है ताकि यह ईज ऑफ लिविंग को बढ़ाने का माध्यम बने।

केंद्र सरकार निरंतर टेक्नोलॉजी के लोकतंत्रीकरण के लिए काम कर रही है। तकनीक का ही कमाल है कि आज भारत में हर दिन 7 करोड़ ई–प्रमाणीकरण होते हैं। भारत के को–विन प्लेटफार्म के माध्यम से देश में 220 करोड़ से अधिक वैक्सीन डोज लगी है। बीते वर्षों में भारत ने 28 लाख करोड़ रुपये से अधिक, सीधे अपने नागरिकों के बैंक खातों में भेजे हैं। जनधन योजना के माध्यम से अमेरिका की कुल आबादी से भी ज्यादा लोगों के बैंक खाते खोले हैं। भारत में टेक्नोलॉजी सिर्फ शक्ति देना भर नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का मिशन है। ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी की बात करें तो 2014 से पहले भारत में 6 करोड़ यूजर्स थे। आज ब्रॉडबैंड यूजर्स की संख्या 80 करोड़ से ज्यादा है। 2014 से पहले भारत में इंटरनेट कनेक्शन की संख्या 25 करोड़ थी। आज ये 85 करोड़ से भी ज्यादा है। आज भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था देश की पूरी अर्थव्यवस्था से भी लगभग ढाई गुना तेजी से आगे बढ़ रही है। भारत के विकास की इसी गति को देखकर कहा जाता है यह दशक, भारत के तकनीक का दशक है। आज भारत का हर नागरिक इस बदलाव को स्पष्ट

तौर पर महसूस कर रहा है कि अब सरकार के साथ संवाद करना कितना आसान हो गया है। यानी सरकार तक देशवासी, आसानी से अपनी बात पहुंचा पा रहे हैं, और उसका समाधान भी उन्हें तुरंत मिल रहा है। जैसे, टैक्स से संबंधित शिकायतें पहले बहुत ज्यादा होती थीं और उसके कारण उसके माध्यम से करदाताओं को कई तरीके से परेशान किया जाता था। इसलिए तकनीक की मदद से टैक्स की पूरी प्रक्रिया को फेसलेस कर दिया। मिशन कर्मयोगी के द्वारा सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण के पीछे उद्देश्य यही है कि कर्मचारियों को जन–केंद्रित बनाया जाए।

एक समय था जब तकनीक सामान्य भारतीय की पहुंच से बाहर थी। लेकिन आज यह सबके लिए उपलब्ध है। आज हर कोई डिजिटल पेमेंट का इस्तेमाल कर रहा है। आज भारत दुनिया के उन देशों में है, जहां सबसे ज्यादा इंटरनेट डेटा इस्तेमाल होता है। ग्रामीण इलाकों में शहरी इलाकों की तुलना में इंटरनेट यूजर ज्यादा हैं। इससे लोगों के सामने जानकारियों, संसाधनों और अवसरों की एक नई दुनिया खुल रही है। जैम ट्रिनिटी हो, जैम पोर्टल हो, कोविन पोर्टल हो या किसानों के लिए ई–नाम, केंद्र सरकार ने तकनीक का उपयोग समावेशक के रूप में किया है।

तकनीक का सही तरीके से, सही समय पर उपयोग, समाज को नई शक्ति देता है। आज भारत में जीवन चक्र के हर पड़ाव के लिए कोई न कोई तकनीकी समाधान तैयार हो रहा है। जन्म के समय, ऑनलाइन बर्थ सर्टिफिकेट की सुविधा है। बच्चा जब स्कूल की शुरुआत करता है तो उसके पास ई–पाठशाला और दीक्षा जैसे निःशुल्क ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म हैं। आगे बढ़ने पर वो पोर्टल पर स्कॉलरशिप के लिए अप्लाई कर सकता है। जब वो अपनी नौकरी शुरू करता है तो उसके पास यूनिवर्सल एक्सेस नंबर (UAN) की सुविधा है ताकि नौकरी बदलने पर भी उसे कोई भी दिक्कत न आए। किसी बीमारी की स्थिति में वो तुरंत आज ई–संजीवनी की मदद से अपने उपचार की व्यवस्था कर सकता है। बुजुर्गों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाणन की सुविधा है। रोजमर्रा की गतिविधियों में हर कदम पर तकनीकी समाधान देश के नागरिकों की मदद कर रहे हैं। अगर उसे जल्दी पासपोर्ट बनवाना है तो एम–पासपोर्ट सेवा है, हवाई अड्डे पर बिना किसी परेशानी यात्रा के लिए डिजी यात्रा एप है। दस्तावेजों को रखने के लिए डिजीलॉकर है। इन सारे प्रयासों से सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने और ईज ऑफ लिविंग बढ़ाने में मदद मिली है।

आज भारत दुनिया के उन गिने–चुने देशों में से एक है जिसके पास अंतरिक्ष में शुरू से अंत तक की क्षमता है। स्पेस टेक्नोलॉजी के सभी पहलुओं जैसे सैटेलाइट्स, लॉन्च व्हीकल्स, एप्लीकेशन्स से लेकर इंटर–प्लेनेटरी मिशन में महारत हासिल है। यही कार्यक्षमता एक ब्रांड बन रही है। आज जब सूचना युग से हम अंतरिक्ष युग की तरफ बढ़ रहे हैं, तब इस क्षमता की ब्रांड वैल्यू को और सशक्त करना है। भारत जब अपनी ताकत से आगे बढ़ेगा तो ग्लोबल स्पेस सेक्टर में हमारी हिस्सेदारी का बढ़ना तय है।

21वीं सदी टेक्नोलॉजी ड्रिवेन है। दुनिया में वहीं देश आगे बढ़ने वाला है, जिसकी साइंस और टेक्नोलॉजी में महारथ होगी। 2047 में देश को विकसित भारत बनाने के सपने को पार करने के लिए हमें साइंस और टेक्नोलॉजी की राह पर और अधिक मजबूती से आगे बढ़ना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार ''एक समय था, जब भारत के पास जरूरी तकनीक नहीं थी, सहयोग भी नहीं था। हमारी गिनती 'थर्ड वर्ल्ड' यानि 'थर्ड रो' में खड़े देशों में होती थी। वहां से आज भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। आज ट्रेड से लेकर टेक्नोलॉजी तक, भारत की गिनती पहली पंक्ति, यानी 'फर्स्ट रो' में खड़े देशों में हो रही है।''

आदित्य एल–1 का अंतरिक्ष यान सूर्य के व्यवस्थित अध्ययन के लिए सात वैज्ञानिक पेलोड यानी उपकरण ले गया है, यह सभी स्वदेशी रूप से विकसित किए गए हैं। आदित्य एल–1 में भेजे गए पेलोड विद्युत चुंबकीय और कण के साथ चुंबकीय क्षेत्र डिटेक्टर का उपयोग करके फोटो स्फीयर, क्रोमोस्फीयर और सूर्य की सबसे बाहरी परतों का निरीक्षण करेंगे। पीएसएलवी–सी57 रॉकेट के जरिये आदित्य एल–1 ने पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर की दूरी तय कर सूर्य–पृथ्वी के लैग्रेज पॉइंट–1 यानी सूर्य के चारों ओर के प्रभामंडल कक्षा तक पहुंचने की यात्रा शुरू कर दी है। यहां तक पहुंचने में करीब 125 दिन यानी लगभग 4 महीने का समय लगेगा। र्य–पृथ्वी के लैग्रेंज पॉइंट एल–1 के चारों ओर प्रभामंडल कक्षा में सेटेलाइट को स्थापित किए जाने का बड़ा फायदा यह होता है कि वह बिना किसी ग्रहण के लगातार सूर्य को देखता रहता है।

जहां तक देश के भावी मिशन का सवाल है, गगनयान इसरो का सबसे महत्त्वाकांक्षी मिशन है। इस मिशन के जरिए भारत अपने अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजने की योजना बना रहा है। गगनयान में कुल तीन अंतरिक्ष मिशन होंगे जिसमें पहले दो मानवरहित होंगे। भारत जल्द ही एक्सपोसेट मिशन पर काम शुरू करेगा। इस मिशन की योजना अंतरिक्ष स्रोतों की गतिशीलता का अध्ययन करने की है। यह सैटेलाइट विशम परिस्थितियों में खगोलीय एक्स रे स्रोतों की गतिशीलता का अध्ययन करेगी। तारों का अध्ययन करने वाले देश के पहले मिशन में इसका इस्तेमाल किया जाएगा। स्पेस डाकिंग तकनीक एक ऐसी तकनीक है जिसकी सहायता से मानव को एक अंतरिक्ष यान से दूसरे अंतरिक्ष यान में भेज पाना संभव होता है। अतः स्पेस डाकिंग अंतरिक्ष स्टेशन के संचालन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

दीपक ढींगरा, प्रोफेसर, आईआईटी, कानपुर के अनुसार चंद्रयान के उपकरण हमें सैकड़ों तरह के चित्र और आंकड़े देंगे, जिनसे हम वहां ठोस, द्रव, गैस के रूप में तत्वों की मौजूदगी, उनकी मात्रा, प्रकार, बनावट आदि के बारे में अधिक जान सकेंगे। इसके अलावा, इस अभियान द्वारा चंद्रमा से हम पृथ्वी, सूर्य और आकाशगंगा के तमाम अनजान सितारों के बारे में भी सूचनाओं के सिरे तलाशेंगे। यहां हमें कुछ ऐसे तथ्य–आंकड़े मिल सकते हैं, जो प्लेटेनरी डिफेंस (खगोलीय सुरक्षा) का ढांचा बनाने में मदद करेंगे। ऐसी सूचनाएं पूरी दुनिया के लिए जरूरी हैं।

चंद्रयान–3 से चंद्रमा पर मौजूद तत्वों–खनिजों के बारे में अधिकाधिक जानकारियां मिलेंगी। चंद्रमा पर सोडियम मौजूद है, पर वह कितनी मात्रा में है, यह पता नहीं है। यह एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर के डाटा से पता चल जाएगा। चंद्रयान में अब तक का सबसे सक्षम एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर लगा है, जो 25 किलोमीटर के दायरे तक के तत्वों से परावर्तित एक्स–रे का डाटा दे सकेगा। इनके परीक्षण से तत्वों की मौजूदगी सटीक रूप से पता चलेगी। ऐसे ही भूकंपमापक के डाटा से चंद्रमा पर चंद्रकंपों की स्थिति पता चल सकेगी। हम यह भी जान सकेंगे कि पृथ्वी की तरह चंद्रमा के गर्भ में कोर (तरल केंद्र) है या नहीं?

अंतरिक्ष में जीवन की खोज की दिशा में चंद्रयान–3 की खास भूमिका होगी। इसके आर्बिटिंग प्लेटफॉर्म पर एक खास उपकरण लगा है, जो चंद्रमा के निकट से धरती पर जीवन के पैरामीटर को रिकॉर्ड करेगा। फिर आकाशगंगा के अन्य तारों–ग्रहों का अध्ययन कर उन पैरामीटर के आधार पर परखेगा। संभव है, किसी ग्रह पर उनमें से कुछ पैरामीटर मिल सकें। अगर ऐसा हुआ, तो अंतरिक्ष में पृथ्वी के सिवाय कहीं और भी जीवन की दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन शुरू हो सकेगा। ऐसी तमाम सूचनाएं भारत को बड़ी अंतरिक्ष ताकत बनाने में मददगार होंगी। इस क्षेत्र में हमसे आगे चल रहे देश हमारे साथ और बेहतर समन्वय बनाएंगे। सूचनाओं की साझेदारी बढ़ेगी, तो अन्य कई आयाम खुलेंगे। हमारा यान भेजने का अनुभव और दक्षता देखते हुए दुनिया के तमाम देश हमसे अपने यान और सैटेलाइट भेजने में मदद लेंगे। इसका व्यावसायिक उपयोग भी हो सकता है। किसी भी क्षेत्र में बड़ी सफलता व्यक्ति और देश को दुनिया में खास पहचान देती है। अंतरिक्ष की यह सफलता विदेश में हमारे मेधावी छात्रों को भी बहुत फायदा पहुंचाएगी। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को ज्यादा सहयोगी मिलेंगे।

इसरो के पूर्व विज्ञानी श्री मनीष पुरोहित के अनुसार चंद्रयान की सफलता वैश्विक अंतरिक्ष मानचित्र पर भारत की क्षमताओं में नया आत्मविश्वास पैदा करने के साथ ही उसे एक आदर्श के रूप में भी स्थापित करेगी। इसरो के इस अभियान ने अंतरिक्ष अनुसंधान पर अपनी ऐसी अमिट छाप छोड़ी है, जो मिटाए नहीं मिट सकेगी। वास्तव में, चंद्रयान–3 के माध्यम से दक्षिणी ध्रुव पर विजयी लैंडिंग तक की यात्रा मानवीय नवाचार और अटल समर्पण का एक अनुपम उदाहरण है। इसका पूरा श्रेय भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो के उस परिवेश को जाता है, जहां ऐसी आकांक्षाओं को संकल्प के पंख लगे। इसरो की सफलता न केवल चंद्रमा से से जुड़े अन्वेषण को नया आयाम देगी, बल्कि वहां स्थायी मानव बस्तियों की बसावट का सपना भी दिखा सकती हैं।

इसरो की यह सफलता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारत को सिरमौर बनाने के साथ ही अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में देश के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलने वाली है। भारत का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक वैश्विक अंतरिक्ष आर्थिकी में 9% की हिस्सेदारी हासिल करे। चंद्रयान–3 की सफलता इसमें सहायक सिद्ध होगी। यह मिशन वैश्विक अंतरिक्ष मानचित्र पर भारत की क्षमताओं में एक नया आत्मविश्वास उत्पन्न करेगा। इसरो का किफायती, लेकिन प्रभावी दृष्टिकोण दुनिया भर में प्रशंसित है। साथ ही, गगनयान भारत की एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनने की दिशा में एक महत्ववपूर्ण कदम के रूप में कार्य करेगा। इसरो के प्रमुख सोमनाथ ने कहा है कि 2024 को गगनयान का वर्ष नामित किया गया है। इस साल गगनयान मिशन के लिए कई परीक्षण उड़ानें होंगी। अंतरिक्ष में चालक दल रहित यानी रोबोटिक अंतरिक्ष यात्री 'व्योममित्र' की तैनाती भी होगी। जबकि मानवयुक्त मिशन गगनयान अगले वर्ष यानी 2025 में लांच किया जाएगा। यह रोबोट अंतरिक्ष यात्री मॉड्यूल मापदंडों की निगरानी, अलर्ट जारी करने और जीवन समर्थन कार्यों को निश्पादित करने की क्षमता से लैस है। यह प्रश्नों का उत्तर देने जैसे कार्य भी कर सकता है।

गगनयान के पीछे की बड़ी आकांक्षा अंतरिक्ष में मानव को प्रक्षेपित करने में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जो अंततः हमें भविष्य में नियोजित भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और चंद्रमा पर मानव अभियानों की बड़ी योजनाओं के लिए तैयार करेगा। अंतरिक्ष में इंसान भेजने का मिशन भारत की सुरक्षा जरूरतों से भी जुड़ा है। भारत ने वर्ष 2035 तक अपना खुद का भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने और वर्ष 2040 तक चंद्रमा पर पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री को भेजने की योजना बनाई है। इस तरह के महत्वाकांक्षी मिशन के लिए आने वाले वर्षों में भारत को बड़े पैमाने पर क्षमता निर्माण की आवश्यकता होगी। भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन को लांच करने के लिए भारत को प्रक्षेपण यानों के लिए भारी लिफ्ट क्षमता की आवश्यकता है। मौजूदा यान बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपर्याप्त हैं। इसके लिए इसरो अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यानों पर काम कर रहा है, जो वर्तमान एलवीएम से बहुत अधिक बड़े पैमाने पर होंगे।

कुल मिलाकर गगनयान कार्यक्रम हमें अंतरिक्ष में बड़े लक्ष्यों को हासिल के लिए तैयार करेगा। इसरो इस सपने को साकार करने के लिए कई नवाचारों पर काम कर रहा है और नई क्षमताओं का विकास कर रहा है। यह प्रयास न केवल भारत को वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में आगे बढ़ाएगा, बल्कि देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणा के रूप में भी कार्य करेगा, उनकी जिज्ञासा को जगाएगा, महत्वाकांक्षा को बढ़ाएगा। चंद्रयान–3 की सफलता के बाद गगनयान एक महत्वपूर्ण कदम है, जो भारत को एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित करने का काम करेगा। भारत ने समझदारी यह दिखाई कि अमेरिका, रूस, जापान और यूरोप के साथ अंतरिक्ष साझेदारी तो स्थापित की लेकिन इस दौरान किसी भी अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा से बचा रहा। यही कारण है कि आज भारत द्वारा अंतरिक्ष की खोज में नित नए प्रतिमान स्थापित किए जा रहे हैं।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

बहती जाती हूँ मैं अविरام

e t fl g*

बहती जाती हूँ मैं अविराम
हर मौसम में बहती जाती, कभी न लेती मैं विराम।

हिमालय की गोद से निकली, जाने कितने आकार लिए।
गंगा, जमुना, सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, जाने कितने नाम दिए।
जहाँ ऋषि–मुनियों ने तप हैं किए, मुझे देवी के रूप दिए।
सरल भाव से बहती, कल–कल नाद और सुर–ताल लिए।
हिमखडों को पिघलाकर, चट्टानों से टकराकर आगे बढ़ी।
बहती, आगे बढ़ती जाती, साहस से तोड़ पहाड़ों को।
सब कुछ सहती जाती, चाहे आँधी हो या तूफ़ान।
हर मौसम में बहती जाती, कभी न लेती मैं विराम।

सदियों से मैं बनी साक्षी, कितने युद्धों के इतिहास लिए।
सीमाओं में बाँध, बाँट मुझे, ना जाने मेरे कितने खण्ड किए।
सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य बढ़ाती, जिस राह निकलती जाती मैं।
हर कर सबके कष्टों को, प्रकृति को फल–फूल और बाग दिए।
युगों–युगों तक तट पर मेरे, जाने कितने लोग यहाँ बसे।
शहरों–गाँवों से बहती, सींच खेत–खलिहान हरे–भरे किए।
बंज़र को भी उपजाऊ बना दूँ, विकसित करती देश महान।
हर मौसम में बहती जाती, कभी न लेती मैं विराम।

आज समय बदल रहा, मेरे अस्तित्वों पर भी ग्रहण लगे।
बढ़ती संसार की इस आबादी में, देखो कितने भार बढ़े।
विकास चाह रखी थी मैंने, लेकिन फैल रहा है घोर विनाश।
सूख रहे पेड़–पौधे और वन–उपवन, गुम हुई पंछी की आवाज़।
विलुप्त हो रहीं प्रज़ातियाँ, ख़त्म होते धरती पर संसाधन।
संभल जाओ, वक्त है कम, बचा लो अपना अमूल्य जीवन।
आज भी अपनी हद में हूँ, पर तूने तोड़े सारे बंधन।
हर मौसम में बहती जाती, कभी न लेती मैं विराम।

मुझे रखोगे साफ–स्वच्छ, आज करो सब ये दृढ़ संकल्प।
किया किसी ने मुझे दूषित, तो करूंगी कठोरता से दंडित।
बनो सभ्य, करो सिद्ध प्रण, जिससे सँवरे सबका जीवन।
जितना अस्वच्छ किया है अबतक, अब रखोगे उतना पावन।
मैं स्वच्छ और जीवित रहूँगी, तो ही रहेगी सृष्टि जीवित।
सबको देती जीवन दान, मुझ में बसी शक्ति ऐसी अद्भुत।
भावी पीढ़ी भी सुख पाये, करो ऐसे अब कर्म महान।
हर मौसम में चलती जाती, कभी न लेती हूँ मैं विराम।

* कंप्यूटर ऑपरेटर, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा द्वारा कार्यशाला का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नौएडा के तत्वावधान में वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा ने गुरुवार, 21 दिसम्बर 2023 को नराकास (कार्यालय), नौएडा के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों/ हिन्दी विभाग अथवा अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों के लिए अनुवाद सहायक टूल 'कंठस्थ' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के महानिदेशक डॉ. अरविंद ने किया।

अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा – 'प्रौद्योगिकी के आज के युग में हमें समय के साथ चलते हुए राजभाषा के प्रचार–प्रसार में तकनीक का उपयोग/प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए।' उन्होंने मंचासीन अतिथियों श्री ललित भूषण, सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम), गाजियाबाद एवं कार्यशाला के मुख्य वक्ता और श्रीमती प्रज्ञा कांडपाल, सदस्य सचिव, नराकास (कार्यालय), नौएडा तथा सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। तत्पश्चात श्रीमती प्रज्ञा कांडपाल ने नराकास (कार्यालय), नौएडा की विभिन्न गतिविधियों के साथ–साथ इसकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए विगत कुछ वर्षों के दौरान नराकास (कार्यालय), नौएडा के तत्वावधान में वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री बीरेन्द्र सिंह रावत ने अतिथि वक्ता श्री ललित भूषण से आगे की कार्यवाही शुरु करने का अनुरोध किया। श्री ललित भूषण ने इस कार्यशाला को सहभागी बनाते हुए अनुवाद सहायक टूल 'कंठस्थ' की बारीकियों को बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया। इस कार्यशाला में नराकास (कार्यालय), नौएडा के 17 सदस्य कार्यालयों के 28 राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

MAKE IN INDIA

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान श्रम एवं इससे संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, शिक्षा, प्रकाशन और परामर्श का अग्रणी संस्थान है। इस संस्थान की स्थापना 1974 में की गई थी और यह श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान विकास की कार्यसूची में श्रम और श्रम संबंधों को निम्नलिखित के द्वारा मुख्य स्थान देने के लिए समर्पित है:

- वैश्विक स्तर के अनुसंधानिक अध्ययनों और प्रशिक्षण हस्तक्षेपों को हाथ में लेना;
- कार्य की दुनिया में रूपांतरण के मुद्दे पर कार्रवाई करना;
- श्रम तथा रोजगार से संबंधित मुख्य सामाजिक भागीदारों तथा हितधारकों के बीच कौशल तथा अभिवृत्ति और ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना;
- विश्व प्रसिद्ध संस्थानों के साथ समझ निर्माण तथा सहभागिता विकसित करना।

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत निकाय)

सैक्टर 24, नौएडा–201 301

उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाइट: www.vvgnli.gov.in